मोपासाँ की श्रेष्ठ कहानियाँ

लेखक :

डी० मोपासाँ

प्रभात प्रकाशन

प्रकाशक :

प्रभात प्रकाशन,

मथुरा.

अनुवादक :

सूरजनारायण अग्रवाल

प्रथम संस्करण

नवम्बर '५५ ई०

मूल्य :

तीन रुपया

मुद्रक :

साधन प्रेस, मथुरा.

मोपासाँ की श्रेष्ठ कहानियाँ

मोपासाँ की कहानियाँ

१. प्रेम

एक शिकारी की डायरी के तीन पृष्ठ।

मै अभी २ एक समाचार पत्र की सामान्य विषयक टिप्पणियों में वासना का एक नाटक पढ़ कर चुका हूँ। उसको मार कर वह स्वयं भी मर गया, इसका अर्थ है कि वह उससे प्रेम भी करता रहा होगा। मेरे लिए प्रेमी अथवा प्रेमिका का महत्व नहीं—महत्व है तो प्रेम का, और यह रुचिप्रद इस लिये नहीं कि यह मुझे द्रवीभूत अथवा आश्चर्यचकित करता है, या मुझे सहानुभूति अथवा विचार करने को वाध्य करता है वरन् इसलिये है कि यह मेरे अतीत यौवन का चित्र मस्तिष्क में चित्रित कर देता है जब कि ईसाइयों की भाँति जिन्हे आरम्भ में स्वर्ग के अन्दर क्रास के दर्शन हुए, मुझे भी एक दिन शिकार खेलते २ प्रेम के दर्शन हुए।

मेरे अन्दर जन्म से ही रूढ़िवादी व्यक्तियो की प्रवृत्तियाँ तथा धारणायें हैं और मै एक सभ्य मनुष्य की विचारधारा तथा तर्कों का भी हामी हूँ। शिकार का तो मुझे शौक है किन्तु घायल पशु पर दृष्टि पड़ते ही या अपने हाथ या किसी पक्षी के पंखो पर खून के धब्बों को देखते ही मेरे हृदय में हलचल सी मच उठती है जिसके कारण मैं कभी २ तो शिकार खेलना लगभग बन्द सा भी कर देता हूँ।

उस वर्ष शरद् ऋतु के समाप्त होते समय जाडा एकाएक बडी जोर से पड़ने लग गया था और मेरे पास मेरे चचाजात भाई, कार्ल डी० रोविले ने भोर होते ही उसके साथ दलदलो मे जाकर बतखो का शिकार खेलने का निमन्त्रण भेजा।

मेरे चचाजात भाई साहब चालीस वर्ष के हँसमुख नौजवान थे। उनके बाल लाल, दाढ़ी बढ़ी हुई, स्वभाव हैवानो का सा होता हुआ भी सर्वप्रिय था। उनके मुख पर प्रसन्नता की लहर हर समय व्याप्त रहती और भगवान् ने उन्हे गैलिको की सी बुद्धि भी प्रदान की थी, जिससे वह हर व्यक्ति को अपने विचारो से सहमत कर लेते। वह गाँव में रहा करते थे। उनका मकान जिसमें वह रहते थे, आधा किला था और आधा खेतिहर मकान। जिस घाटी में वह मकान था उस घाटी में एक नदी बहती थी। घाटी की दोनों ओर की पहाड़ियाँ घने जङ्गलो से आच्छादित थीं। पुराने शाही ढङ्ग के वृक्ष अभी तक वहाँ पाये जाते और वह स्थान परदार पक्षियों के शिकार खेलने के लिए फ्रास के सर्वाधिक प्रसिद्ध स्थानो मे से था। उकावो का शिकार तो कभी २ होता, और भिन्न २ पक्षियों के झुण्ड जो कि घनी बस्तियों में बहुत कम दिखलाई देते है, अपने भिन्न २ रङ्गों से शाह-बलूत के पेडों की शोभा बढ़ाते थे। मानो उस असली जङ्गल के किसी छोटे से कोने को जानते या पहिचानते थे कि वहाँ उनको रात बसेरा मिल जाता था।

उस घाटी में कितने ही दलदल थे जो कि नालियो द्वारा सींचे जाते तथा जिनकी सीमायें कंटीली झाड़ियों ने निर्धारित कर रखी थीं। वह नदी जो वहाँ तक तो अपने किनारो से परिबाधित चलती चली जाती, आगे जाकर एक पूरे चौडे दलदल में फैल जाती थी। मैंने शिकार खेलने योग्य उस दल-दल से अच्छा स्थान अब तक कहीं नहीं देखा। वह मेरे भाई साहब की खास जगह थी और उन्होंने अपने लिये सुरक्षित कर रखा था। सिवार चारों तरफ उगी हुई थी फिर भी उसको काट २ कर भद्दे और पतले रास्ते बना लिये गये थे और उन रास्तों में से नाव को डाड़ों से खेकर ले जाया

जाता था। उस शान्त एव निश्चल जल पर जब डाड़े का प्रहार होता तब बडी २ मछलियाँ चौंक कर घास फूस में नीचे छिप जातीं और काले, नुकीले सिर वाली चिडियाँ झट से गोता लगा जातीं।

समुद्र बहुत चौड़ा तथा बहुत कर्मशील होता है, उस पर मेरा किसी भी भाँति बस नही चल सकता, नदियाँ बहुत सुन्दर होती हैं और सदा अबाध गति मे चलती चली जाती है और दल-दल जहाँ समस्त जलचरों की उपस्थिति का भय बना ही रहता है, किन्तु यह सब होते हुए भी मैं समुद्र और जल का बेहद शौकीन हूं।

ससार की सृष्टि में दल-दल की अपनी अलग सृष्टि होती है। यह सृष्टि बिल्कुल भिन्न होती है—इसमें अपनी ही सानी का जीवन, अलग ही प्रकार के निवासी, यात्री, आवाजें, शोर और इन सबसे ऊपर अलग ही रहस्य होता है। दलदल से अधिक प्रभाव, हलचल और समय-समय पर भय उत्पन्न कर देने वाला और कुछ भी नहीं होता—जल से आविष्ट इन निचले मैदानों मे भय क्यों बना रहता है? क्या घासों से टकरा कर जो आवाज उत्पन्न होती है, उसके कारण? बेतों के आपस मे टकराने से विचित्र सी चमक उत्पन्न होने के कारण? रात्रि की निस्तब्ध नीरवता के कारण? शान्त कोहरा जो उसकी सतह पर कफ़न की तरह पडा रहता है,उसके कारण? या बड़ी कठिनाई से सुनाई दे सकने वाले छपाके का स्वर जो कि बहुत ही कम और बहुत ही धीमा होते हुए भी—कभी २ बिजली की कडकों या तोपो की गडगड़ाहटों से भी भयानक होता है, उसके कारण? इनमे से कौन सी ऐसी बातें हैं जो कि इन दलदलों को उन भयानक कल्पित देशों की तुलना में ला पटकती हैं,जिनमे एक अज्ञेय एव भयानक रहस्य होता है?

नहीं, इसमें कोई अन्य ही बात है—कोई दूसरा ही रहस्य है, शायद वह सृष्टि का ही अपना रहस्य है! क्यो, क्या यह बात नहीं कि निश्चित एव गन्दे जल में, इस गीली भूमि की बेहद सील में, सूर्य की आतप के नीचे सबसे पहिले जीवों में प्राण का संचार हुआ और उसी के कारण आज यह रूप दिखलाई देता है?

मैं अपने चचाजात भाई के यहाँ शाम को पहुँचा। उस समय वर्फ इतनी अधिक कड़ी जम रही थी कि वह पत्थरों के भी टुकड़े कर सकती थी।

उस विशाल कमरे में जहाँ दीवालो, चौखटों, छत्तों सब ही पर मसालों से भरे हुए पक्षियों को, जिनके पंख फैलाये हुए थे अथवा जिन्हे डालों पर बैठा रखा था कीलों से ठोंक २ कर सजा रखा था। उन मृत पक्षियों मे बाज, बगुला, उल्लू, नाइटजार, बजर्ड इत्यादिक थे। मेरे भाई साहब ने, जो कि सीलाकिन की जाकेट पहिनने के कारण स्वय ही किसी ठण्डे प्रदेश के विचित्र से जानवर की भाँति लग रहे थे, मुझे उसी कमरे मे भोजन करते समय बतलाया कि उन्होने उसी रात्रि के लिये क्या-क्या तैयारियाँ कर रखी थी।

हम लोगों को सुबह ३½ बजे चलना था जिससे कि हम मचान तक साढ़े चार बजे तक पहुँच जाँय। वहाँ बर्फ के ढेरों से एक झोपड़ी बनवाई गई थी ताकि सुबह होने से पहिले चलने वाली ठण्डी हवा से बचाव हो सके। हवा इतनी ठण्डी होती है कि हमें लगता है कि मानों वह हमारे गोस्त को आरे की तरह चीरे दे रही है, चाकू के फने की तरह काटे दे रही है, जहरीले डङ्क की तरह शरीर मे चुभो चली जा रही है और चीमटे की तरह गोस्त को उमेंठे दे रही है और आग की तरह हमे जलाये दे रही है।

मेरे भाई साहब ने अपने हाथ मलते हुए कहा—"मैने ऐसा कोहरा कभी नहीं देखा, शाम के ६ बजे से ही शून्य से भी बारह डिग्री नीचा है।"

भोजन करने के तुरन्त पश्चात् ही मैं बिस्तर पर जाकर पड गया और अंगीठी मे जलती हुई तेज आग की रोशनी के पास जाकर सो गया।

उन्होंने तीन बजे मुझे जगा दिया। अपनी पारी पर मैने भेड की खाल पहिन ली और मैने देखा कि मेरे भाई एक भालू (रीछ) की खाल ओढ़े हुए थे। दो-दो कप खौलती हुई काफी पीने के बाद हमने ब्राडी के गिलास के गिलास चढाये और एक गेमकीपर तथा अपने कुत्ते प्लोन्जून और पीरट को लेकर हम लोग रवाना हो दिये।

बाहर निकलते ही मुझे लगा कि ठण्ड मेरी हड्डियों मे घुसती चली जा रही है। यह रात्रि उन रात्रियों में [से एक थी जिस रात्रि को लगता है कि पृथ्वी ठण्ड के कारण मृत पडी है। निश्चल वायु अड जाती है और जिसका स्पर्श होते ही उसका अनुभव होने लगता है, इसके कारण इतना कष्ट होता है, कोई हवा का झोका उसे नही हिला सकता, वह स्थिर और निश्चल होती है, यह आपको काटने को दौडती है, आपके शरीर मे अन्दर घुस जाती है, आपको सुखा देती है और पेडो, पौधो, कीड़ो को नष्ट कर देती है। छोटी २ चिडियाँ स्वयं वृक्षो की शाखाओं से नीचे कडी भूमि पर गिर पडती है और ठण्ड से सिकुड२ कर मर जाती है।

चन्द्र जो अपनी यात्रा को समाप्त करने वाला था और एक ओर झुका पड रहा था।, मार्ग में ही फीका पड गया, वह इतना दुर्बल लग रहा था कि वह ढल ही नहीं पा रहा था और मौसम की गम्भीरता से स्तब्ध हो सामने डटे रहने को बाध्य हो गया था। वह अपने अन्तिम समय मे संसार को ठण्डा एवं •दुख भरा प्रकाश दे रहा था। वह प्रकाश वैसा ही था जैसा क्षीण एवं मन्दा प्रकाश वह हर माह दिया करता है।

अपनी बन्दूकों को अपनी बाहों मे दबाये, जेबो मे हाथ डाले, पीठ झुकाये मैं और कार्ल दोनो ही साथ-साथ चल दिये। हमारे जूते जिन पर इसलिए ऊन लिपेटा हुआ था कि कहीं जमी हुई नदी पर हम लोग फिसल न पडे कोई आवाज नही कर रहे थे और मैने अपने कुत्तो को देखा उसके सास लेने के कारण उनकी नाकों से सफेद भाप निकल रही थी।

शीघ्र ही हम लोग दल-दल के एक सिरे पर पहुँचे, और सूखी घास में एक पतली सी पगडण्डी पर जो कि जङ्गल के निचले भाग को जाती थी, चल दिये।

लम्बी-लम्बी घास की पत्तियों से हमारी कोहनियाँ स्पर्श होते ही एक विचित्र सा स्वर होता उस स्वर को सुन कर मैं भयभीत हो गया। मैं ऐसी भावनाओ से जो कि दलदल में मुझे स्वाभाविक ही होता है, पहिले कभी इतना भयभीत नहीं हुआ। यह दलदल मृतक पडा था– ठण्ड से

मृतप्राय था—हम लोग उन सूखी घास पत्तियो की उस आबादी के बीच मे से जा रहे थे।

एक पगडण्डी के मोड पर से अचानक मुझे बर्फ की बनी हुई झोपड़ी जो हम लोगों के आश्रम के लिये बनाई गई थी, दिखलाई दी। मैं अन्दर चला गया, क्योंकि उन पक्षियो के जागने में अभी एक घण्टे की देर थी, और जाकर अपने शरीर को गर्मी पहुँचाने के लिये कम्बल में छिप गया। फिर, पीठ के बल लेट कर मैं उस बिगडी हुई आकृति वाले चन्द्र की ओर देखने लगा। किन्तु उस जमे हुए दलदल के कुहरे, इन दीवालों की शीत, और आसमान की ठड ने मुझे इतनी बुरी तरह जकड लिया था कि मुझे जुखाम हो गया। मेरे चचाजात भाई साहब अस्थिर हो उठे।

"खैर, यदि हम आज अधिक शिकार नहीं खेल न पावें तो कोई बात नहीं, किन्तु मैं यह नहीं चाहता कि तुम्हे ठण्ड लग जाय, हम लोग अभी आग जलाये लेते हैं।" वह बोले और उन्होने गेमकीपर से घास-फूक काट कर लाने को कहा।

हम लोगों ने अपनी झोपडी के बीच मे ढेर कर लिया। उस झोपड़ी की छत के बीच में धुआँ निकलने के लिये एक सूराख था। और जब लाल २ लपटें उन बर्फ के टुकड़ो से टकराने लगीं तब वे टुकडे धीरे-धीरे नामालूम ढङ्ग से गलने लगे—उन्हे देख ऐसा लगता था मानो कि वे पसीने से तर हो गये हो। कार्ल बाहर ही खडा था उसने मुझे बुलाया। "यहाँ आओ—यह देखो।" मै झोपडी से बाहर निकला और आश्चर्य चकित हो गया। हमारी झोपडी के बीच मे आग जलने के कारण वे एक बहुत वृहद् शुण्डाकार हीरे की भाँति लग रही थी। मालूम पडता था कि उस जमे हुए दलदल में वह हीरा एकाएक लाकर रख दिया गया हो। उस झोपडी मे हमे दो सनकी जीव दिखलाई दिये। ये हमारे दोनों कुत्ते थे जो कि आग के पास ताप रहे थे।

हमारे सिरों के ऊपर एक अद्भुत सा शोर जो आगे निकल गया था

और उड़ते हुए पक्षियों का सा लगता था सुनाई दिया और हमारी झोपड़ी से निकलने वाले प्रकाश मे वे जंगली पक्षी दिखलाई दिये।

जीवन के प्रथम कोलाहल, जिसे कि कोई देख नहीं पाता है जो कि निश्चल वायु में जाड़े में दिन के आकाश मे पहिली रेखा उदय होने से पूर्व ही बहुत ही जल्दी बहुत दूर निकल जाता है, से अधिक और कोई वस्तु किसी को अनस्थिर नहीं कर सकती। मुझे लगता है कि प्रभात के इस क्षण में उन पक्षियो के उड़ते समय पङ्खों से निकलने वाली ध्वनि आत्मा की संसार से निकलने वाली आह होती है!

"आग बुझा दो, दिन निकलने लगा है।" कार्ल ने कहा।

वास्तव में आकाश पीला पड़ने लगा था और बतखों के झुण्डों ने लम्बी २ पंक्तियाँ बनाईं तेजी से उड़े और आकाश मे विलीन होने लगे। रात्रि मे एक प्रकाश की धारा सी प्रवाहित हो उठी, कार्ल ने बन्दूक छोड़ दी थी, और दोनों कुत्ते आगे दौड़े। और तब, लगभग प्रत्येक मिनट पर, कभी वह कभी मैं घासों पर उन झुण्डो की छाया पड़ते ही बन्दूकें चलाते रहे। पीरट और प्लोअ न की सासो की धौकनी चल निकली थी किन्तु वे प्रसन्न दिखलाई दे रहे थे और रक्त से लथपथ हमारे छर्रों से आहत चिड़ियो को, जिनके नेत्र अभी तक कभी २ हम लोगों की ओर हो जाते, ला ला कर इकट्ठा कर रहे थे।

सूर्य निकल आया। वह दिन प्रकाशमय था, आकाश नीला था और हम लोग चलने का विचार कर रहे थे कि दो पक्षी अपनी लम्बी गर्दन तथा पङ्खो को फैलाए हुए हमारे ऊपर से शीघ्र ही निकल गए। मैने बन्दूक चलाई और उनमे से एक मेरे पैरो के पास आकर गिर पड़ा। यह कलहसिनी थी उसकी छाती रुपहली थी और तब मुझे नीलाकाश मे अपने ऊपर ही एक आवाज पक्षी की चिचियाहट-सुनाई दी। यह छोटा किन्तु बार २ दोहराया गया चीत्कार हृदय विदारक था, और पक्षी जो बच गया था नीलाकाश में, हमारे सिर पर, अपने मृत साथी की ओर देख २ कर, जिसको मैंने अपने हाथ में ले रखा था, चक्कर काटने लगा।

कार्ल अपने घुटनो के बल बैठा हुआ, अपने कधे पर अपनी बन्दूक रखे हए उत्सुकता से यह देख रहा था कि वह पत्ती उसके निशाने का शिकार बने। वह बोला "हंसिनी को तुमने मार डाला और हंस उडकर जायगा नहीं।

वास्तव मे वह उडकर गया भी नहीं, वह हमारे सिरों के ऊपर ही चक्कर काटता और चीत्कार करता रहा। मुझे इस अकेली निराश विनय से जो कि उस मृत पत्ती के लिये की गई थी अधिक कभी किसी कराहट से ऐसी व्यथा नहीं हई।

कभी २ वह बन्दूक से जो उसकी गतिविधियों पर नियन्त्रण रख रही थी, भयभीत हो उड भी जाता और ऐसा लगता कि मानो वह अकेला ही उड़ता भी रहेगा किन्तु उसने ऐसा करने का विचार त्याग दिया और वह अपने साथी के लेने के लिये लौट आया।

"उसे धरती पर रख दो और वह धीरे २ मेरे निशाने के अन्दर आ जायेगा।" कार्ल ने मुझसे कहा। और सचमुच वह अपने साथी, जिसे मैंने मार डाला था, के प्रति आर्कषण, अपने पशुवत प्रेम, और भय से निरापद हो वहाँ हमारे पास आ गया।

कार्ल ने गोली छोड दी, और मानो कि किसी ने उसकी सशयरूपी डोरी को जिसके कारण वह अभी तक भ्रम मे पडा हुआ था, काट दिया हो। मैंने देखा कि कोई काली २ वस्तु नीचे उतरने लगी और मैंने घासों मे किसी चीज के गिरने की ध्वनि सुनी और पीरट उसे मेरे पास ले आया।

वे दोनो ही मर चुके थे, मैने उन्हे उसी थैले मे रख दिया और उसी सायंकाल मैं पैरिस लौट आया।

साइमन का पिता

अभी दोपहर हुई थी। स्कूल का द्वार खुला और जल्दी से बाहर निकलने के लिये हल्ला मचाते हुए एक दूसरे पर गिरते पडते बच्चे बाहर निकल पडे। किन्तु नित्यप्रति की भाँति अलग २ घर जाकर भोजन करने की बजाय वे कुछ कदम आगे जाकर रुके और छोटी २ टुकड़ियो में बँट कर आपस मे कुछ सलाह करने लगे।

बात यह थी कि उस दिन सुबह ला ब्लाचोटे का लडका साइमन पहिली बार स्कूल आया था।

उन सब बच्चों ने अपने २ घरो में ला ब्लाचोटे के विषय में सुन रखा था, और यद्यपि पुरुषों मे उसका आदर बहुत था, किन्तु माताएँ उसके साथ कुछ घृणास्पद-सा व्यवहार करती थी जिसके कारण को बिना समझे ही बच्चों के ऊपर भी व्यवहार की छाप पड चुकी थी।

जहाँ तक साइमन से सम्बन्ध था वे लोग उसे नही जानते थे क्योकि वह कभी बाहर नही गया था और न उन लोगों के साथ कभी गाँव की सडकों अथवा नदी के तटो पर ही खेला था। इसलिये वे उसे थोड़ा-सा प्यार भी करते थे, और आज सुबह वो किसी आश्चर्य मिश्रित आनन्द से वे लोग छोटी २ टुकडियों मे बँट कर एक चौदह या पन्द्रह वर्ष के लड़के द्वारा कहे गये वाक्य को दुहरा रहे थे। प्रतीत होता था कि वह लड़का उसकी सब बातों को भली भाँति जानता था। कैसी चतुराई से आँख मारकर उसने कहा था "तुम साइमन को जानते हो—उसका कोई पिता नहीं है।

ला ब्लाचोटे का लडका भी अपनी पारी पर स्कूल के द्वार से निकलता हुआ दिखलाई दिया।

वह सात या आठ वर्ष का साफ सुथरा, कुछ पीला सा, हीन एवं कायर स्वभाव का लड़का था।

वह अपनी माँ के पास घर की ओर जा रहा था कि उसे उसके स्कूल के साथियों की अनेको टुकडियों ने कुछ फुसफुसाते और उसको शरारत-भरी हृदय-हीन बच्चों की सी दृष्टि से देखते हुए, जिनमें कि कोई गन्दी योजना चमक रही थी चारों ओर से घेर लिया और यहाँ तक कि वे उसके बिल्कुल समीप आ गये।

वहाँ उनके बीच वह आश्चर्यचकित और परेशान सा हो खडा हो गया, उसकी समझ में ही नहीं आया कि वे उसका क्या करना चाहते थे। किन्तु जो लड़का यह खबर निकाल कर लाया था अपनी सफलता पर फूला न समाता हुआ बोला—"तुम्हारा क्या नाम है, जी?"

"साइमन।" उसने उत्तर दिया।

"साइमन क्या?" दूसरे ने उसे छेडा।

बच्चे ने घबडाकर दुहराया "साइमन।"

लडका उस पर चिल्ला पड़ा "तुम्हारा नाम साइमन के बाद भी कुछ होना चाहिये था। सच मे तो साइमन कोई नाम ही नही है।"

और उसने अपने आँसू रोकते हुए तीसरी बार फिर कहा—"मेरा नाम साइमन है।"

बच्चे उस पर हँसने लगे। लड़के ने विजयोन्माद से अपना स्वर ऊँचा किया "तुम लोगों को अब तो मालुम हो गया होगा कि इसका कोई पिता नहीं है।"

एक गहरी निस्तब्धता छा गई। बच्चे इस असाधारण, असम्भव विकराल वस्तु से, एक बिना पिता का पुत्र—अवाक् रह गये; उन्होने उसकी ओर एक अस्वाभाविक, अप्राकृतिक जीव की तरह देखा, और साथ ही साथ उनमें भी अपनी माताओं की भाँति ला ब्लाचोटे के लिये अनिवर्णनीय दया उठने लगी। और साइमन—वह गिरने से बचने के लिये एक पेड का सहारा लेकर खड़ा हो गया। वह इस भाँति खडा था मानो वह क्रोध पर संयम न कर पा रहा हो और उस क्रोध के कारण उसकी अवस्था लकवा मारे व्यक्ति की सी हो गई। वह अपनी सफ़ाई देना चाहता था किन्तु उसके मस्तिष्क में कोई उत्तर ही नही आया—वह इस भीषण अभियोग को, कि

उसका पिता नहीं था, अस्वीकार करने में असमर्थ था। अन्त मे बेचैन हो वह चिल्ला कर बोला—"हाँ, मेरे एक है।"

'कहाँ है ?" लड़के ने पूछा।

साइमन चुप हो गया, उसे मालुम नहीं था। बच्चे एकदम उत्तेजित हो चिल्लाने लगे। इन देहाती बच्चों को, जो कि जानवरों की सी प्रवृत्ति के थे, खेतो मे रहने वाली चिड़ियों की सी उत्कण्ठा अनुभव हुई। वे चिड़ियाँ (Fowl) अपनी ही जात की चिड़ियों को उनके घायल हो जाने पर मार डालने को उतारू हो जाती है। एकाएक साइमन की दृष्टि अपने पड़ोस मे रहने वाली विधवा के पुत्र के ऊपर पड़ी जिसे उसने हमेशा अपनी ही भाँति उसकी माँ के साथ अकेला देखा था।

'और तुम्हारे भी नहीं है, तुम्हारे भी पिता नहीं है।" वह बोला।

"हाँ, मेरे पिता हैं।" उस दूसरे ने कहा।

"कहाँ हैं ?" साइमन ने फिर से कहा।

"उनकी मृत्यु हो गई—अब वह कब्र मे हैं।" विधवा के लड़के ने अभिमान से कहा।

तभी उन बच्चों में अनुमोदन की फुसफुस हुई—मानो उनके साथी के मृत पिता की बात जो अब कब्र में था, दूसरे साथी को जिसका कि कोई पिता था ही नहीं, ठेस पहुंचने के लिये पर्य्याप्त थी। और वे सब बदमाश, जिनके पिता अधिकतर दूषित कार्यों में व्यस्त रहते, शराबी थे, चोर थे, और अपनी पत्नियों के साथ दुर्व्यवहार करते थे एक दूसरे को धक्का दे देकर साइमन के और भी पास आये मानो वे सब अधिकृत (जायज) पुत्र अपने दबाव से उसे जो कानून से परे था, पीस ही डालेंगे।

साइमन के पास ही खड़े लड़के ने उसे जीभ बिराई और उससे चिल्लाकर बोला "कोई पिता नहीं ! कोई पिता नहीं !"

साइमन ने अपने दोनों हाथों से बाल पकड़ कर उसे झकझोर डाला और अपनी लातों की मार से उसकी टाँगों को तोड़ने लगा, उस लड़के ने उसी बीच बड़ी जोर से साइमन का गाल काट खाया। उन दोनों के बीच घमासान युद्ध आरम्भ हो गया। साइमन पिटा, उसकी कमीज फट गई, और उन छोटे

आवारे हसते हुए बदमाशो के बीच मे वह जमीन पर गिर पडा। गिरते ही वह उठा और अपनी छोटी कमीज को जो धूल धूसरित हो गई थी अपने हाथों से झाड़ने लगा कि किसी ने उससे चिल्लाकर कहा "जाओ, अपने पिता से कह देना।"

तब उसे हृदय मे बडी निराशा हुई। वे उससे अधिक सामर्थ्यशाली थे, उन्होने उसे पीटा था और उसके पास उन्हे उत्तर मे कहने को कुछ था नही क्योकि वह जानता था कि उसका कोई पिता नहीं था। गर्व के कारण वह अपने अश्रुओं से जो उसके कण्ठ को अवरुद्ध किये हुए थे, कुछ क्षण तक संघर्ष करता रहा। उसकी सास तेज हो गई--सिसकियाँ आने लगीं, फिर बडे वेग से वह निशब्द रोने लगा--सिसकियो के कारण उसका सारा शरीर हिलने लगा। तब उसके शत्रुओं मे, जगली मनुष्यो के उत्सव की भाति, आनन्द का सागर उमड पडा और हाथ मे हाथ डालकर उसके पास ही वृत्त बनाकर नाचने लगे। नाचते २ वे गाते जाते थे "कोई पिता नहीं! कोई पिता नहीं!"

किन्तु एकाएक साइमन की हिलकियाँ बन्द हो गई। क्रोध से वह अभिभूत हो गया। उसके पावों के पास ही नीचे पत्थर के टुकडे पडे हुए थे, वह उन्हें उठा २ कर अपनी पूरी शक्ति से अपने सताने वालो के ऊपर फेंकने लगा। दो तीन के चोटें आईं और वह चिल्लाते हुए भाग खडे हुए। वह उस समय इतना भयानक लग रहा था कि अन्य बालक उससे भयभीत हो गए। एक क्रोध से उभरे हुए व्यक्ति की उपस्थिति मे एक भीड की भाँति वे कायर वहाँ से भाग खडे हुए। अकेले रहने पर बिना पिता का वह छोटा सा जीव खेतो की ओर भाग दिया, क्योकि उसे कुछ स्मरण हो आया जिसने उसकी आत्मा में एक महान निश्चय संचरित कर दिया। उसने नदी मे डूब मरने का निश्चय कर लिया।

वास्तव मे, उसे स्मरण हुआ कि एक बेचारा गरीब, जो रुपये न होने के कारण अपनी जीविका निर्वाह के लिये भीख मागता था नदी मे डूब मरा था। लोगो ने उसे जब पानी के बाहर निकाला तब साइमन भी वहीं था; और उस व्यक्ति पर जो बहुत ही दुःखी और भद्दी की शकल का लग रहा था, उसके पीले गालो, उसकी लम्बी दाढ़ी, और उसकी शान्तिपूर्ण खुली

आँखों पर दृष्टि पड़ते ही साइमन को बहुत दुःख हुआ। पास खड़े हुए लोगों ने कहा —

'यह तो मर गया।"

फिर कोई दूसरा बोला "अब यह बहुत प्रसन्न है।"

जैसे उस बेचारे के पास धन नहीं था वैसे ही साइमन के पिता नहीं था और उसने भी डूब मरने की बात सोच ली।

सरिता के किनारे पहुँचकर वह उसका प्रवाह देखने लगा। कुछ मछलियाँ उस स्वच्छ धारा मे ऊपर दिखलाई दे रही थीं, कभी २ वे उछाल लगातीं और सतह पर दिखलाई देने वाली मक्खियो को पकड़ लेतीं। मछलियों का यह खाना उसे बहुत पसन्द आया, उन्हे देखते रहने के कारण उसने रोना बन्द कर दिया। किन्तु बीच २ में आंधी के प्रचण्ड वेगों की भाति जो पेड़ों को उखाड़े डालते हैं फिर शान्त हो जाते है उसके हृदय मे बड़ी चुभन लेकर यह विचार उठ आता

"मेरे पिता नहीं हैं इसलिये में डूब मरूँगा।"

उस दिन ठण्ड कम थी, मौसम सुहावना था। सुखद सूर्य किरणों ने घास को तप्त कर दिया था, जल दर्पण की भाति चमक रहा था, औ साइमन ने थोड़े से समय रोने से पहिले उत्पन्न होने वाली प्रसन्नता का अनुभव किया। दोपहर की धूप मे वहीं घास पर सो जाने की उसकी इच्छा भी हुई।

उसके पैरों के पास नीचे एक छोटा हरा मेंढक उछला। उसने उसे पकड़ना चाहा। वह बच निकला। उसने उसका पीछा किया और वह तीन बार अपने प्रयत्नों में विफल रहा। अन्त मे उसने उसकी पिछली टागें पकड़ ही ली और उसके छूटकर भाग निकलने के प्रयत्नों को देखकर वह हँसने लगा। वह मेंढक अपनी दोनों टागो पर सिमटा और फिर एकाएक बड़े तेज झटके से उन्हे दो डन्डों की तरह सीधी कर दिया।

उसकी आंखें अपने सुनहले गोले में घूर २ कर देख रही थीं, और अपने सामने वाले धड़ को वह हाथों की तरह प्रयोग कर बार २ पटक रहा था। उसे देखकर उसे एक लकड़ी के खिलौने का, जो कील से ठुका रहता

है और उसमे बधा हुआ एक छोटा सा सिपाही उसी की भाति कभी नीचे कभी ऊपर आता जाता है, स्मरण हो आया। तब उसे अपने घर और अपनी मा का विचार आया और वह दुखी हो फिर रोने लग गया। उसके ओठ कापे और घुटनो के बल बैठकर उसने सोने से पूर्व की जाने वाली प्रार्थनाएं दोहराईं, किन्तु तेज और लम्बी २ हिलकियों के कारण वह इतना तल्लीन हो गया कि उन्हें पूरी नहीं कर सका। वह और कुछ न सोच पाया, उसे अपने आस पास की किसी वस्तु का होश नहीं रहा और बडे जोर से आँसू बहाने लगा।

एकाएक उसके कन्धे पर किसी ने अपना भारी हाथ रखा और मोटी रूखी आवाज से पूछा:—

"मेरे अच्छे मित्र, तुम इतने दुखी क्यों हो रहे हो?"

साइमन न मुडकर देखा। एक लम्बा तगडा, दाढी और घुघराले बाल वाला श्रमिक उसकी ओर सहानभूति पूर्ण नेत्रों से देख रहा था। उसने अश्रुपूर्ण नेत्रों और मधे हुए स्वर से कहा—

"लडकों ने मुझे मारा है क्याकि मेरे, मेरे पिता नहीं है, कोई पिता नहीं है।"

"क्या?" उस व्यक्ति ने हँसते हुए कहा—"अरे पिता तो हर किसी का कोई न कोई होता ही है।"

बच्चे ने दुखी होकर दुख-भरे स्वर में कहा—

"किन्तु मेरे मेरे मेरे पिता कोई नहीं है।"

श्रमिक गम्भीर हो उठा। उसने ला ब्लाचोटे के लडके को पहिचान लिया। यद्यपि वह उसके पडोस मे अभी थोडे ही दिनों से आया था किन्तु फिर भी उसके इतिहास का उसे धूमिल सा ज्ञान था।

'खैर, धीरज रखो मेरे बच्चे, और मेरे साथ अपनी माँ के पास घर चलो। वहाँ तुम्हारे पिता का पता लग जायगा।"

और वे घर चल दिये—बडा छोटे का हाथ पकडे हुए था। वह व्यक्ति प्रसन्न हो मुस्कराया, क्योंकि उसे उस ब्लाचोटे के पास जाने मे जो कि लोगो की दृष्टि मे गाव की लडकियों मे सपसे अधिक सुन्दर थी, कोई

तकलीफ नही महसूस हुई और, शायद अपने अन्तरतम मे उसने सोचा था कि एक लडकी जो एक बार गलती कर चुकी थी फिर दोबारा बडी आसानी से गलती कर सकती थी।

वह एक बहुत स्वच्छ सफेद तथा छोटे मकान के सम्मुख पहुँचे।

"वह रहा।" लडका चिल्लाया। वह बोला "माँ!"

एक स्त्री निकली, श्रमिक के मुख पर से मुस्कान गायब हो गई क्योंकि उसने एकदम अनुभव कर लिया कि अब उस पतली लम्बी पीली लडकी को मूर्ख बनाना असम्भव था, जो कि अपने मकान के द्वार की जिसे कि दूसरा व्यक्ति पहिले ही धोका दे चुका था, उस व्यक्ति के धोके से बचाने और रक्षा करने के लिये अपने द्वार पर खडी थी।

उसने अपनी टोपी हाथ में ली और बोला—

"देखिये श्रीमतीजी, मै आपके बच्चे को वापिस ले आया हूँ। यह नदी किनारे खो गया था।"

किन्तु साइमन अपनी माँ की गर्दन मे बाहे डाल कर फिर से रोने लगा और बोला ·

"नही माँ, मैं डूब मरूँगा—क्योंकि दूसरे लड़को ने मुझे इसलिये... इसलिये मारा था कि मेरे पिता नही है "

उस नवयुवती के गालो पर अतिशय लालिमा दौड़ गई, और व्यथित हो शीघ्रता से उसने अपने बच्चे को छाती से चिपटा लिया। उसके नेत्रो से अश्रुधारा बह निकली। वह व्यक्ति भी बहुत दयार्द्र हुआ वही खडा था। वह नहीं जानता था कि क्या कहकर लौटा जाय। एकाएक साइमन दौड़ कर उसके पास आया और बोला

"क्या तुम मेरे पिता बनोगे?"

एक गम्भीर चुप्पी छा गई। लज्जा से मूक हो ला ब्लाचोटे अपने हाथों को अपने हृदय पर रख कर दीवाल के सहारे झुक गई। बच्चे ने कोई उत्तर न मिलने पर कहा

"यदि तुम्हारी इच्छा नहीं है तो मैं अभी लौट कर चला जाऊँगा और डूब मरूँगा।"

श्रमिक ने बात को दिल्लगी समझ हँस कर कहा :

"क्यों, हाँ, मेरी इच्छा है।"

"तब तुम्हारा क्या नाम है—मुझे अपना नाम बतला दो जिससे कि उनके पूछने पर मैं उनको बतला सकूँ?" बच्चे ने कहा।

"फिलिप!" उस व्यक्ति ने उत्तर दिया।

साइमन उस नाम को भली भाँति अपने मस्तिष्क में बैठा लेना चाहता था। अत वह क्षण भर चुप रहा, तब उसने अपने हाथ फैलाते हुए पूर्ण सन्तुष्ट हो कहा

"तब फिलिप, तुम मेरे पिता हो!"

श्रमिक ने उसे गोद में उठाया और उसके दोनो गालो को चूमकर वह जल्दी से चल दिया।

दूसरे दिन जब बच्चा स्कूल पहुँचा तब उसका स्वागत घृणित हँसी से किया गया, और स्कूल के बन्द होने पर जब लड़के फिर से कल की घटना को दोहराने वाले थे साइमन ने उन लोगो से इस भाँति कहा कि मानो वह पत्थर फेंक रहा हो मेरे—"पिता का नाम फिलिप है।"

चारों ओर से हँसी की फुहारी छूट पड़ी।

"कौन फिलिप? फिलिप के क्या अर्थ? दुनियाँ में फिलिप किसे कहते है? यह अपना फिलिप कहाँ से उठा लाये?"

साइमन ने कोई उत्तर नहीं दिया, और अडिग विश्वास मे उसने अपने नेत्रों में उन सबका विरोध किया— वह उनके सामने से भाग जाने से बेहतर तो मरना पसन्द करता। स्कूल के मास्टर ने उसे बचा दिया और वह अपनी माँ के पास घर लौट दिया।

तीन महीनों तक वह लम्बा श्रमिक, फिलिप, बहुधा ला ब्लाचोटे के मकान के सामने होकर निकलता रहा और कभी २ जब वह खिड़की के पास बैठी हुई सींती-पिरोती रहती तब साहस संचित कर उससे बोल भी लेता वह उससे हमेशा ही सभ्यता एवं गम्भीरता से उत्तर देती और न तो कभी उससे परिहास करती और न उसे घर में ही घुसने देती।

इसकी चिन्ता किये बिना ही, वह अन्य व्यक्तियों की ही भाँति

सोचता कि जब भी वह उससे बातें करती थी तब ही वह पहिले से अधिक लाल हो जाती थी।

किन्तु सम्मान की चादर पर एक धब्बा पडने के बाद वह धब्बा इतना चमकता रहता है कि उसे साफ करना कठिन हो जाता है। उस लजीली ला ब्लाचोटे के इतने सम्हल कर चलने पर भी आस पडोस मे किम्बदन्तियाँ प्रचलित होने लगीं।

जहाँ तक साइमन की बात थी—वह अपने नये पिता का बहुत शौकीन था, और लगभग नित्यप्रति ही शाम को जब कि दिन का सब काम समाप्त हो जाता तब उसके साथ घूमने जाता। वह बराबर स्कूल जाता और बडी शान से उन बच्चो मे खेलता किन्तु उन्हें वह कभी उत्तर नहीं देता था।

एक दिन, उस लड़के ने जिसने उस पर पहले आक्रमण किया था, किसी तरह कहा .

"तुमने झूठ कहा था। तुम्हारा फिलिप नाम का कोई भी पिता नहीं है।"

" तुम ऐसा कैसे कह सकते हो ? " साइमन ने बहुत परेशान होकर पूछा।

उस लडके ने अपने हाथ मले और बोला .

" क्योंकि तुम्हारा कोई पिता होता तो वह तुम्हारी माँ का पति होता।"

साइमन इस तर्क की सचाई से अप्रतिभ हो गया किन्तु फिर भी बोला :

"इससे क्या होता है, वह मेरा पिता तो है ही।"

"हाँ, हो सकता है, किन्तु इससे वह पूरा पिता नहीं हो सकता है।" लडके ने मुँह बनाकर उससे चिल्ला कर कहा।

ला ब्लाचोटे के लडके ने अपना सिर झुकाया और पुरानी लोइजन की भट्टी की ओर, जहाँ फिलिप काम करता था, विचारमग्न हो चल दिया।

भट्टी पेडों के बीच अवस्थित थी। वहाँ बहुत अन्धकार था, जलती हुई भट्टी से निकलने वाली लपटें ही वहाँ काम करने वाले पाँचो लोहारो के ऊपर, जो अपनी निहाइयो पर हथोडे से काम करते थे, प्रकाश डालती थीं। उन लपटों से घिरे खड़े होकर वे दैत्यो की भाँति, उस लाल २ गर्म लोहे पर जिसको वे ढालते होते, अपने नेत्र गड़ा कर, काम करते थे। उनके धीमे-धीमे उठने वाले विचार उनके हथौडे के गिरने उठने के साथ २ ही प्रकट एव लुप्त होते रहते।

साइमन को घुसते वहाँ किसी ने न देखा था—उसने जाकर अपने मित्र की बाँह पकड़ ली। फिलिप ने पीछे मुड कर देखा, तत्क्षण ही काम बन्द हो गया और सब लोग उधर ही बहुत ध्यान से देखने लगे। तब उस अनभ्यस्त निस्तब्धता में साइमन की बांसुरी सी आवाज निकली .

"फिलिप, ला मिचेएडे पर एक लड़के ने कहा कि तुम पूर्ण रूप से मेरे पिता नही हो।"

"और ऐसा क्यो ?" लोहार ने पूछा।

बच्चे ने भोलेपन से उत्तर दिया

"क्योकि तुम मेरी माँ के पति नहीं हो।"

कोई हँसा नहीं। फिलिप अपने बडे २ हाथों के ऊपर जिनमें कि उसने निहाई की बिल्कुल सीध में हथौडे की मूठ पकड़ रखी थी, अपना मस्तक झुकाये खड़ा रहा। वह विचारों में खो गया। उसके चारो साथी उसे देख रहे थे, और इन दैत्यों के बीच एक छोटे से कण की भाँति साइमन उत्सुकता से प्रतीक्षा करने लगा। एकाएक उन लोहारों में से एक ने सबकी सहानुभूति को शब्दो में व्यक्त करते हुए फिलिप से कहा—

"ला ब्लाचोटे अच्छी और ईमानदार लड़की है और इस दुर्भाग्य में भी बहादुर और मेहनती है, और वह एक ईमानदार व्यक्ति को योग्य पत्नी साबित होगी।"

"यह बात सही है।" अन्य तीनों ने उसका अनुमोदन किया।

लोहार कहता रहा :

"क्या यह लड़की की गलती है, क्या वह पतित हो गई ? उससे तो

शादी का वायदा किया गया था, और मैं ऐसी दो-चार लडकियो को बतला सकता हूँ जिन्होंने भी उसके ही समान पाप किया था किन्तु आज उनका बहुत आदर होता है।

"यह सही बात है।" अन्य तीनों ने एक साथ कहा।

वह कहता रहा :

"बेचारी को अपने लड़के को पढाने के लिये अकेले ही कितना परिश्रम करना पड़ा और भगवान् ही जानता है—तब से वह कितनी रोई है और तब ही से गिरजाघर को छोड वह कहीं भी नही जाती।"

"यह भी सही बात है।" अन्यो ने कहा।

तब धौंकनी के अलावा, जो आग फिर से तेज करने के लिये चलाई गई थी, और कोई शब्द सुनाई नहीं दिया। शीघ्रता से फिलिप साइमन की तरफ झुका :

" जाओ और अपनी माँ से कह दो कि मैं उससे बातें करने आऊँगा।"

तब उसने बच्चे को अपने कन्धो से परे हटा दिया। वह अपने काम में लग गया और फिर से एक साथ एक स्वर मे पाँचो हथौड़ा की निहाइयो पर चोटें पडने लगी। इसी तरह रात्रि होने तक समुद्र यात्रियों की भाँति प्रसन्न, शक्तिवान् एव तगड़े लोहारो ने सारे लोहों को गला डाला। किन्तु जिस तरह त्यौहारों पर गिरिजा का बड़ा घन्टा अन्य छोटी-छोटी घन्टियो की आवाजों से ऊपर गूँजता रहता है उसी तरह फिलिप का हथौडा दूसरो के हथौडे के स्वरो को दाबता हुआ कर्णभेदी स्वर में हर दूसरे सैकण्ड पर गूँजता रहा—उडती हुई चिनगारियो मे, अग्नि पर अपने नेत्र जमाये हुए वह अपना कार्य पूरी गति एव शक्ति से करता रहा।

जब उसने ला ब्लाचोटे के मकान के दरवाजे को खटखटाया तब आकाश में तारे निकल आये थे। वह इतवार को पहिनने वाला ब्लाउज और नई कमीज पहिने हुए था—उसकी दाढ़ी बनी हुई थी। नवयुवती द्वार पर आई और क्षुब्ध स्वर में बोली :

"मि० फिलिप, इस तरह रात में आना ठीक नहीं है।"

वह उत्तर देना चाहता था किन्तु विभ्रम मे पड कर हडबडा कर चुप हो खडा रहा ।

वह फिर बोली

"और आप यह तो भली भाँति जानते ही होगे कि मेरे बारे में और किम्वदन्तियाँ प्रचलित हो जाने से काम नहीं चलेगा ।"

तब वह एकाएक बोल पड़ा

"लेकिन यदि आप मेरी पत्नी बनना स्वीकार कर लेती है तब मेरे लिए उससे क्या अन्तर पडेगा ।"

उसको कोई उत्तर नही मिला, किन्तु उसे विश्वास हो गया कि उसे कमरे के अन्दर छाया मे किसी के गिरने का शब्द सुनाई दिया । वह बहुत ही शीघ्रता से अन्दर प्रविष्ट हुआ, और साइमन ने, जो बिस्तर पर लेट चुका था, एक आलिगन की तथा अपनी माँ की बहुत धीमी आवाज को पहिचान लिया । तब एकाएक उसने देखा कि उसे उसके मित्र ने अपनी भीम सी बाहो में उठा लिया है और वह बोला ·

"तुम अपने स्कूल के मित्रों से कहना कि फिलिप रेमी लोहार तुम्हारा पिता है और जो भी कोई तुमको छेडेगा वह उसी के कान खींचेगा ।"

सुबह जब स्कूल मे सब विद्यार्थी आ चुके थे और पाठ पढ़ाये ही जाने वाले थे कि बच्चा साइमन उठा और अपने पीले कम्पित होठों से स्पष्ट स्वर में बोला—

"मेरा पिता फिलिप रेमी लोहार है, और उसने मुझे वचन दिया है कि जो भी मुझे तङ्ग करेगा उसके वह कान मलेगा ।"

अब कोई भी नहीं हँसा,क्योंकि फिलिप रेमी लोहार बहुत प्रसिद्ध व्यक्ति था और संसार में कोई भी उसका सा पिता पाकर गर्व कर सकता था ।

गुलाब
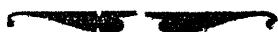
दो युवतियो की आकृति ऐसी है मानो वे पुष्पो की शय्या में चिपकी हों। एक बहुत ही विशाल टोकरी की भाँति फूलो से लदी बग्घी मे वे अकेली दोनो हैं। उनके सामने वाली सीट पर अच्छे वनफसे के फूलों की दो टोकरियाँ रखी हुई है, और रीछ की खाल पर जो उनके घुटनो पर पडी है गुलाव के फूलो, लिली—फ्लावरो, मारगरेटों, गुलशब्बो और नारङ्गी के फूलो के गुच्छे के गुच्छे रेशमी डोरियों से बँधे हुए ढेरों पड़े हैं—लगता है कि वे फूल उन कोमलांगियो के कन्धों,बाहो, और तनिक-सी चोलियों को छोड़कर सारे अङ्गों को कुचले दे रहे हों। एक की चोली नीली है तो दूसरी की हलकी गुलाबी।

कोचवान का कोडा एनोमोनस पुष्पो से लदा है, घोडे का सिर दीवाल पर लगाये जाने वाले पुष्पो से सुसज्जित है, पहियो की आरे पर खुशबूदार फूलों से युक्त लतायें लगी हुई हैं, और लालटेनो के स्थान पर दो बड़े-बडे शानदार फूल लगाये गये हैं जो इस चलते फिरते फूलों के विचित्र जानवर की आँखो की भाँति लग रहे है। यह बग्घी एन्टाइब्ज स्ट्रीट पर तेजी से चली जा रही है। इस गाडी के आगे, पीछे और साथ मे कितनी ही अनेक सुसज्जित गाडियाँ, जिनमें वनफसे के फूलों से आवरित अनेकानेक युवतियाँ है, चली जा रही है क्योकि आज केन्स में फूलोत्सव है।

वे सब बोलेवार्ड फोन्सेर, जहाँ युद्ध होता है, पहुँचीं। उस समस्त विशाल राह में सुसज्जित गाड़ियों की दोहरी कतार असीमित रिबन की भाँति आ जा रही थीं। वे एक दूसरे पर फूल फेकते थे। पुष्प वायु में गेंद के समान जाते, सुन्दर मुखमण्डलों पर टकराते, मडराते और धूल मे जा गिरते, जहाँ से उठा २ कर बच्चों की सैन्य उन्हें एकत्रित करती जाती।

एक घनी शोरगुल वाली किन्तु क्रमबद्ध भीड दोनों ओर के फुटपाथों पर खड़ी २ उत्सव देख रही थी। घोडे पर सवार पुलिसमैन आश्चर्यजनक पशुता से उन लोगो को लातो से पीछे धक्का देते हुए जाते ताकि वे दुष्ट उन अमीरो एव धनिकों से कहीं छू न जाँय।

अब, गाडियो में जो लोग सवार थे वे एक दूसरे को पहिचान लेते, एक दूसरे को आवाज देते, और एक दूसरो पर फूलों से प्रहार करते। लाल २ परिधानो से दैत्यो की तरह सज्जित, सुन्दर नवयुवतियों से भरा हुआ एक रथ समस्त समुदाय के नेत्रों को आकर्षित किये हुए है। एक व्यक्ति जिसकी आकृति चौथे हेनरी के चित्र से मिलती जुलती है प्रसन्नता से आत्मसात् हो इलास्टिक मे बधे एक बडे फूल को बार २ फेंकता है। चोट लगने के भय से स्त्रियाँ अपने सिर नीचे कर अपनी आँखें ढक लेती हैं, किन्तु वह आगे फेंका हुआ शानदार पुष्प जरा सा टेढ़ा हो अपने स्वामी के पास लौटकर आ जाता है, जोकि उसे तत्क्षण ही दूसरी नवागंतुका की ओर फेंक देता है।

वे दोनो नवयुवतियाँ अपने दोनों हाथों से अपने अस्त्रागार को खाली कर चुकीं और उन्हें फूलों की एक टोकरी दे दी गई, एक घन्टे की क्रीडा के पश्चात् जब उन्हें थोडी सी थकावट महसूस हुई तब उन्होने अपने कोचवान को समुद्र की ओर जाने वाली सड़क जुआन गल्फ की ओर चलने की आज्ञा दी।

सूर्य एस्ट्रोल के पीछे छिप गया। शान्त समुद्र क्षितिज तक जहाँ जाकर वह आकाश से मिल गया था, नीला और स्वच्छ फैला हुआ दिखलाई दे रहा था। और जहाजों का बेडा जो खाडी के बीच मे लगर डाले हुए था बड़े २ विशाल दिखलाई पडने वाले जानवरो, जिनकी पीठ पर कुब्ब हो, और जो थैलो की पर्तों में लिपटे हो, और जिनके सिरो पर मस्तूल रूपी पंख लगे हों, और नेत्र जो रात्रि आते ही चमकने लगते हों, के झुन्डो के समान लगता था।

नवयुवतियो ने फर की पोशाक में टांगे फैलाईं और उसकी ओर थकित सी दृष्टि डाली। अन्त में उनमें से एक बोली।

"कितनी सुहावनी संध्या है यह ! हर एक वस्तु अच्छी लगती है। क्यों ठीक है ना मारगोट ?"

दूसरी ने उत्तर दिया : "हाँ, बहुत अच्छी है। किन्तु हमेशा एक चीज की कमी रहती है।"

"वह क्या है ? और रही मेरी बात सो मै पूर्ण प्रसन्न हूँ। मुझे किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं।"

"हाँ ? शायद, तुम्हारा विचार है । हमारे शरीर के चारो ओर कुछ भी हो किन्तु हमे मन के लिये कुछ और भी चाहिये।"

"थोड़ा सा प्रेम।" दूसरी ने किंचित मुस्कुरा कर कहा।

वे दोनों चुप हो गईं। अपने सामने देखती हुईं उनमे से एक जिसका नाम मार्गरेट था बोली : "मुझे उसके बिना जीवन टिकता भी नही दिखलाई देता। मै चाहती हूँ मुझे कोई प्रेम करे चाहे वह कुत्ता ही क्यो न हो। सिमोने, तुम कुछ भी कहो, किन्तु हम सबकी यही अवस्था है।"

"नहीं प्रिये नही। मैं साधारण मनुष्य द्वारा प्रेम किये जाने से तो यह पसन्द करूंगी कि मुझे कोई प्रेम ही न करे। उदाहरण के लिये क्या तुम्हारा विचार है कि मै किसी ऐसे व्यक्ति से प्रेम करना पसन्द करूंगी जैसे ' जैसे "

उसने अपने नेत्र पडोस वाले गांव की ओर घुमाते हुए ऐसे व्यक्ति को देखना चाहा जो उससे प्रेम कर सके। सारे स्थानों पर घूमकर उसकी दृष्टि कोचवान की पीठ पर चमकते हुए दो बटनों पर जा पडी, और वह हंसती हुई बोली "अपने कोचवान से ;"

मेडम मार्गरेट उत्तर देते समय बड़ी मुशकिल से हस पाई।

"मै तुम्हे विश्वास दिलाती हूँ कि अपने घरेलू व्यक्तियों द्वारा प्रेम किये जाना बहुत आनन्दप्रद होता है। मेरे साथ ऐसी घटना दो या तीन बार बीत चुकी है। वे इस विचित्रता से अपने नेत्रो से देखते हैं कि हंसी के मारे दम निकलने लगता है। यह तो स्वाभाविक है कि जिसको जितना प्रेम किया जाता है वह उतनी ही गम्भीर होती चली जाती है अन्यथा यदि कोई देख ले तो वह अपने आप को किसी तनिक सी ही बात पर बडी हास्या-

स्पद स्थिति में ला पटकती है।"

मेडम सिमोनें ने सुना, उसकी दृष्टि ठीक सामने की ओर लगी रही, तब वह बोली

"नहीं, मेरे व्यक्तिगत सेवक द्वारा मेरे चरणों पर अपना हृदय न्यौछावर करने से मुझे सन्तोष नहीं होगा। किन्तु तुम मुझे यह बतलाओ कि तुमने यह कैसे समझा कि वह तुमसे प्रेम करता था।"

"जैसे अन्य व्यक्तिओं को देखकर पहिचान लेती हूँ वैसे ही मैं उसे भी पहिचान गई। ये लोग कतई मूर्ख हो जाते है।"

"किन्तु मुझे अन्य लोग इतने मूर्ख नही लगते जितने ये लोग प्रेम में पडकर हो जाते है।"

"प्रिये, ये लोग परले सिरे के मूर्ख होते है, बातें कर नहीं पाते, उत्तर दे नहीं पाते और कुछ समझ भी नहीं पाते हैं।"

"और तुम ? तुम पर घरेलू नौकर से प्रेम किये जाने का क्या प्रभाव पड़ा ? क्या तुम्हारी चापलूसी की गई—या द्रवित हो गई।"

"द्रवित ? नही। चापलूसी ? हाँ, थोडी सी। मनुष्य, वह कोई भी क्यों न हो, के प्रेम प्राप्त होने पर तो हर स्त्री की चापलूसी होती ही होती है।"

"ओह ! अब, मारगोट !"

"हाँ, मेरी प्रिये। रुको ! मै तुम्हें एक घटना जो मेरे साथ घटी थी सुनाऊंगी। तुम्हे मालुम पडेगा कि ऐसी घटनाओं मे हमारे अन्दर कितनी विचित्र बातें पैदा होती हैं।"

"आज से चार वर्ष पूर्व बसन्त ऋतु मे मेरे पास नौकरानी नही रही। मैंने एक के बाद एक करके पांच या छः की परीक्षा ली। सब अयोग्य निकलीं। और तब एक नौकरानी के लिए हताश हो मैंने एक समाचार पत्र मे एक नवयुवती का, जिसे सीना पिरोना, कसीदा काढना और बाल सँवारना आता था, विज्ञापन पढ़ा। वह युवती एक नौकरी की तलाश में थी और बहुत अच्छे प्रमाण पत्र दिखला सकती थी। वह अङ्गरेजी भी बोल सकती थी।

"मैंने उस पते पर पत्र डाला और दूसरे दिन वह स्त्री मेरे पास स्वयं आ उपस्थित हुई। वह कुछ लम्बी, पतली, कुछ पीली-सी डरपोक-सी स्त्री थी। उसके नेत्र सुन्दर थे, रङ्ग आकर्षक था और उसने मुझे शीघ्र ही सन्तुष्ट कर दिया। मैंने उससे परिचय-पत्र माँगे, उसने मुझे एक अङ्गरेजी मे लिखा हुआ दिया क्योंकि, उसने बतलाया कि, वह लेडी रीजवेल के यहाँ से, जहाँ वह दस वर्षों से रह रही थी, आई थी।

"प्रमाण पत्र में लिखा हुआ था कि वह लडकी अपनी इच्छा से फ्रास लौट रही थी, और उसे इस लम्बे सेवाकाल में सिवाय उसकी फ्रासीसी चाप-लूसी के और कोई शिकायत नहीं थी।

"अंग्रेजो के इस मुहावरे पर मै यत्किंचित मुस्कराई और मैंने उसी समय उसे नौकरी पर रख लिया। वह मेरे यहाँ उसी दिन आ गई, उसने अपना नाम गुलाब (Rose) बतलाया।

"एक महीना समाप्त होते ही मै उसकी आराधक बन गई। वह एक खजाना थी, अद्भुत वस्तु थी।"

"मेरे बालो को बहुत ही सुन्दर ढङ्ग से काढ़ सकती थी, वह टोपी के फीते को उस काम के करने वालो से भी अच्छा टाँक सकती थी और वह फ्राके भी बना लेती थी। उससे पहिले मेरी कभी इतने अच्छे ढङ्ग से सेवा नही की गई थी।"

आश्चर्यजनक मृदुता से वह अपने हाथों को बहुत जल्दी कपडे पहिना देती थी। उसकी उँगलियों ने मेरी त्वचा का कभी स्पर्श नहीं किया। और मुझे नौकरानी के हाथ के स्पर्श से अधिक बुरा और कुछ नही महसूस होता है। शीघ्र ही मै बहुत आलसी हो गई, उसके हाथ से, पैर से लगाकर सिर तक कपडे पहिनना चोली से लेकर दस्ताने पहिनना, मुझे बहुत ही आनन्ददायक लगता—यह पतली डरपोक लड़की हमेशा ही लज्जा से किंचित मात्र आरक्त हो जाती किन्तु कहती कुछ नही थी। नहाने के बाद जब मैं अपने दीवान रूम मे जाकर थोडी देर लेटती तब वह मेरे शरीर को मलती तथा दाबती, और सचमुच मै दयनीय परिस्थितियों में उसे नौकरानी की बजाय सखी की दृष्टि से देखती थी।

"एक दिन सुबह एक व्यक्ति ने कुछ अद्‌भुत रहस्य सा प्रदर्शित करते हुए मुझसे कहा कि वह मुझसे बातें करना चाहता था। मुझे आश्चर्य हुआ किन्तु मैंने उसे अन्दर आने की आज्ञा दे दी। वह एक पुराना सिपाही था और एक बार मेरे पति का अर्दली भी रह चुका था।

"जो कुछ वह कहना चाहता था उस पर पहिले तो वह हिचकिचाया किन्तु अन्त मे उसने हकलाते हुए कहा—"श्रीमतीजी इस जिले का पुलिस कप्तान नीचे सीढियों के पास खडा है।'

मैने पूछा—"क्यों उसे क्या काम है ?"

"वह मकान की तलाशी लेना चाहता है।"

'अवश्य ही पुलिस एक आवश्यक वस्तु है किन्तु मैं उसे पसन्द नहीं करती। मैं भी इसे भद्र व्यवसाय नही मान सकती। और मैने उत्तेजित एवं साथ ही साथ आहत होते हुए कहा

"यहाँ तलाशी क्यों ? किसलिये ? अभी तो कोई लूट मार हुई नहीं हैं।"

उसने उत्तर दिया.

"उसका विचार है कि यहाँ कहीं एक अपराधी छिपा हुआ है।"

"मैं थोडी सी भयभीत होने लगी और मैने पुलिस कप्तान को ऊपर बुलाने की इसलिये आज्ञा दी कि मै उससे उसका अर्थ पूछूँ। वह अच्छे कुलीन घर का था और उसकी पोशाक पर लीजन आफ ऑनर का तमगा लग रहा था। उसने स्वयं क्षमा माँगी और मुझसे अपनी बात दोहराने को कहा और तब उसने मुझे निश्चय दिलाया कि मेरे नौकर में से एक नौकर अपराधी था।

"मुझे तो बिजली मार गई, मैने उत्तर दिया कि मै उनमे से प्रत्येक की जिम्मेदारी ले सकती थी किन्तु उसे सन्तोष दिलाने के लिये मै उन सबको उसके सम्मुख उपस्थित भी कर सक्ती थी।"

"मेरे यहाँ एक पुराना सैनिक पीटर कोर्टिन है।"

यह वह नहीं था।

"कोचवान फ्रान्सिस पिन्गाऊ, मेरे पिता के खेतो पर काम करने वाले किसान का लडका।"

वह भी नही था।

घुडसाल मे काम करने वाला लडका, सेम्पेगने का है, और मेरे जाने हुए किसानो का लडका है—इसके अतिरिक्त वह चौकीदार है जिसे आपने अभी देखा था।

"उन सबमे से भी कोई नहीं था।"

"तब साहब, आपको धोखा हुआ है।"

"क्षमा कीजियेगा श्रीमती जी, मुझे विश्वास है कि मुझे धोखा नहीं हुआ है। आपकी आकृति अपराधियों की सी क्तई नही है। अत क्या आप अपने सब नोकरो को मेरे और अपने सामने बुलाने की कृपा करेंगी, सबको ?"

"पहिले तो मै हिचकिचाई, तब मैं चिल्ला २ कर अपने जनाने मरदाने सब नौकरो को आवाज देने लगी।"

उसने उन सबकी ओर एक क्षण मे ही देखकर उत्तर दिया—

"इनमे कोई भी नही हे।"

"क्षमा कीजिये", मैंने उत्तर दिया—"बस, मेरी सेविका के अतिरिक्त जो कि किसी भी भाँति अपराधिनी नहीं हो सकती, यहाँ और कोई नहीं है।'

उसने पूछा—"क्या मैं उसे भी देख सकता हूँ ?"

"निश्चय।"

"मैंने घण्टी बजाई और तुरन्त ही गुलाब उपस्थित हुई। वह अन्दर आ भी नहीं पाई थी कि उसने इङ्गित किया और दो आदमी, जो द्वार के पीछे छिपे हुए थे और जिन्हे मै देख भी नही पाई थी, उसके ऊपर झपटे और उसके हाथो को पकड कर उसे रस्सी से बाँध लिया।

"मैं बहुत क्रोध मे उन्मत्त हो चिल्ला पडी और उसकी रक्षा करने को उठने ही वाली थी कि कप्तान ने मुझे रोक दिया—

"श्रीमतीजी, यह लडकी पुरुष है जो अपना नाम जॉन निकोलस खेसापेट बतलाता है और जिसको सन् १८३९ मे हिंसा से हत्या करने के अपराध मे मृत्युदण्ड दिया गया था। इसकी सजा आजीवन कारावास में बदल दी गई। यह चार महीने पहिले भाग निकला था और हम लोग तब ही से तलाश कर रहे है।"

मै प्रसन्न हो चुप हो गई। मै उस पर विश्वास नहीं कर सकी। पुलिसमैन ने हँसते हुए कहने का क्रम जारी रखा—

"मै आपको केवल एक ही सबूत दे सकता हूँ और वह है कि इसकी बाईं बाह गुदी हुई है।"

उसकी बाहे उघारी गईं। यह बात सही थी। पुलिसमैन ने कहा—उसका स्वर निश्चय ही दुविनीत था।

"निस्सन्देह,अब आपके सन्तोष के लिए अन्य प्रमाणो की आवश्यकता नहीं रही होगी।"

और वह मेरी नौकरानी को अपने साथ ले गया।

यदि तुम विश्वास करो, मेरे अन्दर उस समय जो सबसे अधिक प्रचण्ड भावना थी वह थी क्रोध की कि मेरे साथ इस भाँति खिलवाड किया गया और मुझे हास्यास्पद बनाया गया, उसके द्वारा कपडे पहिनाये जाने पर, अङ्ग स्पर्श होने पर, या अन्य कार्य करवाने पर लज्जा की बात नहीं थी, किन्तु यह थी ठेस—आत्म-सम्मान को ठेस—स्त्री के आत्म-सम्मान को ठेस। समझी ?'

"नहीं पूरी तरह से नहीं।"

"देखो एक मिनट विचार करो—हिंसात्मक कार्यों के कारण उसको फाँसी दी गई, यह नवयुवक ·और इससे—बस आगे वहाँ मेरा गर्व खण्डित हो गया अब तुम समझी ?"

और मैडम सिमोने ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह अपने सामने दो चमकते हुए बटनों पर दृष्टि जमाये हुए, दैवी मुस्कान से जो कभी २ स्त्रियों के मुख पर स्वभावतः आ जाती है, कोसती रहीं।

एक राज काज

सीडन के विस्फोट की बात पेरिस मे अभी-अभी मालूम हुई थी। स्वतन्त्रता घोषित कर दी गई थी। सारा फ्रास एक पागलपन से उन्मत्त हो रहा था और वह पागलपन तब तक चलता रहा जब तक कि उसे कौमनवेल्थ घोषित न किया गया।

सारे देश में एक सिरे से दूसरे सिरे तक सब सैनिक ही बने दिखाई देते थे।

टोपी बनाने वाले कर्नल बन गये और जनरलो की ड्यूटियाँ सम्भाले हुए थे, पिस्तौलें और छुरे लाल २ जालियों से लपेट कर प्रदर्शित किये गये थे। साधारण नागरिक योद्धा बन गये, उन्होंने शोर मचाने वाले स्वय-सेवको की कमाडिग बटालियनें बना ली और सैनिको की भाँति अपनी महत्ता प्रदर्शित करने के लिये वे लोग शपथें खाने लगे।

क्रम-बद्ध हो हथियार पकडने और बन्दूकें चलाने की ही भावना ने मनुष्यो को, जिन्होंने इधर हमेशा से ही फुटों और नपने के गजों का ही प्रयोग किया था, उत्तेजित कर दिया और जो भी आया उससे वे अकारण ही डर गये। उन्होंने यह दिखलाने के लिए कि वे मार डालना भी जानते थे कुछ निर्दोष व्यक्तियों को मृत्यु के घाट भी उतार दिया था। प्रशियनों के खेतों मे घूमते-घूमते कुत्तों को या गायो को जो शान्ति से भूसा खा रही होतीं, या घोड़ा को जो चरागाहो मे छोड दिये गये थे, वे लोग अपनी गोली का शिकार बना देते—हर एक को अपने ऊपर विश्वास था कि वह सेना मे किसी बहुत ही महान् पार्ट को अदा करने में समर्थ है। छोटे से छोटे गाँवों के यूनीफार्म पहिने हुए व्यापारियों से भरे हुए जलपान-गृह ऐसे लगते मानो वह मिलिटरी-बैरक या अस्पताल हो।

केनेविले नगर में राजधानी तथा सेनाओं के उत्तेजनात्मक समाचार

अभी तक नहीं पहुँचे थे। एक ठिगने पतले आदमी मेयर विस्काउन्ट डी थारनेटोट ने, जो अब वृद्ध हो गया था, खासतौर से जब से अपने विरुद्ध जिले की रिपब्लिकन पार्टी के नेता मैसोनिक लोज के मुखिया, कृषि एवं अग्नि सभा के सभापति, और देश की रक्षा करने के विचार से एकत्रित की गई सेना के सस्थापक डाक्टर मसरेल के बडे और गम्भीर स्वरूप मे अपने महान दुर्भाग्य को पैर फैलाते हुए देखा तब से वह राज्य के प्रति और भी अधिक वफादार हो गया।

दो सप्ताहों मे उसने अपने देश की रक्षा करने के लिये अ`सठ स्वयं-सेवक, विवाहित पुरुष, परिवारो के कर्त्ता, नगर के बुद्धिमान किसान एव व्यापारी, भरती किये। इन्हे वह मेयर की खिडकी के सम्मुख नित्य प्रति कवा-यद कराता

जब कभी भी मेयर दिखलाई पड जाता तब ही पिस्तौलो से सुसज्जित कमान्डर मसरेल अपनी सेना के सम्मुख गर्व से इधर से उधर जाता हुआ उनसे नारे लगवाता "हमारा देश—अमर रहे।" और वे देखते कि इससे उस अमीर को, जो उसे निस्सन्देह धमकी और धींगाधींगीं समझता, परेशानी पैदा हो जाती थी और शायद उसे महान क्रान्ति की कोई घृणित स्मृति हो आती थी।

पाच सितम्बर की सुबह अपनी ड्रेस में डाक्टर एक वृद्ध किसान दम्पति को देख रहा था, उसका रिवोल्वर उसकी मेज पर रखा हुआ था। पति को वह बीमारी सात वर्षों से थी किन्तु वह अपनी पत्नी के भी उस बीमारी से बीमार हो जाने की प्रतीक्षा करता रहा जिससे कि वे डाकिये के सङ्ग, जब वह समाचार-पत्र लेकर आवे तब दोनों ही डाक्टर के यहाँ साथ २ इलाज करानें जाय।

डा० मसरेल ने द्वार खोला, वह पीला पड गया तथा सीधे खडे होते हुए स्वर्ग की ओर हाथ उठा कर उन आश्चर्य चकित ग्रामीणो के मुख की ओर प्रशसात्मक दृष्टि से देखते हुए चिल्लाकर कहा :

"हमारी स्वतन्त्रता अमर रहे ! हमारी स्वतन्त्रता अमर रहे ! हमारी स्वतन्त्रता अमर रहे !"

तब वह आवेश में आकर अपनी आराम कुर्सी पर लेट गया।

जब किसान ने बतलाया कि उसकी बीमारी का आरम्भ पावों के सुन्न पड जाने से हुआ अर्थात् पावो मे ऐसा लगता कि चीटियाँ उतर चढ़ रही है, तब डाक्टर ने चिल्लाकर कहा "खामोश रहो। मैने तुम मूर्खों के लिये पहिले ही बहुत समय देदिया है। स्वतन्त्रता की घोषणा हो चुकी है। सम्राट बन्दी बना लिया गया है। फ्रास की रक्षा हो गई। हमारी स्वतन्त्रता अमर रहे!" और, द्वार के पास दौडकर उसने पुकारा "सेलेस्टे! जल्दी! सेलेस्टे!"

नौकरानी घबड़ाकर शीघ्र अन्दर आ गई। वह इतनी जल्दी २ बोल रहा था कि तुतला जाता "मेरे जूते—मेरी तलवार—गोलियो का मेरा बक्स और—स्पेनिश कटार—वह मेरी नाइटटेबिल पर रखी हैं। जल्दी!"

जिद्दी किसान एक क्षण की चुप्पी के पश्चात समय से लाभ उठाते हुए बोला "यह मुझे जब मै चलता था तब पानी भरे गुब्बारे की भाँति चोट पहुँचाता था।"

क्रोध मे भरा हुआ डाक्टर चिल्लाया " खामोश रहो। भगवान के वास्ते। अगर तुम अपने पैरों को यदाकदा धोते रहते तो ऐसा नहीं होता।" तब उसकी गर्दन पकड, उसके मुह पर फुसकारते हुए वह बोला "मूर्ख, क्या तुम यह नहीं समझ पाते कि हम लोग स्वतन्त्र देश मे रह रहे हैं?"

किन्तु उसकी व्यवसायिक भावना ने उसे एकाएक शान्त कर दिया और उसने आश्चर्य मे पडे हुए वृद्ध दम्पति को मकान से बाहर निकालते हुए बार २ दोहराया —

"कल आना कल—कल—कल-मेरे दोनों आज मेरे पास और समय नहीं है।"

अपने आपको सिर से पाव तक सजाते समय उसने अपनी नौकरानी को दूसरी अन्य आवश्यक आज्ञाओ की लडी बाँध दी:—

"लेफ्टीनेन्ट पिकार्ड और सब-लेफ्टीनेन्ट पोनेल के घरों पर दौडकर जाओ और उनसे कहो कि मुझे उनसे यहाँ बहुत जरूरी काम है वे यहाँ आकर मिल लें। हाँ, टोर्चेब्यूफ को भी ड्रम (ढोल) लेकर भेज दो। जल्दी

अब ! जल्दी !" और जब सेलेस्टे चली गई उसने परिस्थिति की कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करने के लिये अपने विचारों को सगठित एवं तैयार किया।

तीनो आदमी एक साथ आये। वे अपने दैनिक कपड़े पहिने हुए थे। कमान्डर को यह देखकर आश्चर्य हुआ क्योंकि उसे आशा थी कि वे लोग अपनी वर्दियो को पहिनकर आयेंगे।

"तब तुम्हे कुछ नहीं मालूम ? साम्राट बन्दी बना लिया गया है। स्वतन्त्रता की घोषणा हो गई है। मेरी स्थिति नाजुक है कहना न होगा कि खतरनाक है।"

वह अपने आधीनस्थ कर्मचारियों के चकित चेहरो की ओर देखकर कुछ मिन्टो तक विचार करता रहा और तब बोला —

"हिचकिचाने की आवश्यकता नही कार्य करने की आवश्यकता है। इस समय एक २ मिनट घन्टों के बराबर है। हर वस्तु—निर्णय की शीघ्रता पर निर्भर है। पिकार्ड, तुम जाओ और पादरी से मिलो और लोगो को एकत्रित करने के लिये घन्टी बजवाओ तब तक मै आगे जाता हूँ। टोर्क्यूफ जाओ और सेना को शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित कर एकत्रित होने के लिये घन्टी बजाओ। पामेल तुम अपनी ड्रेस शीघ्र ही पहिनो वह रही जाकेट और टोपी। हम दोनों मेरी पर अधिकार करने जा रहे है और मोन्स्यूर डी बारनेटोट से सत्ता मैं अपने हाथो हस्तातरित करने जा रहा हूँ। समझे ?"

"जी।"

"तो फिर शीघ्रता से करो। पामेल, मै तुम्हारे साथ तुम्हारे घर तक चलूंगा क्योंकि हम दोनों को साथ ही साथ काम करना है।"

पांच मिनट पश्चात, कमान्डर और उसका अधीनस्थ दोनो ही शस्त्रों से सुसज्जित हो मैदान मे आ उपस्थित हुए। ठीक उसी समय दूसरी सडक से विस्काउन्टडी वारनेटोट शिकार खेलने के जूते तथा हरी जाकेट पहिने हुए और अपने कधे पर अपनी बन्दूक रखे हुए, तीन चौकीदारो के साथ, जिनके बगल में एक २ चाकू लटका हुआ था तथा कंधो पर एक २ बन्दूकें रखी हुई थी, बड़ी तेज चाल से चला जा रहा था।

डाक्टर रुका, और अर्द्ध मूर्च्छित से हो चारों व्यक्ति मेयर के घर में घुस गये। उनके घुसते ही दरवाजा बन्द हो गया।

डाक्टर बडबडाया—"हम लोगों को पहिले से घेर लिया गया है, अब नई सेना के आने तक रुकना आवश्यक होगा, पन्द्रह मिनट तक तो अभी कुछ भी नहीं हो सकता।"

यहाँ लेफ्टीनेन्ट पिकार्ड आया—"पादरी आज्ञा का पालन करने से इन्कार करता है।" वह बोला—"यहाँ तक कि वह गिरजाघर में ही वहाँ के अफसर तथा दरबान को बन्द करके बैठ गया है।"

मैदान के दूसरी ओर मेरी के पास ही सामने काले और शान्त गिरजाघर का शाहबलूत की लकड़ी का बना हुआ बड़ा दरवाजा, जिसके ऊपर लोहे की नक्काशी, जो अब गल चुकी थी, हो रही थी, दिखलाई दिया।

तब, ज्योंही परेशान नगर-निवासी खिड़कियों में से झाँकने लगे, या अपने मकानों की सीढ़ियो पर आये त्योंही ढोल बजता हुआ सुनाई दिया। और टोर्चेब्यूक क्रोध मे भरा हुआ सैनिको को बुलाने के लिये ढोल बजाता हुआ एकाएक आया। उसने मैदान को अनुशासनात्मक ढङ्ग से कदम रखते हुए पार किया फिर एक गाँव को जाने वाली सड़क पर चल दिया।

कमान्डर ने अपनी तलवार बाहर निकाली और दोनों इमारतो के बीच में, जहाँ शत्रु एकत्रित कर लिये गये थे, अकेला पहुँचा और अपने अस्त्र को अपने सिर के ऊपर से घुमाता हुआ अपनी पूरी शक्ति से चिल्लाया—"हमारी स्वतन्त्रता अमर रहे! गद्दारों को फाँसी मिले!!" तब वह पीछे, जहाँ उसके अन्य अफसर थे, लौट आया। गोश्त, रोटी और दवाई बेचने वालो ने सशंकित हो अपने २ किवाड़ लगाये और अपनी दूकानें बन्द करदो। केवल वस्तु भडार ही खुला रहा।

इसी बीच मे थोडे २ कर, भिन्न-भिन्न कपडे पहने हुए सैनिक आते रहे। वे सब टोपी पहिने हुए थे—टोपी ही सेना की सारी यूनीफार्म बन गई। वे लोग पुरानी जङ्ग खाई हुई बन्दूकों से सुसज्जित थे। उनको वे

बन्दूके रसोई घरों की धुँएदानी में तीस २ वर्षों से लटकी रहती थी। उनकी सेना देहाती सेना की तरह लग रही थी।

जब कमान्डर के चारों ओर लगभग तीस लोग इकट्ठे हो गये, तब उसने उन लोगों को राज्य के बारे में संक्षेप में बतला दिया। और अपने मेजर की तरफ मुड़ते हुए वह बोला—"अब हम लोगों को अपना काम करना चाहिये।"

उधर नगर-निवासी एकत्रित होते रहे तथा उस विषय में बातचीत या बहस करते रहे, इधर डाक्टर ने शीघ्र ही आक्रमण करने की अपनी योजना बना डाली

"लेफ्टीनेन्ट पिकार्ड, तुम मेयर के मकान की खिड़की के पास जाओ और मि० डी० वारनेटोट को स्वतन्त्रता के नाम पर नगर भवन मुझे सौंप देने की आज्ञा दो।"

किन्तु लेफ्टीनेन्ट मेसन * शिक्षक था। उसने वहाँ आना अस्वीकार कर दिया। वह बोला :

"आप.. ...आप बेकार आदमी हैं। और पहिला शिकार मेरा ही बनाना चाहते हैं। जानते हैं, वे लोग जो वहाँ पर अन्दर हैं बहुत अच्छे निशाने रहेंगे। नहीं, धन्यवाद अपना काम आप स्वयं ही कीजिये।"

कमान्डर क्रोध से लाल होकर बोला—"मै तुमको अनुशासन के नाम पर वहाँ जाने की आज्ञा देता हूँ।"

"अकारण ही मैं अपने पङ्ख नहीं कटवाता।" लेफ्टीनेन्ट ने उत्तर दिया।

प्रभावशाली व्यक्तियों की, जो वहीं पास में एक दल बना कर खड़े

* मेसन—फ्रीमेसन योरोप में एक धार्मिक संस्था है। उस संस्था के सदस्य मेसन कहलाते हैं। ये लोग विश्व बन्धुत्व की भावना का प्रचार करते हैं।

हुए थे, हँसी की आवाज सुनाई दी। उनमे से एक ने कहा—"पिकार्ड, तुम ठीक कह रहे हो, अभी उचित समय नही आया।" डाक्टर मन ही मन बडबडाया "कायर!" और अपनी तलवार तथा पिस्तौल को एक सिपाही के हाथ में देता हुआ वह नपे तुले कदमों से आगे बढ़ा। उसके नेत्र खिडकियों की ओर जमे हुए थे मानो उसे कोई बन्दूक या तोप अपनी ही ओर सधी दिखलाई देने की सम्भावना थी।

वह उस इमारत से कुछ कदम ही दूर था कि दो छोरो का दरवाजा जिसके अन्दर से दो स्कूलो का रास्ता था खुला और छोटे २ बच्चों की बाढ़ सी आई—एक ओर लडके दूसरी ओर लडकियाँ खुले स्थान में आकर डाक्टर को चिडियों के झुण्डों की भाँति घेर कर बातचीतें करते हुए खेलने लगे। उसकी समझ में नहीं आया कि करना क्या चाहिये।

जब अन्तिम बच्चा बाहर निकल आया तब दरवाजा बन्द हो गया। अन्त में छोटे २ बन्दरों का बड़ा समुदाय इधर उधर फैल गया और कमान्डर ने उच्च स्वर से पुकार कर कहा

"मि० डी वारनेटोट?" पहिली मन्जिल की एक खिड़की खुली और मि० डी वारनेटोट उसमें से झाँके।

कमान्डर ने कहना प्रारम्भ किया—"मिस्टर, आपको उन सब महान् घटनाओं की जानकारी तो होगी ही जिनके कारण सरकार बदल गई है। जिस सस्था के आप प्रतिनिधि हैं वह संस्था ही समाप्त हो गई है। जिस पक्ष का मैं प्रतिनिधि हूँ शक्ति अब उसके हाथों में आ चुकी है। ऐसी दुखद, किन्तु निश्चित परिस्थिति में मैं आपके पास स्वतन्त्रता के नाम पर पिछली सरकार द्वारा आपको दिये गये अधिकारों को अपने हाथ में लेने की माँग करने आया हूँ।"

मि० डी वारनेटोट ने उत्तर दिया—"डा० मसरेल, मैं कैनेविले का मेयर हूँ और अधिकृत व्यक्तियों द्वारा बनाया गया था। मैं कैनेविले का मेयर तब तक रहूँगा जब तक कि यह पदवी मेरे उच्च अधिकारियों द्वारा मुझसे छीन ली या बदली नहीं जाती। और मेयर की हैसियत से मैं मेरी में एक घर मे रह रहा हूँ और रहूँगा भी यहीं। इसके बाद भी तुम चाहो

वह सीधी कमान्डर के पास गई और एक पत्र उसके हाथ में दिया। मैदान को पार करती हुई अपने ऊपर जमी हुई सैकडो दृष्टियाँ सहमी हुई, सिर झुकाये तेज कदमों से उसने सेना से भरे हुए उस मकान के द्वार पर थपकी दी मानो वह इस बात से अनजान हो कि वहाँ भी सेना के कुछ लोग छिपे हुए थे।

द्वार थोडा सा खुला, एक मनुष्य के हाथ ने वह पत्र ले लिया, और लडकी, सैकडो दृष्टियो के जमे होने के कारण लज्जित, रुआँसी सी हो वहाँ से लौट दी।

डाक्टर ने काँपते हुए स्वर मे कहा—"कृपा कर शान्त हो जाइये।" और जब जनता शान्त हो गई तब उसने गर्व से कहा :

"देखिये यह रहा सन्देश जो मुझे अभी-अभी सरकार से प्राप्त हुआ है।" और उस पत्र को, जो उसे मिला था, ऊँचा उठा कर वह पढने लगा —

पुराना मेयर पदच्युत कर दिया गया। और क्या अति आवश्यक है सूचित कीजिये।

आज्ञायें बाद में—

सेपिन

वास्ते मन्त्री

सब प्रीफेक्ट।

उसकी विजय हो गई। उसका हृदय प्रसन्नता से भर उठा, हाथ काँपने लगा जब उसके पुराने लेफ्टीनेन्ट पिकार्ड ने एक पास वाले दल में से चिल्ला कर कहा—"यह तो ठीक है, किन्तु यदि वे लोग नहीं निकले तो आपके पत्र की कोई कीमत नहीं।" तब डाक्टर कुछ अप्रतिभ हो गया। यदि वे खाली नहीं करते—वास्तव में उसे आगे जाना चाहिये। यह उसका केवल अधिकार ही नहीं कर्त्तव्य भी था। और उसने मेयर के मकान की ओर उत्सुकता से इसलिये देखा कि शायद कोई द्वार खुला हो और उसमें से उसे उसका शत्रु दिखलाई दे जाय। किन्तु द्वार बन्द रहा। अब क्या

करना चाहिये ? सैनिकों को घेर कर भीड बढ़ती जा रही थी। कुछ लोग हँस रहे थे।

डाक्टर को एक विचार से बड़ी परेशानी हुई। यदि वह आक्रमण करता है तो उसे अपने आदमियों का नेतृत्व करना पडेगा, और उस अकेले के ऊपर मि डी वारनेटोट और उसके तीनों चौकीदार गोली चलायेंगे और यदि कहीं वही मर जावेगा तो झगडा ही समाप्त हो जावेगा। और उन लोगों का निशाना अच्छा—बहुत अच्छा था ! इसका पिकार्ड ने उसे ध्यान दिला दिया था।

किन्तु एक विचार उसके मस्तिष्क में घूम गया और वह पामेल की ओर मुड कर बोला—"जल्दी से जाकर दवाई बेचने वाले से एक पोल और एक झण्डा लेकर मेरे पास भेजने को कहो।"

लेफ्टीनेन्ट जल्दी से गया। डाक्टर एक राजनीतिक ध्वज (सफेद) बनाने जा रहा था, शायद वह उस बुड्ढे असली मेयर के हृदय को प्रसन्न कर दे।

पामेल कपडा और पोल लेकर आ गया। थोडे से धागो से उन्होंने उसे ठीक ठाक कर लिया। मसरेल ने उसे अपने दोनों हाथों से पकड लिया। फिर वह मेयर के मकान की तरफ हाथ में झडा लिये बढ़ा। द्वार के सामने खडे होकर उसने आवाज दी— 'मि डी वारनेटोट।"

द्वार एकाएक खुला और मि डी वारनेटोट तथा उसके तीनों चौकीदार दिखलाई पड़े। स्वभावगत डाक्टर झिझका। फिर उसने अपने शत्रु को विनय से अभिवादन किया और भावनाओं से विभोर होता हुआ बोल—महोदय, मैं आपको उन आज्ञाओं की जो मुझे अभी प्राप्त हुई हैं सूचना देने आया हूँ।"

भद्र पुरुष ने बिना किसी भी प्रकार के अभिवादन किये हुये ही कहा—"महोदय, मैं स्वयं अलग हुआ जाता हूँ, किन्तु आपको यह जान लेना चाहिये कि मैं किसी भय से या घृणित सरकार जिसने अन्याय से शक्ति हथियाली है, की आज्ञाकारिता से प्रभावित होकर ऐसा नहीं कर रहा।" और एक २ शब्द को भींच कर उसने घोषित किया—"मुझे एक दिन

भी रिपब्लिक की सेवा करने की इच्छा नहीं है। बस यही मुझे कहना है।"

मसरेल आश्चर्यचकित हो गया उसने कोई उत्तर नहीं दिया, और मि डी वारनेटोट अपने अङ्गरक्षकों के साथ तेजी से कदम रखता हुआ कोने के पास ही अदृश्य हो गया। तब डाक्टर कुछ अप्रसन्न सा हो भीड में लौट आया। जब वह उस भीड से केवल इतनी ही दूर रह गया जहाँ से कि उसकी आवाज वहाँ तक पहुँच सकती थी। वह चिल्लाया—"हुर्रा ! हुर्रा !! प्रजातन्त्र सब पर एक सिरे से विजय प्राप्त कर रहा है।"

किन्तु कोई उत्तेजना नहीं दिखलाई दी। डाक्टर ने फिर से प्रयत्न किया--"मनुष्य स्वतन्त्र है ! आप आजाद और स्वतन्त्र हैं !! समझे आप !!! इस पर गर्व कीजिये।"

असावधान ग्रामीणों ने निष्प्रभ नेत्रों से उसकी ओर देखा। अपनी पारी पर, उसने उनको उदासीनता पर, उनकी ओर क्रोध से देखा और ऐसे शब्दों को खोजने लगा जो बहुत प्रभावोत्पादक हों और इस शान्त गाँव मे बिजली सी दौडा दें जिससे वह अपने सत्कार्य में सफल हो सके। उसे प्रेरणा हुई और पामेल की ओर मुडते हुये वह बोला—"लेफ्टीनेन्ट, जाओ पहिले सम्राट की मूर्ति (धड) और एक कुर्सी, जो काउन्सिल हाल में रखी हुई है, मेरे पास लेकर आओ।"

और जल्दी ही वह आदमी अपने दायें कन्धे पर प्लास्टर की नैपोलियन तृतीय की मूर्ति को, और बाँये हाथ में कुर्सी को लेकर आ गया।

मसरेल उससे मिला, कुर्सी दी, उसे जमीन पर रखा और उस पर श्वेत मूर्ति को रखा, थोडे कदम पीछे हटा और उच्च स्वर में बोला

"निर्दयी ! निर्दयी !! यहाँ तुम्हारा पतन होता है। धूल और मिट्टी मे मिल जाओ। एक निष्प्राण देश तुम्हारे पैरों के नीचे कराहता है। भाग्य

तुमको बदला लेने वाला कहता है। पराजय और लज्जा तुम्हारा दामन पकड़ती है। प्रशियनो के एक बन्दी, तुम पराजित होकर गिर पड़ो और गिरे हुए साम्राज्य के खडहरो पर तुम्हारी टूटी हुई तलवार को लेकर प्रभायुक्त एव प्रजातंत्र उठकर खड़ा हो रहा है।"

उसने सराहना की आशा की। किन्तु कोई आवाज नहीं आई, किसी ने कुछ न कहा। भ्रम में पड़े हुए किसान चुपचाप खडे रहे। और मूर्ति (धड़) दोनों गालों तक पहुँचने वाली नुकीली मूँछों से, मि० मसरेल की ओर प्लास्टर मुस्कान, मुस्कान परिहास पूर्ण एवं अपरिवर्तनीय, से देखती हुई सी लगती थी। मूर्ति इतनी क्रियाहीन थी एव उसके बाल इतने अच्छे कढ़े हुए थे कि वह नाइयों की दूकान के योग्य थी।

वे इसी तरह आमने सामने खड़े रहे, नैपोलियन कुर्सी पर और डाक्टर उसके सामने लगभग तीन कदम दूर। एकाएक कमान्डर क्रुद्ध हो गया। क्या करना चाहिये था? ऐसी कौन-सी बात थी जिससे लोग विचलित हो उठते, और जिससे उन लोगों की राय में विजय निश्चित हो जाती? उसका हाथ उसके नितम्ब पर रखा था और अकस्मात वह उसकी पिस्तौल के एक सिरे से छू गया। कोई प्रेरणा या शब्द नहीं आया। किन्तु उसने अपनी पिस्तौल निकाली, दो कदम आगे बढ़ा, और मृतक सम्राट पर गोली छोड़ दी। गोली उसके माथे पर एक धब्बे की तरह काला छोटा सूराख कर घुस गई। इससे अधिक कुछ नहीं हुआ। तब उसने दुबारा गोली चलाई उससे दूसरा सूराख हो गया, तब तीसरा, चौथा—यहाँ तक कि उसने अपनी पिस्तौल को खाली कर दिया। नैपोलियन की भौंहें सफेद पाउडर में छिप गई, किन्तु आँख, नाक, मूँछों की बढ़िया नोके पहिले की ही भाँति बनी रहीं। तब क्रोध मे उन्मत्त हो डाक्टर ने एक घूँसे में कुर्सी को उलट दिया और उस मूर्ति (धड) पर विजयी की भाँति अपना एक पैर रखते हुए चिल्लाया—"इसी भाँति समस्त अत्याचारियों का नाश हो जाने दो।"

फिर भी कोई उत्साह नहीं दिखलाई दिया और दर्शक ऐसे लग रहे थे मानो आश्चर्य से दङ्ग रह गये थे। कमान्डर ने अपने सैनिकों को बुलाया

"आप लोग अपने २ घर जा सकते हैं।" और वह लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ अपने घर को चल दिया मानो कोई उसको मार डालने के लिये उसका पीछा कर रहा हो।

जब वह घर पहुँचा तब उसकी नौकरानी ने उससे कहा कि कुछ मरीज उसके कार्यालय में तीन घण्टो से उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। वह कमरे में जल्दी से चल दिया। वहाँ दो बीमार थे, जो कि सुबह से ही लौट कर आये हुए थे। वे हठी थे किन्तु थे धैर्यवान।

वृद्ध ने शीघ्र ही कहना आरम्भ कर दिया—"जब यह आरम्भ हुआ तो ऐसा लगता था कि पाँव मे चींटियाँ ऊपर नीचे आ जा रही हैं।"

हीरे का हार

वह उन सुन्दर, आकर्षक नवयुवतियों में से एक थी जिसे मानो कि विधि की गलती के कारण क्लर्कों के एक परिवार में जन्म लेना पड़ा। उसके पास कोई दहेज नही था, कोई आशाये नहीं थीं, विख्यात होने, प्रशंसा प्राप्त करने और धनी अथवा प्रसिद्ध व्यक्ति से विवाह करने का कोई साधन नही था। शिक्षा विभाग के एक छोटे से क्लर्क से उसने विवाह करना स्वीकार कर लिया।

वह श्रृङ्गार करने मे असमर्थ थी। अतः सीधी और साधारण ढङ्ग से रहती थी, किन्तु वह एक ऐसी स्त्री जो अपने ऐसे परिवार से जिन स्त्रियो की कोई जाति नहीं होती, कोई नस्ल नहीं होती और उनकी सुन्दरता उनकी मनमोहकता उनके जन्म स्थान तथा परिवार की जगह काम करती है, दूर जा पड़ी की भाँति दुःखी थी।

उनकी प्रकृति प्रदत्त कला, उनकी स्वाभाविक शोभा, उनकी बुद्धि तत्परता ही उनकी कुलीनता होती है जो व्यक्तियो की कुछ लड़कियों को महान् स्त्रियों के समान बना देती है।

वह हमेशा दुःखी रहती थी वह सोचती कि उसका जीवन भोग-विलासों और ऐश इसरतों के लिये है। अपने कमरे गन्दी दीवालों, टूटी कुर्सी और मलिन वस्तुओ की गरीबी हालत से उसे दुःख होता था। उसकी जगह कोई अन्य स्त्री होती तो उन सब वस्तुओं की ओर न तो उसका ध्यान ही जाता और न वे वस्तुऐं उसे दुःखी अथवा क्रोधित ही करती। उस छोटे ब्रेटन, जिसने यह घर बनाया था, के ऊपर दृष्टि पड़ते ही उसके अन्दर दुःख भरे पश्चाताप और निराशा भरे स्वप्न जागृत हो उठते। उसने बिल्कुल विपरीत ही शानदार लटकनों में झाड़ फन्नूस, जिनमें बड़ी २ लेम्पे रोशनी के लिये लगीं हों, से युक्त कमरों के बारे में तथा नेकर पहिने दो चौकीदारों

के बारे मे जो, बडी-बडी आराम कुर्सियो पर हीटरों (अँगीठियो) से निकलने वाली गरम २ हवा के कारण उनींदे हो उठे हों, की कल्पना की थी। उसने बड़े २ ड्राइङ्ग रूमों की जिनमे सिल्क की बन्धनवारे लटक रही हों, अमूल्य फर्नीचर लगा हो, और छोटे २ फैशनेबुल सुगन्धित कमरों की कल्पना की थी, जो सायकाल ५ बजे अपने घनिष्ठ मित्रों से बातचीत करने के लिये हों, और मित्र भी कैसे ढूँढे और बनाये जांये जिनके लिये सारी स्त्रियाँ चाहती हों और ईर्ष्या करती हों।

जब वह भोजन करने के लिये गोलमेज के सम्मुख, जिस पर तीन दिन का इस्तैमाल किया हुआ मेजपोश बिछा हुआ होता, अपने पति के सामने जोटरीन (शोरबे के लिये ढकी हुई तश्तरी को उघाड़ता और प्रसन्न मुद्रा मे कहता—"ओह! कितनी सुन्दर है! मैने तो इससे अच्छी कहीं नही देखी—"तब वह चाँदी से चमकते हुए शानदार सहयोगों की, प्राचीन महान् व्यक्तियों के चित्रों, कल्पित जङ्गलों के मध्य थोड़ी सी चिड़ियों से चित्रित दीवालों की कल्पना करने लगती, वह शानदार तश्तरियो मे बढ़िया भोजन सामिग्री परोसे जाने की सोचती और स्फिन्क्स की भाँति मुस्कुराती हुई मछलियों का गुलाबी-गुलाबी गोश्त या मुर्गी के बच्चे का पंख खाती हुई उसकी बातें सुनती।

उसके पास कुछ भी नहीं था न तो फ्राकें थीं और न हीरे मोती। और वह केवल उन्हीं से प्रेम करती थी। उसे ऐसा लगता कि वह उन्हीं के लिये बनी है। प्रसन्न करने, स्मरण किये जाने, बुद्धिमान होने और पीछा किये जाने की उसकी बहुत अभिलाषा थी। उसकी एक धनी सहेली थी जो उसकी धार्मिक सम्प्रदाय की पाठिनी थी, जब से वह लौट आई थी तब से उसे इतना अधिक दु:ख महसूस हो रहा था कि वह उससे मिलना भी नही चाहती थी। और वह दु:ख, निराशा एव पाश्चाताप से दिन भर रोती रहती।

× × × ×

एक दिन सायंकाल उसका पति अपने हाथ में एक बड़ा सा लिफाफा लेकर प्रसन्नता से फूला हुआ घर लौटा।

वह बोला "यह देखो यह तुम्हारे लिये है।"

श्रीमान् एव श्रीमती लौसेल से प्रार्थना है कि १८ जनवरी को सायकाल मन्त्री-निवास पर पधारें। उनकी उपस्थिति से हमे बहुत प्रसन्नता होगी।

—मन्त्री शिक्षा विभाग और श्रीमती जार्ज रेम्पोन्यू।

पति की आशा के विपरीत वह प्रसन्न नही हुई और उसने निमन्त्रण पत्र को बडबड़ाते हुए घृणा से फेंक दिया .

"आप क्या सोचते है, मुझे इससे क्या मिल जायगा?"

"किन्तु मेरी प्रिये, मेरा विचार था कि तुम इसे पाकर प्रसन्न हो उठोगी। तुम कभी कहीं नहीं जाती हो, और यह अवसर है और एक बहुत ही सुन्दर अवसर! मुझे यह बड़ी कठिनाइयों से मिला है। उसे चाहता तो हर कोई है किन्तु यह मिलता किसी •किसी को ही है, और दफ्तर मे काम करने वालों को ऐसे अवसर अधिक नही मिलते हैं। वहाँ तुम्हे सारी अफसरी दुनियाँ मिलेगी।"

उसने उसकी ओर चिढकर देखा और अधीर हो बोली:

"आपका क्या विचार है, वहाँ जाने के लिये मुझे यही पहिनना पड़ेगा?" उसने यह नहीं सोचा था, वह हकला गया.

"क्यों, वह ड्रेस जो तुम पहिनती हो, जब हम थियेटर जाते हैं। मुझें वह बहुत अच्छी लगती है।"

अपनी पत्नी को रोती देखकर वह अप्रसन्न हो क्रोध में चुप हो गया। दो बडे २ अश्रु उसकी आँखो से निकल कर उसके अधरो के दोनो ओर जा गिरे। वह हकला कर बोला

"क्या बात है? क्या बात है?"

बहुत कोशिश करने के बाद वह अपने अश्रुओ को रोक पाई और अपने भीगे गालो को पोछती हई शान्त स्वर में बोली.

"कुछ भी नहीं, मेरे पास कोई ड्रेस नही है। अतः मैं इस आयो-जन मे •नहीं जा सकती। निमन्त्रण पत्र क। आप किसी अन्य साथी को, जिसकी पत्नी के पास मुझसे अधिक श्रृङ्गार हों, दे दीजिये।

उसके दिल को बहुत ठेस पहुची, किन्तु उसने उत्तर दिया

"मटील्डा जरा हम विचारे। एक बढ़िया पोशाक, जो साधारण ही हो और जो अन्य अवसरों पर भी काम आ जाय, कितने पैसो मे तैयार हो जायगी।"

वह गणना करती हुई कुछ क्षणों तक सोचती थी कि उसे उस कम खर्च क्लर्क से कितने रुपये मागने चाहिये जिससे न तो वह अस्वीकार ही कर बैठे और नही आश्चर्य से मुँह फाड़ दे।

अन्त में, उसने हिचकते २ कहा·

"ठीक २ तो नहीं कह सकती, हाँ मेरा अन्दाज है कि चार सौ फ्रेंक तो लग ही जाँयेगे।"

वह कुछ पीला पड गया क्योकि इतना ही धन तो वह आने वाली गर्मियो में नानटेरे के मैदानो में अपने मित्रो के साथ लार्क का शिकार खेलने के लिये एक शिकारी दल के साथ सम्मिलित होने को एक बन्दूक खरी-दने के वास्ते एकत्रित कर सका था। फिर भी उसने कहा.

"खैर, मैं उन्हे चार सौ फ्रेन्क दे दूँगा। किन्तु पोशाक अच्छी बन-वाने का प्रयत्न करना।"

❀ ❀ ❀

नृत्योत्सव का दिन पास आ गया और मेडम लौसेल उदास, परेशान और उत्सुक सी दिखाई दी। उसकी पोशाक लगभग तैयार सी ही हो गई थी।

एक दिन सायंकाल उसके पति ने कहा.

"तुम्हें क्या हो गया है? तुम्हारा दो तीन दिन से व्यवहार विचित्र विचित्र सा दिखाई दे रहा है।"

और उसने उत्तर दिया: "मुझे दुख है कि मेरे पास एक भी नग, पत्थर या पहिनने को आभूषण नही हैं। मै वहाँ बहुत ही निर्धन सी लगूँगी उससे तो मैं चाहूँगी कि वहाँ जाऊँ ही नहीं।"

इस मौसम में तो वह बहुत ही अच्छे लगते है। दस फ्रेन्कों में तुम्हे दो-तीन शानदार पुष्प मिल सकते है।"

वह इससे प्रभावित नहीं हुई। उसने उत्तर दिया—"नहीं, धनी स्त्रियों के मध्य इतने कुत्सित ढङ्ग से जाने से अधिक अपमानजनक और कुछ नही हो सकता।"

तब उसका पति चिल्लाया "कितने मूर्ख हैं हम लोग! जाओ और अपनी सहेली मेडम फोरेस्टियर से मिलो और उससे अपने लिये आभूषण उधार देने को कहो। उस काम को करने लायक तुम्हारी काफी जान पहिचान है।"

वह प्रसन्न हो चिल्लाई—"यह सही है!" वह बोली—"मैंने तो यह सोचा ही नहीं था।"

दूसरे दिन वह अपनी सहेली के घर गई और उसे अपनी परेशानी बतलाई। मेडम फोरेस्टियर अपने शीशे के किवाड़ो वाले कमरे में गई और एक बडा आभूषण पट्ट निकाला, लाई, उसे खोला और बोली—"चुन लो सखी।"

पहिले उसने कुछ बाजूबन्द देखे, तब मोतियो का एक हार, फिर सोने और नगीनो का बहुत बढ़िया जडाऊदार कामों का एक क्रास। उसने दर्पण के सामने उन्हे पहिन कर देखा, हिचकिचाई, किन्तु न तो उन्हे छोड़ने और न ले जाने का ही निश्चय न कर सकी। फिर वह बोली

"तुम्हारे पास और कुछ नही है?"

"क्यों, है आओ स्वय देख लो। मुझे नहीं मालूम तुम्हे कौन सा पसन्द आयेगा।"

एकाएक उसे एक काले मखमली बक्से में, हीरों का बहुत सुन्दर हार मिल गया और अत्यधिक चाहना से उसका हृदय धड़कने लगा। उन्हें उठाते ही उसके हाथ काँपे। उसने अपनी ड्रेस पर ही उन्हें अपनी गर्दन मे पहना और उन्हे पहिन कर आश्चर्य-चकित हो गई। तब उसने उत्सुकता से हिचकिचाते हुए पूछा

"क्या तुम मुझे यह, केवल यह, उधार दे सकोगी ?"

"क्यों नही, हाँ अवश्य।"

वह अपनी सहेली की गर्दन मे झूल गई और उसने भावावेश में उसका आलिङ्गन किया फिर अपने खजाने को लेकर चली गई।

× × ×

नृत्योत्सव का दिन आया। मेडम लौसेल को आश्चर्य जनक सफलता मिली। वह सर्वाधिक सुन्दर, शोभनीय, दयालु, प्रफुल्ल तथा आनन्द से भरी हुई थी। हर एक व्यक्ति ने उसे देखा, उसका नाम पूछा और उससे मिलना चाहा। मन्त्रि-मण्डल के सब सदस्यो ने उसके साथ साथ वाल्ज नृत्य करना चाहा। शिक्षा मन्त्री ने उसकी ओर थोडा सा ध्यान दिया था।

आनन्द से परिपूर्ण हो, भाव विभोर हो, उत्साह से अपने सौन्दर्य के विजयोन्माद में सुधबुध खो, एक प्रकार के सुख के बादलों में, जो उसके इस अतीव स्वागत इन प्रशसाओं, इन सब जाग्रत इच्छाओं और स्त्री के हृदय को सर्वाधिक प्रिय लगने वाली पूर्ण विजय से उमड़े थे, नाची।

सुबह चार बजे वह घर की ओर चली। उसका पति अन्य तीन व्यक्तियों के साथ, जिनकी पत्नियाँ नृत्य में बहुत अधिक आनन्द ले रही थीं, अर्द्ध रात्रि से ही एक छोटी सी बैठक में उनीदा सा सोया हुआ था।

उसने उसके नित्य प्रति के ओढ़ने वाले कम्बलो को, जिनकी दीनता नृत्य की शोभनीय पोशाक से टकरा गई थी, उसके कन्धो पर डाल दिया। उन कम्बलों को वे लोग लौट कर आते समय ओढ़ कर आने के लिये लाये थे। उसे यह बुरा लगा और वह अन्य स्त्रियो की दृष्टि बचाने के लिये, जो कि, फार के बढ़िया कपडे ओढ रही थीं, जल्दी करने लगी।

लौसेल ने उसे देखा—"ठहरो।" वह बोला—"तुम्हे बाहर निकलते ही ठण्ड लग जायगी। मैं एक रिक्शा पकड़ लाऊँ।" किन्तु वह न मानी

और जल्दी से सीढ़ियों में से उतर दी। गली में आने पर उन्हे कोई गाडी नहीं मिली, और वे गाड़ी ढूँढ़ने लगे—एक गाड़ीवान उन्हें काफी दूर दिखलाई दिया वे उसे आवाज देने लगे।

निराश हो ठण्ड से काँपते हुए वे सेन की तरफ चले। अन्त मे उन्हें घाट पर एक पुरानी खडखडिया, जो कि रात के समय पेरिस मे हर कोई देख सकता है मानो कि वे अपने दुर्भाग्य पर लज्जित हो दिन मे मुँह छिपाये पडी रहती हो, दिखलाई दी।

उसमें बैठ कर वे मारटायर स्ट्रीट में अपने घर तक गये और थके मादे अपने कमरे मे जा पहुँचे। उसको तो अब कोई काम नहीं था। और पति को सुबह दस बजे अपने दफ्तर में हाजिर होना था।

उसने दर्पण के सामने जाकर अपने कधों पर से अपनी महत्ता का अंतिम दर्शन करने के लिए कम्बल हटाये। एकाएक वह चीख पड़ी। उसकी गर्दन मे उसका हार नहीं था।

उसका पति, जो अपने कपडे उतार नहीं पाया था, बोला—"क्या बात है?"

"मै .. मैड.. म... मैडम फॉरेस्टियर का हार कहीं गिर गया।"

वह दुखी हो उठा "क्या? यह कैसे हो गया? यह नहीं हो सकता।"

और उन्होंने कपडो की तह मे ढूँढ़ा, दुपट्टे की तह मे देखा, जेबों को टटोला, सब जगह खोज डाला हार नहीं मिला।

उसने पूछा—"तुम्हें यह निश्चित मालूम है कि जब हम लोग घर से निकले तब हार तुम्हारे गले में ही था?"

"हाँ, जब हम बाहर आये तो बरोठे पर मुझे लगा कि वह मेरे गले मे था।"

"किन्तु यदि सड़क पर गिरा होता तो हमें उसके गिरने की आवाज सुनाई देती। यह गाडी मे होना चाहिये।"

"हाँ! यह सम्भव है। क्या आपने उसका नम्बर नोट किया था?"

"नहीं! और तुमने, क्या तुमने देखा था कितना था?"

"नहीं।"

उन्होने एक दूसरे की ओर बहुत ही लज्जित एवं दुखी हो देखा। अत मे लौसेल ने फिर से कपडे पहिने।

वह बोला—"जहाँ हम लोग पैदल चले थे वहाँ देखने जा रहा हूँ शायद मुझे मिल जाय।"

और वह चला गया। वह अपना शाम का पहिनने वाला गाउन ही पहिने हुए बिना किसी इच्छा और विचारो के एक कुर्सी पर टाँग फैलाये बैठी रही। उसमे इतनी शक्ति ही नहीं थी कि वह सो सके। लगभग ७ वजे उसका पति लौटा। उसे कुछ भी नहीं मिला।

वह पुलिस थाने गया, गाडियो के दफ्तरो मे गया, और उसने समाचार पत्रो मे इनाम का विज्ञापन दिया, उसने जो-जो आशाएँ दिलाने वाले काम थे सब किये।

दिन भर वह इस भयङ्कर विस्फोट के सम्मुख भयभीत अवस्था में प्रतीक्षा करती रही। शाम को लौसेल पीले और मुर्झाये चेहरे से घर लौटा, उसको कुछ भी नहीं मिला था।

"यह आवश्यक है।" वह बोला—"कि तुम्हारी सहेली को पत्र लिखना पड़ेगा कि हार तुमसे नृत्य में टूट गया है और तुम्हे उसकी मरम्मत करवानी है। इस बीच में हमें कुछ करने का समय मिल जायगा।"

जैसे २ वह लिखाता गया वह लिखती गई।

❀ ❀ ❀

सप्ताहके अंत तक उनकी सारी आशाओं पर पानी फिर गया। और लौसेल जिसकी उम्र पाँच वर्ष अधिक थी, बोला:

"हमें यह हार दूसरा बनवाने का प्रयत्न करना चाहिये।"

दूसरे दिन उन्होंने वह बक्स, जिसमे हार रखा रहता था, लिया और

एक जौहरी के पास, जिसका नाम उसके अन्दर खुदा हुआ था, लेकर गये। उसने अपनी किताबें देखीं और बोला .

"श्रीमतीजी यह हार मैंने नहीं बेचा था, मैंने तो केवल इसका शृङ्गार बक्स ही दिया था।"

फिर वे एक जौहरी से दूसरे जौहरी के पास उसी के समान हार खोजते हुए गये। वे अपने दुर्भाग्य को कोसते और दुखी तथा परेशान हो उस हार को ध्यान करते हुए कि वह कैसा बना हुआ था, जा रहे थे। पेलाइस रोयल की एक दूकान में उन्हें हीरों का एक हार बिल्कुल उसकी शक्ल से मिलता जुलता दिखलाई दिया। उसका मूल्य ४०००० फ्रेन्क था। उनको वह छत्तीस हजार में मिल जाता।

उन्होंने जौहरी से उसे तीन दिन तक किसी अन्य को न बेचने की प्रार्थना की और उन्होंने उससे यह समझौता कर लिया कि यदि खोया हुआ हार पुनः मिल जायेगा तो वह उसे ३४००० में फरवरी के अन्त तक लौटा जायेंगे।

लौसेल के पास उसके पिता के छोड़े हुए १८००० फ्रेन्क थे। बाकी उसने दूसरे लोगों से उधार ले लिये।

उसने उधार इस तरह से लिया कि एक से तो एक हजार लिये, दूसरे से पाँच सौ, पाँच लुइस इससे और तीन लुइस उससे। उसने प्रोमिजरी नोट लिखे, सत्यानाशी वायदे किये, उसने ब्याजड़ियों से रुपये लिये, उधार देने वालों की सब जातियों से उधार लिया। अपनी सारी आमदनी का निपटारा किया, वास्तव में, तो उसने यह बिना जाने हुए भी कि वह उनको चुका पायेगा भी कि नहीं अपने आपको संकट में डाल दिया। भविष्य की चिन्ताओं से लदा हुआ, दुर्भाग्य, जिससे वह घिरा हुआ था, और अपनी शारीरिक मानसिक व्यथाओं से व्यथित, दूकानदार के पट्टे पर छत्तीस हजार फ्रेन्क धर वह नया हार खरीदने गया।

जब मैडम लौसेल मैडम फोरेस्टियर के यहाँ हार वापिस देने गई तब दूसरी ने कुछ रुखाई से कहा .

"तुम्हे जल्दी लौटा देना चाहिये था, हो सकता था मुझे इसकी आवश्यकता पड जाती।"

उसने हार के बक्स को, जैसा कि उसकी सहेली के मन मे डर था कि वह खोलेगी, नहीं खोला। यदि वह पहिचान लेगी कि हार बदला हुआ है तो वह क्या सोचेगी? वह क्या उत्तर देगी? क्या वह उसे लुटेरा समझेगी?"

❀ ❀ ❀

मैडम लौसेल अब आवश्यकताओं की भयानक जिन्दगी को समझ गई। उसने अपना पार्ट, किसी भी तरह पूरी बहादुरी से अदा किया। इस भयानक ऋण को चुकाना आवश्यक था। वह उसे चुका देगी। उन्होंने नौकरानी निकाल दी, मकान बदल दिया, एक ढालू छत्त के नीचे के कुछ कमरे कम किराये पर ले लिये।

उसने घर गृहस्थी का सब काम सीख लिया, उसने रसोई घर का काम सीख लिया। वह तश्तरियाँ धोती और बर्तनो के पेदों को अपनी गुलाबी उङ्गलियों से खुरच २ कर साफ करती। वह सन के बने हुए मैले कपडों को धोती, चोली और तश्तरी के ऊपर ढकने वाले कपड़ो को धोती और वह एक डोरी पर सुखाने के लिये उन्हें लटकाती। नित्य सुबह वह बर्तन लेकर गली में जाती और कितनी ही जगह सांस लेने को रुकती हुई पानी भर कर लाती। और साग, गोश्त, रोटी और फल वालों के यहाँ हाथ में टोकरी लटकाये हुए जाती और मोल-तोल, भाव-ताव करके अपने धन का जो भी हिस्सा बच सके बचाती।

यह आवश्यक था कि हर माह कुछ हुण्डियाँ फिर से लिखें और इस भाँति दूसरो को चुकाने का अवकाश प्राप्त किया जाय।

पति शाम को थोडे से दूकानदारों की किताबो को क्रम से सजाने का कार्य किया करता, और रातो मे वह पाँच सोस प्रति पृष्ठ के हिसाब से नकल उतारा करता।

और इस भाँति दस वर्षों तक चलता रहा।

दस वर्षों के बाद उन्हे सब प्राप्त हो गया, सारा मूल मय

ब्याजडियों के ब्याज के और इसके अतिरिक्त कुछ ब्याज और मिल गया।

मैडम लौसेल अब वृद्धा लगने लगी। वह अब तगड़ी, मेहनती और गरीब गृहस्थ की बेडौल स्त्री हो गई थी। उसके बाल ठीक नहीं कढ़े होते, उसके कपडे गन्दे रहते, हाथ लाल रहते, वह जोर से ऊँचे स्वर में बोलती, और फर्शों को बडे २ घडों से पानी भर कर धोती। किन्तु कभी कभी, जब उसका पति दफ्तर में होता, वह खिडकी के सामने बैठती और उन दिनों की, उस शाम की दावत के बारे मे सोचती, और उस नृत्योत्सव के बारे में जहाँ वह इतनी अधिक सुन्दर लग रही थी और उसकी इतनी प्रशंसा की जा रही थी, सोचती।

यदि उसका हार नहीं खोता तो आज न जाने क्या होता? कौन जाने? कौन जाने? जीवन कितना एकाकी और परिवर्तन शील है। किस तरह से एक छोटी-सी वस्तु जीवन की रक्षा या विनाश कर सकती है।

× × × ×

एक इतवार को, जब वह चेम्पस् एलीसिस में सप्ताह भर की चिन्ताओं से मुक्ति पाने के लिये घूम रही थी कि एकाएक उसे एक स्त्री एक बच्चे के साथ जाती हुई दिखलाई दी। यह मैडम फोरेस्टियर थी। वह अभी युवा, सुन्दर एवं आकर्षक थी। मैडम लौसेल विचार में पड़ गई। क्या उसे उससे कह देना चाहिये? हाँ, अवश्य। और अब उसने सबका ऋण चुका दिया है, अब वह उससे कह देगी। क्यों नही कहेगी? अवश्य कहेगी।

वह उसके पास पहुँची—"गुडमार्निङ्ग जेनी।"

उसकी सहेली ने उसे नहीं पहिचाना और एक साधारण स्त्री से इतने प्रेम से अपना नाम लिया जाते सुन कर वह आश्चर्य चकित हो गई। वह हकलाते हुए बोली:

"किन्तु, मैडम—मै आपको नहीं जानती—आप गलती पर है।"

"नहीं, मैं मटील्डा लौसेल हूँ।"

उसकी सहेली आश्चर्य से चीख पड़ी—"ओह मेरी बेचारी मटील्डा ! तुम कितनी बदल गई हो।"

"हाँ तुमसे मिलने के बाद मेरे कुछ खराब और कुछ दुर्भाग्यपूर्ण दिन आ गये थे और यह सब तुम्हारे कारण।"

"मेरे कारण ? कैसे ?"

"तुम्हें याद है—वह हीरे का हार जो तुमने कमिश्नर के नृत्योत्सव में पहिनने को मुझे उधार दिया था ?"

"हाँ, हाँ, बहुत अच्छी तरह से।"

"हाँ वह मुझसे खो गया था।"

"यह कैसे, तुमने तो वह मुझे तब ही वापिस कर दिया था ?"

"मैने तुम्हें बिल्कुल उसी की भाँति दूसरा लौटाया था। और हम उस रुपये को दस वर्षों में चुका पाये हैं। तुम इसे भली भाँति समझ सकती हो कि हम लोगों के लिये कि जिनके पास कुछ नहीं था, कोई आसान बात नहीं थी। किन्तु अब सब हो गया और मैं पूर्ण सन्तुष्ट हूँ।"

मैडम फोरेस्टियर कुछ रुकी। वह बोली .

"तुम कहती हो कि तुमने मेरे हार की जगह हीरों का हार खरीद कर दिया था ?"

"हाँ ! तुम उसे तब नहीं पहिचान सकीं ? वे दोनों बिल्कुल एक से थे।"

और वह आनन्द से गर्व भरी मुस्कान से हँसी। मैडम फोरेस्टियर का हृदय काँप उठा और उत्तर देते समय उसने उसके दोनों हाथों को पकड़ लिया .

"ओह मेरी गरीब मटील्डा ! मेरे हीरे नकली थे। उनका मूल्य ५०० फ्रान्कों से अधिक नहीं था।"

क्रोचेटे

वे पुरानी स्मृतियाँ जो हमारे मस्तिष्क में बनी रहती हैं, जिनसे हम अपना पीछा नहीं छुडा सकते हैं, कितनी विचित्र होती हैं।

यह स्मृति इतनी पुरानी है कि मेरी समझ में नहीं आता कि न जाने यह मेरे मस्तिष्क में इतनी ठीक २ और स्पष्ट रूप से कैसे अटकी रह गई है। तब से मैंने इतनी निर्दय भयानक और प्रभावी वस्तुयें देखी, हैं कि मुझे आश्चर्य होता है कि माँ क्रोचेटे के चेहरे को, बिल्कुल वैसे ही चेहरे को जैसा कि बहुत वर्ष हुए अपने बचपन मे दस या बारह वर्ष की अवस्था में देखा था, अपने मस्तिष्क की आँखों के सामने से एक दिन को भी नहीं हटा पाया।

वह एक वृद्धा दर्जिन थी जो मेरे माता-पिता के घर कपडों की मरम्मत करने के लिये सप्ताह में एक दिन, हर बृहस्पतिवार को आया करती। मेरे पिता गाँव के उन घरो में से एक में रहते थे, जो झोंपड़ी कहलाते, जो पुरमे नुकीली छत्तों के होते हैं और जो तीन या चार खेतों से बने हुए होते हैं।

वह गाँव, बडा गाँव था। लगभग नगर के बाजार की तरह और लाल ईंटों की बनी चर्च से, जो वर्षों पुरानी होने के कारण अब काली पड़ चुकी थी, कोई लगभग १०० गज दूर था और उस चर्च के चारों ओर तक बसा हुआ था।

खैर, हर बृहस्पतिवार को माँ क्रोचेटे सुबह ६॥ से ७ बजे तक के बीच में आती, शीघ्र ही कपड़ा वाले कमरे में चली जाती और काम आरम्भ कर देती। वह एक लम्बी, पतली, दाढ़ी वाली या यह कहना चाहिये बालों वाली स्त्री थी, क्योंकि उसके सारे चेहरे पर गुच्छो में उगी हुई एक आश्चर्य जनक एवं अप्रत्याशित दाढ़ी थी। घुँघराले गुच्छो मे वह दाढ़ी ऐसी लगती मानो,

किसी पागल ने उस चेहरे पर – पेटीकोटों मे सिपाही के चेहरे पर उगा दी हो। बाल सब जगह थे, उसकी नाक पर, नाक के नीचे, नाक के चारों ओर, उसकी ठोढ़ी पर, गालों पर, और उसकी भौंहों पर जो कि बहुत ही मोटी घनी, लम्बी, भूरी थीं और लगता था कि गल्ती से मूछों का एक जोडा वहाँ लगा दिया गया हो।

वह लँगडाती थी, किन्तु अकसर जैसे लँगडे आदमी चलते हैं वैसे नहीं वरन् जैसे भेडें चलती हैं। जब वह अपना भारी भरकम शरीर अपनी मजबूत टाँग पर रखती तो ऐसा मालूम पडता कि वह किसी बहुत बड़ी लहर को पार करने की चेष्टा कर रही है, और तब वह एकाएक पैर रखती तो ऐसा लगता कि मानो वह जमीन के किसी गड्ढे में छिप जाना चाहती थी, और वह अपने आपको जमीन मे धँसा देती। उसकी चाल तूफान मे पडे हुए एक जहाज की याद दिलाती, और उसका सिर, जो हमेशा एक बडी सफेद टोपी से ढका रहता, जिसके फीते उसकी पीठ पर पडे रहते, ऐसा लगता मानों वह हर लंगडे कदम पर क्षितिज को उत्तर से दक्षिण और दक्षिण से उत्तर की ओर ले जाती।

मैं मां क्लोचेटे का बहुत आदर किया करता था। जैसे ही मैं उठता कपडों वाले कमरे में जाता, जहाँ वह अपने पैरों के नीचे आसन रखे काम करती रहती थी। मेरे पहुँचते ही वह आसन निकालती और उस पर बिठलाती ताकि छत्त के नीचे वाले उस ठण्डे कमरे मे मुझे ठण्ड न लग जाय।

"वह ठण्डी भूमि तुम्हारे सिर से खून खींचती है।" वह मुझसे कहती।

अपनी लम्बी टेढ़ी-मेढ़ी उङ्गलियों से कपड़ों की मरम्मत करते-करते वह मुझे कहानियाँ सुनाती, उसके चश्मे के पीछे उसकी आँखें, क्योंकि उम्र ने उसकी आँखें कमजोर कर दी थीं, मुझे बहुत बडी लगती करीब-करीब दूनी।

जो २ बातें उसने मुझसे कहीं और जिन बातों से मेरा हृदय भर आता था उन बातों से मैं जहाँ तक ध्यान कर सकता हूँ, मेरा विचार है कि

उस गरीब स्त्री का हृदय बहुत बड़ा था। उसने मुझसे कहा कि गाँव मे क्या हुआ था, किस तरह एक गाय अपने बाड़े में से भाग निकली और दूसरे दिन प्रोसपेर मेलेट की मिल के सामने उसके घूमते हुए पंखों की ओर देखती हुई मिली। या वह एक मुर्गी के अण्डों के बारे में कहती जो चर्च के घन्टाघर मे मिले और कोई यह न समझ पाया कि उस जीव ने उन्हे वहाँ ले जाकर क्यो रखा, या जीन पिला के कुत्ते की कहानी कहती, जो कि अपने मालिक की ब्रीचों को लाने के लिये गया था, जो कि मेह में भीग जाने के कारण बाहर सुखाने को लटका दिये गये थे और जिन्हें कोई आवारा चुराकर ले गया था। यह सीधी-साधी घटनाऐं वह मुझसे इस भाँति कहती कि वे मेरे मस्तिष्क में महान् एवं रहस्यमयी कविताओं व नाटको की भाँति जाकर बैठ गईं, और कवियों द्वारा बहुत सुन्दर ढङ्ग से लिखी हुई कहानियों में, जो मेरी माँ मुझे शाम को सुनाया करती इस किसान स्त्री की कहानियो के मुकाबले में न तो कोई रुचि ही होती, न पूर्ण ही और न उनमें दम ही होता।

खैर, एक बृहस्पति को जब मैंने सारी सुबह माँ क्रोचेटे के पास कहानियाँ सुनते २ ही व्यतीत कर दी तब दोपहर में अपने नौकर के सङ्ग खेत के पीछे वाले जङ्गल से कुछ फल बीन कर लाने के बाद मैंने उसके पास फिर ऊपर जाना चाहा। मुझे वह सब आज भी ऐसा याद है जैसे यह कल की ही घटना हो।

कपड़े वाले कमरे का द्वार खोलते ही मैंने देखा कि वृद्धा दर्जिन अपनी कुर्सी की बगल में हाथ फैलाये औंधे मुँह फर्श पर लेटी हुई थी। किन्तु अभी भी उसके एक हाथ में सुई थी और दूसरे में मेरी कमीज। उसकी एक टाँग, निस्सन्देह लम्बी वाली, जिस पर उसने नीला मोजा चढ़ाया हुआ था, उसकी कुर्सी के नीचे पड़ी हुई थी, और उसका चश्मा दीवाल के पास पड़ा था, जहाँ वह उसके पास में लुढ़क गया था।

मै चिल्लाता चीखता वहाँ से भाग खड़ा हुआ। सब लोग दौड़ते

हुए आये, और कुछ ही मिनटों में मुझे मालूम हो गया कि माँ क्लोचेटे मर चुकी थी।

मैं उस गहरी, दुखमयी एव भयानक संवेदना का, जिसने मेरे बाल्य हृदय को हिला दिया था, वर्णन नहीं कर सकता। मैं धीरे २ नीचे ड्राइङ्ग रूम में चला गया और एक अन्धेरे कोने में एक पुरानी कुर्सी पर जाकर घुटने टेक कर बैठ गया और रोने लगा। इसमे सन्देह नहीं कि मैं वहाँ बहुत देर तक रहा क्योंकि रात्रि हो गई थी। एकाएक कोई वहाँ मुझे देखे बिना ही लेम्प लेकर अन्दर आया, किसी तरह से मैंने अपने माता-पिता को एक डाक्टर से, जिसकी आवाज मैंने पहिचान ली थी, बातें करते हुए सुना।

वह उसी समय बुलाया गया था, वह दुर्घटना का कारण समझा रहा था, जिसमे से मेरी समझ में कुछ भी नही आया। तब वह बैठ गया और उसे एक गिलास शराब तथा बिस्कुटें दी गई।

वह बाते करता रहा, और उसने जो उस समय कहा वह मेरे मस्तिष्क में जब तक मैं मरूँगा नहीं सदा ही अङ्कित रहेगा! मेरा विचार है कि मै उसके कहे हुये एक-एक शब्द को दोहरा सकता हूँ।

"आह!" वह बोला—"बेचारी औरत! जिस दिन मैं यहाँ आया उस दिन उसने अपनी टाँग तोड ली थी। मैं उस दुरुह कार्य को करने के पश्चात हाथ भी नहीं धो पाया कि मुझे एक जगह का बुलावा आया, क्योंकि वह बहुत बड़ा केस था बहुत बुरा।

"वह १७ वर्ष की थी और सुन्दर! बहुत सुन्दर लड़की थी। क्या कोई उस पर रंचक भी विश्वास करेगा? मैंने उसकी कहानी पहले कभी नहीं कही, दर असल में तो मेरे और एक अन्य व्यक्ति के अतिरिक्त, जो इस गाँव मे अब रहता भी नहीं है, कोई कभी जानता भी नहीं था। अब वह मर गई है मैं रहस्य खोल सकता हूँ।

"एक नवयुवक असिस्टेन्ट मास्टर गाँव में रहने को आया ही था, वह चेहरे मोहरे में अच्छा था और एक सैनिक की भाँति लगता था। सारी

लड़कियाँ उसके पीछे भागती थीं, किन्तु वह उनसे घृणा करता था। इसके अतिरिक्त वह अपने अफसर स्कूल मास्टर वृद्ध अबू से, जो कि स्वयं ही पहिले कभी-कभी गलत मार्ग पर चला करता था, बहुत डरता था।

"वृद्ध अबू ने सुन्दरी होर्टेन्स को जो यहाँ अभी २ मर कर चुकी है और जिसका नाम बाद में क्रोचेटे रख दिया गया था, पहिले ही से नियुक्त कर रखा था। असिस्टेन्ट मास्टर ने उस सुन्दरी नवयुवती को पसन्द किया, जो इस घृणा करने वाले विजयी के छाटने पर निस्सन्देह प्रभावित हुई, किसी भी तरह वह उसके प्रेम में पड़ गई। और वह उसे अपनी मुलाकात के लिये रात को, जब वह अपनी दिन भर की सिलाई समाप्त कर चुकी, तब स्कूल के पीछे भुस की कोठरी मे फुसला कर ले जाने में सफल हो गया।

"उसने घर जाने का बहाना किया, किन्तु अबू के कमरे से निकल कर नीचे उतरने के बजाय वह ऊपर चढ़ गई और भुस में छिप गई और अपने प्रेमी की प्रतीक्षा करने लगी। वह शीघ्र उसके पास पहुँच गया और प्रेम भरी बातें करने ही वाला था कि भुस की कोठरी का द्वार खुला और वह स्कूल मास्टर दिखलाई पड़ा। और बोला—सिजिसबर्ट, तुम यहाँ क्या कर रहे हो? यह सोचते ही कि अब वह पकड़ा जायेगा युवक स्कूल मास्टर की बुद्धि भ्रमी गई और उसने मूर्खता पूर्ण उत्तर दिया—"मि० अबू! मैं यहाँ घास के गट्ठरों पर थोड़ी सी देर आराम करने के लिये आया हूँ।"

"भुस की कोठरी बहुत बड़ी थी, और बिल्कुल अँधेरी थी। सिजिसबर्ट ने डरी हुई लड़की को दूसरी ओर ढकेल दिया और बोला—"वहाँ जाकर छिप जाओ। मैं अपनी नौकरी खो बैठूँगा, अत: तुम जाकर छिप जाओ।"

"जब स्कूल मास्टर ने फुसफुसाहट सुनी, वह कहने लगा—"क्यों तुम वहाँ अकेले नहीं हो।"

"हाँ मि० अबू, मैं ही हूँ!"

"किन्तु नहीं, तुम ही नहीं हो, क्योंकि तुम बातें कर रहे हो।"

"मि० अबू, मैं सौगन्ध खाता हू कि मैं ही हूँ।"

"अभी मालूम किये लेता हूं!" वृद्ध ने उत्तर दिया और द्वार पर ताला लगाकर वह रोशनी लाने चला गया।

तब वह नवयुवक, जो ऐसा कायर था जैसे कभी २ अब भी मिल जाते है, अपनी बुद्धि खो बैठा और दुबारा एकाएक क्रोध से बोल उठा, "इस तरह से छिप जाओ कि वह तुम्हें खोज न सके। तुम मुझे मेरी सारी जिन्दगी के लिये दाने २ से मोहताज कर दोगी, तुम मेरा सारा भविष्य राख मे मिलाकर रख दोगी! जाओ छिप लो जाओ।"

"उन्हे ताले में ताली घुमाने की आवाज सुनाई दी और होर्टेन्स सडक की ओर खुलने वाली खिडकी की ओर दौडी और जल्दी से खोल निश्चयात्मक धीमे स्वर मे बोली—"जब वह चला जाय तब तुम मुझे आकर यहाँ से उठा लेना", और वह कूद पडी।

"वृद्ध अबू को वहाँ कोई न मिला, और बहुत आश्चर्य से वह नीचे उतर गया। पन्द्रह मिनट बाद मि० सिबिसबर्ट मेरे पास आये और उन्होंने इस घटना को सुनाया। लडकी दीवाल के पाँयतों की ओर पड़ी हुई थी और उठ नहीं सकती थी क्योंकि वह दूसरी मंज़िल से गिरी थी, और मैं उसके साथ उसे लाने गया। उस समय मेह बहुत जोर से पड रहा था और मैं उस अभागी को अपने साथ घर लाया, उसका दाँया पैर तीन जगह से टूट गया था और हड्डी मांस से बाहर निकल आई थी। उसने कोई शिकायत नहीं की, उसने बहुत प्रशंसात्मक आत्म-सन्तोष से केवल यह कहा—"मुझे दण्ड मिल गया है, काफी दण्ड मिल गया है।"

"मैंने उसकी सहायता की और उसकी सहेलियों से एक बनी बनाई कहानी सुनाई कि मेरे दरवाजे के सामने एक गाडी भागी चली जा रही थी उससे वह टकरा कर उसे लङ्गडी कर चली गई। उन्होने इस बात पर विश्वास कर लिया और पूरे एक महीने तक पुलिस व्यर्थ ही इस दुर्घटना के लिये दोषी व्यक्ति को ढूँढ़ती रही।

"बस यह ही बात है! मैं अब कहता हूँ यह स्त्री बड़ी बहादुर थी और इसके अन्दर जो ऐतिहासिक महान् पुरुषों का सा माद्दा था।"

"उसका बस यही प्रेम सम्बन्ध था और वह क्वारी ही मर गई। वह धर्म पर प्राण न्यौछावर करने वाली, महान् आत्मा तथा उत्कृष्टता से तल्लीन रहने वाली स्त्री थी। और यदि मै उसकी प्रशसा नही करता होता तो मैं यह कहानी जो मैने आपसे कहीं और जो उसके जीते जी मैने किसी से नही कही थी, कभी नही कहता, आप समझे, क्यो।"

डाक्टर रुका; माँ चीख पड़ी और पिताजी ने कुछ शब्द कहे जिन्हे मैं समझ न सका था, तब वे लोग कमरे से बाहर निकले, और जब मुझे बाहर किसी चीज के सीढ़ियो पर ठोकने का सा पैरो के चलने का एक विचित्र ही शोर सुनाई दिया, तब मैं कुर्सी पर घुटनो के ही बल बैठा हुआ रोता रहा।

वे लोग क्रोचेटे के शव को ले जा रहे थे।

खतरे की घन्टी

छोटी मरगोइनेम डी रेनेडोन अभी तक अपने सुगन्धित एवं अँधेरे कमरे में सो रही थी।

अपने मुलायम नीचे विस्तर पर मुलायम केम्बिक की चद्दरों में जो फीते की तरह बढ़िया और आलिंगन की भांति मुलायम थीं, वह अकेली और प्रसन्न हो रही थी। उसकी नींद तलाक दी गई स्त्रियों की नींद की भाँति मस्त और गहरी थी।

छोटे नीले ड्राइंग रूम के शोर-गुल की आवाज से वह जाग गई और उसने अपनी सहेली बेरोनेस डी आनोरिये की आवाज पहिचान ली, बेरोनेस उसकी नोकरानी से झगड़ रही थी, क्योंकि नोकरानी उसे मारगोइनेस के कमरे में नहीं जाने दे रही थी। इसलिये मारगोइनेस उठी, द्वार खोला, और पर्दे को हटाकर सिर बाहर निकाला, और कुछ नहीं केवल अपना सुन्दर मुख जो बालों के बादलों में छिपा हुआ था।

"तुम्हे क्या हो गया है जो तुम इतनी जल्दी आ गई?" उसने पूछा। 'अभी तो नौ भी नहीं बजे थे।"

छोटी बेरोनेस, जो बहुत पीली, घबड़ाई सी और बीमार सी थी बोली "मुझे तुमसे कह देना चाहिये। मेरे साथ कुछ बहुत भयानक घटना हो गई है।*

"अन्दर आओ, मेरी प्रिये।"

वह अन्दर आई, उन्होंने एक दूसरे का आलिंगन किया, और छोटी मारगोइनेस अपने विस्तर मे उठ कर बैठ गई, और उसकी नौकरानी ने खिड़कियाँ खोल दी जिससे हवा और प्रकाश अन्दर आ सके। जब वह कमरे से बाहर चली गई तब मैडम डी रेनेडोन ने कहना आरम्भ किया, "अब बताओ क्या बात है?"

मैडम डी ग्राञ्जेरी, उन सुन्दर चमकीले आसूओं को बहाती हुई, जो कि स्त्रियों को और भी अधिक आकर्षक बना देते हैं, रोने लगी। उसके आँसू निकलते रहे, उसने उन्हे पोछा नही जिससे कि उसकी आँखें लाल न हो जाये वह रोती २ बोली "मेरी प्रिये जो भी मेरे ऊपर बीती है वह विद्रोहात्मक है, विद्रोहात्मक है। मैं सारी रात एक मिनट को भी नहीं सोई, सुना तुमने एक मिनट भी नही। यहाँ, देखो मेरे हृदय पर हाथ रख कर देखो, कि यह कैसा धड़क रहा है।"

और अपनी सहेली का हाथ लेकर अपनी उस छाती पर रख लिया जो स्त्री के हृदय के ऊपर का कठोर एव गोल २ आवरण होता है, पुरुष जिसे देख कर सन्तुष्ट हो जाता है और जो पुरुष को उसके अन्दर झांकने से रोकता है। किन्तु उसका हृदय वास्तव मे बडी तेजी से धड़क रहा था।

वह कहने लगी।

"यह घटना मेरे साथ कल, मैं ठीक नहीं कह सकती, चार या साढ़े चार बजे दिन मे घटी थी।

तुमने मेरे कमरो को तो देखा ही है और तुम्हे यह मालूम है कि मेरे छोटे ड्राइङ्ग रूम की खिड़की, जहाँ मै अक्सर बैठी रहती हूं, रयू सेन्ट लजारे की ओर खुलती है, और तुम यह भी जानती हो कि मुझे खिड़की पर बैठ कर आने जाने वाले लोगों की ओर देखने का पागलपन सवार रहता है। रेलवे स्टेशन का सामीप्य बिल्कुल ठीक वैसा ही जैसा मैं चाहती हूँ, बहुत सुन्दर आकर्षक एवं हलचल युक्त है। सो कल मैं, एक नीची कुर्सी पर, जिसे मैंने खिडकी के पास रख रखा है, बैठी हुई थी, खिड़की खुली हुई थी और मैं केवल ताजी हवा मे साँस ले रही थी सोच कुछ नहीं रही थी। तुम्हे याद होगा कल कितना सुन्दर दिन था।

"एकाएक, मैंने एक स्त्री लाल कपडे पहिने हुए—सामने ही एक खिड़की मे बैठी देखी। मैं नारंगी रङ्ग की ड्रेस पहिने हुए थी—जानती हो न मुझे वह बहुत प्रिय है। मैं उस नवागन्तुका स्त्री को, जो वहाँ एक महीने से ही आई थी नहीं जानती थी क्योंकि एक महीने से ही बरसात हो रही है, मैंने

उसे अभी देखा भी नही था, किन्तु उसे देखते ही मैं शीघ्र पहिचान गई कि वह लडकी अच्छी नहीं थी। पहिले तो मुझे इस बात से दुख हुआ तथा धक्का पहुँचा कि वह भी ऐसी खिडकी पर बैठे जैसी खिडकी पर मै थी, और तब धीरे २ मुझे इसकी निगरानी करने मे आनन्द आने लगा। उसने अपनी कुहनियाँ खिड़की की चौखट पर टेक रखी थीं, और आदमियों की ओर देखती रही थी तथा सब ही या लगभग सब ही आदमी उसकी ओर देख रहे थे। कोई भी कह सकता था कि वे लोग उसके घर के पास आते ही किसी तरीके से उसकी उपस्थिति को समझ लेते कि वे उसको सूंघ लेते। जैसे कुत्ते खेलो मे सूंघते हैं, क्योंकि वे एकाएक ही सिर उठाते और उससे बड़ी तेजी से दृष्टि विनिमय करते एक भांति का विश्व बन्धुओं का सा दृष्टि विनिमय। उसकी दृष्टि कहती। क्या तुम आवोगे ? उनकी दृष्टि उत्तर देती, 'मेरे पास समय नहीं है', या फिर 'और किसी दिन', या फिर. 'मेरे पास एक भी पाई नही है" या फिर 'छिप जा डाइन !'

"तुम कल्पना नहीं कर सकती कि उसे ऐसा काम करते देखना, यद्यपि यह उसका नित्यप्रति का कार्य है' कितना हास्यास्पद था !

"कभी २ वह खिड़की को एकाएक बन्द कर देती। और मै देखती कि कोई पुरुष अन्दर गया। उसने उसे एक मछुए की तरह जो कांटे से मछली को पकड लेता है, पकडा था। तब मैं अपनी घड़ी की ओर देखती तो मालुम पडता कि कोई भी बारह या बीस मिनट से अधिक नहीं रुकता। अन्त मे उसने मेरे अन्दर भी पाप प्रवृत्ति जाग्रत कर दी। मकडी ! और तब जानवर भी बहुत बद सूरत है।

मैंने मन ही मन पूछा 'वह अपने आपको इतनी शीघ्र इतनी भली भांति और इतनी पूर्णता से कैसे समझा देती है ? क्या वह अपने सिर के इंगति को। या अपने हाथों के हावभावों को अपनी दृष्टियो में शामिल कर देती है ? और मैंने उसकी गतिविधियो को देखने के लिये अपनी दूरबीन ली। ओह ! वे बहुत सरल थे· सबसे पहिले एक नजर, तब मुस्कुराहट, तब सिर से एक बेमालूम संकेत जिसका अर्थ होता. 'क्या तुम ऊपर आ रहे हो ?'

किन्तु वह इतना बेमालूम, इतना हलका, इतना गुप्त होता है कि उसकी भांति दक्षता प्राप्त करने में बहुत ट्रिकों की आवश्यकता है। और मैंने मन ही मन कहा · मुझे आश्चर्य होगा यदि मै वह तनिक सा हाव, नीचे से ऊपर, जो कि साथ ही साथ दृढ़ एवं सुन्दर भी था, उसी की भाति जैसे वह करती है कर सकती।' क्योंकि उसका हाव-भाव बहुत ही सुन्दर था।

"मै अन्दर गई और दर्पण के सम्मुख जाकर वैसे ही करके देखा, मैने उससे भी बहुत अच्छे ढङ्ग से किया, बहुत ही सुन्दर ! मै मुग्ध हो गई, और खिडकी पर अपनी जगह वापिस लौट आई।

"वह बेचारी गरीब लड़की, फिर किसी को नहीं फास सकी। वास्तव मे वह अभागिन थी। वास्तव में किसी का ऐसे रोटी कमाना कितना भयङ्कर है, भयङ्कर और कभी २ आनन्दप्रद भी है, क्योंकि इन लोगो में से जो सड़कों पर मिल जाते हैं कोई २ बहुत अच्छा निकल आता है।

"इसके बाद वे सब सड़क पर मेरी ही ओर आने लगे, और उसकी ओर कोई नहीं गया, सूर्य लौट चुका था। वे एक के बाद एक करके युवक, वृद्ध, गोरे, भूरे, सुन्दर लोग आये। मैं किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश मे थी जो बहुत सुन्दर हो, मेरे या तुम्हारे पति से कहीं सुन्दर—मेरा अर्थ तुम्हारे पहिले पति से है क्योकि अब तो तुम्हे तलाक मिल चुका है। अब तुम चुन सकती हो।

"मैने मन ही मन कहा · यदि मैं उन्हें संकेत करती हूँ, तो क्या वे मुझ सम्मान प्राप्त स्त्री की बात समझ सकेंगे ? और मेरे अन्दर उन्हे संकेत करने की एक प्रबल अभिलाषा जागृत हो उठी। मेरी इच्छा एक भयङ्कर इच्छा थी; तुम जानती हो, ऐसी इच्छा थी जिसे कि कोई रोक नहीं पाता है ! मुझे कभी २ वैसी ही इच्छा हो जाती थी। क्या तुम्हारे विचार में यह बाते मूर्खतापूर्ण नहीं हैं ? मेरा विश्वास है कि हम स्त्रियों में बन्दर की आत्मा होती है। जब हम अपने पतियो से प्रेम करती हैं तब हम शादी के बाद पहिले महीनों में तो उनकी नकल किया करती हैं और तब अपने प्रेमियो की, अपनी सहेलियों की और यदि वे अच्छे होते हैं तो अपने धार्मिक पुरो-

हितो की । हम उनकी विचार प्रणाली, भाषण के ढङ्ग, उनके शब्दो, उनके हाव-भावो हर एक वस्तु को ग्रहण करती हैं । यह बहुत मूर्खता है ।

"कैसे भी, जहाँ तक मेरा प्रश्न है, जब मुझे किसी काम के करने का लालच होता है तो मैं तो उसे हमेशा ही कर डालती हूँ, और इसलिये मैंने अपने मन में सोचा 'मै केवल देखने भर के लिये एक व्यक्ति के साथ करूँगी । मेरे साथ क्या हो सकता है ? कुछ भी नही । हम एक मुस्कान का आदान प्रदान करेंगे, और बस, और मैं निश्चय ही उसके लिये अस्वीकार कर दूँगी ।'

"अत. मैं अपना चुनाव करने लगी, मेरी इच्छा थी कोई सुन्दर, बहुत सुन्दर व्यक्ति हो ! और एकाएक एक लम्बा, गौर वर्ण और बहुत ही सुन्दर पुरुष अकेला आता हुआ दिखलाई दिया । मैने उसकी ओर देखा, उसने मेरी ओर, मैं मुस्कुराई, वह मुस्कुराया, ओह ! मैंने बहुत ही बेमालूम संकेत किया, उसने सिर हिलाकर स्वीकृति जताई, और मेरी प्यारी वह आ भी गया । वह मकान के अन्दर बड़े द्वार पर आ गया ।

"तुम कल्पना नहीं कर सकतीं कि मेरे मस्तिष्क में तब क्या २ बातें आईं ! मैंने सोचा कि मैं पागल हो जाऊँगी । ओह ! मैं कितनी भयभीत हो गई थी ! जरा सोचो, वह नौकरो से कह देगा ! जोसेफ से, जो मेरे पति का कार्य करता है कह देगा ! जोसेफ निश्चित ही यह समझेगा कि मैं उस व्यक्ति को बहुत दिनों से जानती हूँ ।

"बतलाओ, मैं क्या करती ? और वह क्षण भर मे ही घन्टी बजा देगा, बतलाओ मै क्या करती ? मैने सोचा मैं जाकर उससे मिलूँ और कह दूं कि उसने गलती की है उससे चले जाने को कह दू । उसे एक स्त्री, बेचारी अबला स्त्री पर दया आ जायेगी । अत. मैं द्वार की तरफ भागी गई और किवाड खोले । तब ही देखा कि वह घन्टी बजाने जा ही रहा था, और मैं हक-लाते हुए, बिल्कुल मूर्खता से, उससे बोली "मिस्टर चले जाइये, चले जाइये, आपने गलती की है, भयानक गलती की है, मैने आपको अपना एक मित्र

समझा था जिससे आप बिल्कुल हूबहू मिलते हैं। मिस्टर मुझ पर दया कीजिये।"

"किन्तु प्रिये, वह केवल हँसता रहा, और बोला 'गुड मार्निङ्ग प्रिये, तुम्हे विश्वास होना चाहिये कि मैं तुम्हारी इस छोटी सी कहानी की बाबत भली भांति जानता हूँ। तुम विवाहित हो इसलिये बीस की जगह चालीस फ्रैंक चाहती हो, और वह तुम्हे मिल जायेंगे। अत रास्ता दिखलाओ।'

"और मुझे धक्का देकर वह अन्दर आ गया और उसने किवाड़ बन्द कर दिये, और जैसे मैं भयभीत सी उसके सामने खडी रही उसने मेरा चुम्बन लिया, मेरी कमर में हाथ डालकर मुझे मेरे ड्राइंगरूम की ओर, जिसका द्वार अभी तक खुला पडा था, वापिस जाने को बाध्य कर दिया। और तब वह हर एक वस्तु को ऐसे देखने लगा जैसे नीलाम करने वाले देखा करते हैं। उसने कहा: 'जोव की सौगन्ध! तुम्हारे कमरे मे यह बहुत ही अच्छा है, बहुत ही अच्छा। मालुम होता है तुम्हारा भाग्य बहुत खोटा हो गया है जो तुम्हें यह खिडकी का व्यापार करना पडा है।"

"तब मै उससे फिर प्रार्थना करने लगी। 'ओह! मिस्टर चले जाइये, कृपाकर चले जाइये! मेरे पति के आने का समय हो गया है वह आते ही होगे। मैं सौगन्ध खाती हूँ कि आपने गलती की है।' किन्तु उसने बिल्कुल शान्ति से उत्तर दिया आओ, मेरी रानी, मैं इन सब बत्तमीजियों को बहुत कर चुका हूँ, अगर तुम्हारा पति आ जायगा तो मैं उसे पाँच फ्रैन्क दे दूंगा जिससे वह सामने एक रेस्टोरेन्ट में जाकर शराब पी आये।' और तब राउल के फोटो को चिमनी पर लगा देखकर मुझसे बोला:—क्या यह तुम्हारे-तुम्हारे पति है?"

"हाँ यही हैं।"

"वह एक अच्छे स्वाभाव का व्यक्ति मालुम पड़ता है और यह कौन है? तुम्हारी सहेली?"

"मेरी प्यारी, वह मेरा नृत्य की पोशाक पहिने हुए वाला फोटो था। मुझे होश नहीं था कि मै क्या कह रही थी।" मैंने हकलाते हुए कहा: "हाँ, यह मेरी एक सहेली का है।"

"वह बहुत अच्छी है, तुम्हे उससे मुझे परिचित कराना पड़ेगा।"

"तब ही घड़ी ने पाँच बजाये। राउल नित्य प्रति साढ़े पाँच बजे घर आते हैं। सोचो यदि वह उसके जाने से पहिले आ जाते, कल्पना करो तब क्या होता! तब–तब मेरा मस्तिष्क बिल्कुल बेकार हो गया-बिल्कुल-मैंने सोचा-कि-कि-इस-आ-आदमी-से-छुटकारा पाने के लिये-सबसे अच्छी बात यह होगी-जितनी जल्दी हो सके-जितनी जल्दी खतम हो जाय-तुम समझती हो!"

× × × ×

छोटी मारगोइनेस डीरेनेडोन हँसने लगी थी, अपना सिर तकिये में छिपाकर पागलों की तरह हँसने लगी थी जिससे उसका सारा बिस्तर हिल उठा, और जब वह थोड़ी सी शान्त हुई तब उसने पूछा:

"और-और-क्या वह सुन्दर था?"

"हाँ।"

"और फिर भी तुम्हे शिकायत है?"

"किन्तु-किन्तु तुमने यह नहीं सोचा, मेरी प्रिये, कि वह कल फिर आयेगा–उसी समय-और मैं–मैं बुरी तरह से भयभीत हूँ-तुम नहीं जानतीं वह कितना हठी और जिद्दी है। मैं क्या करूँ-बतलाओ-मैं क्या करूँ?"

छोटी मारगोइनेस बिस्तर पर उठ कर बैठी हो गई और सोचने लगी, फिर एकाएक वह बोली. "उसको गिरफ्तार करवा दो!"

बेरोनेस उसकी ओर शान्ति से देखती रही फिर हकलाती हुई बोली "तुम क्या कहती हो? तुम क्या सोच रही हो? उसको गिरफ्तार करवा दूँ? किस चक्कर में?"

"यह तो बहुत सरल है। पुलिस थाने जाओ और कहो कि एक पुरुष तीन महीने से तुम्हारा पीछा कर रहा है, कि कल वह तुम्हारे कमरे में आने की धृष्टता कर चुका है, कि कल उसने तुमसे दोबारा मिलने की तुम्हें धमकी दी है, और तुम कानून की सुरक्षा माँगो, और वे तुमको दो पुलिस अफसर देंगे जो उसे गिरफ्तार कर लेंगे।"

"किन्तु मेरी सखी, मानलो वह कहता है.... ."

"यदि तुम उनसे अपनी कहानी बुद्धिमत्ता से कहोगी तो, वे उसकी बात पर विश्वास नहीं करेंगे। किन्तु वे तुम्हारा, जो कि अप्राप्य एवं सामाजिक स्त्री हो, विश्वास करेंगे।"

"ओह ! यह करने की मैं कभी हिम्मत नहीं करूँगी।"

"मेरी सखी, तुम्हें हिम्मत करनी चाहिये नहीं तो तुम पतित हो जाओगी।"

"किन्तु यह तो सोचो कि वह गिरफ्तार होते ही मेरा अपमान कर देगा।"

"बहुत अच्छा, तुम्हारे गवाह होंगे और उसको सजा हो जायगी।"

"सजा क्या ?"

"हानि पूरा करने की, ऐसे मामलों में इन्सान को बिलकुल बेरहम होना चाहिये।"

"आह ! हानियों की कहती हो-एक चीज है जो मुझे बहुत परेशान करती है-सचमुच बहुत ज्यादा। वह मेरे लिये बीस २ फ्रेन्क के दो सिक्के मेरे मेजपोश पर रख गया है।"

"बीस २ फ्रैन्क के दो सिक्के ?"

"हाँ।"

"ज्यादा नहीं ?"

"नहीं।"

"यह बहुत थोड़ा है। मेरे आत्म सम्मान को यह बहुत ठेस पहुँचाती। खैर ?"

"खैर, मुझे इस रुपये का क्या करना चाहिये ?"

छोटी मारगोइनेस कुछ क्षणों तक तो हिचकिचाई और फिर बड़े गम्भीर स्वर में बोली:

"मेरी सखी ! तुम्हें-तुम्हें अपने पति को इस धन की कोई छोटी सी सौगात भेंट कर देनी चाहिये। बस यही एक अच्छी बात रहेगी !"

जिस सौन्दर्य से कोई लाभ नहीं
(बेकार सौन्दर्य)

१

दो काले सुन्दर घोड़ों से युक्त एक मनोहर बग्घी विशाल प्रासाद के सम्मुख आकर रुकी। जून के दूसरे पक्ष का दिन था, समय था सायकाल साढ़े पाँच बजे का और इस समय उस विशाल प्रासाद के विशाल सहन मे चमकती हुई, उष्ण सूर्य किरणें फैल रही थी। काउन्टेस डीमास्केरेट का पति घर आ रहा था, उसे बग्घी के द्वार पर देखते ही वह नीचे उतर आई। पति अपनी पत्नी के चेहरे को देख कुछ क्षण रुका और पीला पड गया। अपने अण्डाकार चेहरे, चमकदार हाथी दांत के से अपने रङ्ग, अपनी बडी २ भूरी आखों, और अपने काले २ केशों के कारण बहुत सुन्दर, दयावान एवं प्रतिष्ठित महिला सी दिखलाई देती थी, और ऐसा भाव प्रदर्शित करते हुए कि मानो उसने उसे देखा भी नहीं हो, उसकी ओर देखे बिना ही, एक विशेष उच्च कुलीनता की भावना से वह अपनी गाड़ी में जा बैठी, जिससे कि वह भयानक ईर्षा जिसे वह इतने लम्बे काल से भुला चुका था फिर से उसके हृदय मे उदय हो गई। वह उसके पास जाकर बोला' 'तुम सैर करने जा रही हो ?"

घृणा से उसने केवल यही उत्तर दिया "आप देख रहे हैं, मैं जा रही हूँ।"

"बोईस डी बोलोन में ?"

"शायद।"

"क्या तुम्हारे साथ मैं चल सकता हूँ ?"

"गाड़ी आप ही की है।"

उसके स्वर के ढंग से जिसमें उसे उत्तर दिये गये थे वह प्रभावित हुए बिना ही अन्दर आकर अपनी पत्नी की बगल में बैठते हुए बोला: "बोइस-

डी बोलोन।" नौकर उछलकर कोचवान की बगल में बैठ गया और घोड़े जब तक सडक पर रहे अपने सिरों को हिलाते रहे और जमीन को टापो से खरोचते रहे। पति पत्नी आपस में बातचीतें किये बिना ही पास २ बैठे रहे। वह सोच रहा था कि वार्तालाप कैसे प्रारम्भ किया जाय किन्तु उसकी कठोर एवं जिद्दी आकृति के कारण उसे आरम्भ करने की हिम्मत नहीं पडती। अन्त में, उसने चालाकी से, सयोग से जैसा कि था, किसी भी तरह से काउन्टेस के दस्ताने में पडे हुए हाथ को अपने हाथ से छू लिया, किन्तु उसने इतनी घृणा के हाव भाव से अपनी बांह को अलग हटा लिया कि वह, अपने स्वच्छन्द एवं अधिकृत स्वभाव के विपरीत, विचारो में ही निमग्न रहा। अन्त में बोला. "गैबरीले!"

"क्या काम है?"

"मेरा विचार है कि तुम देवी की भाँति लग रही हो।"

उसने उत्तर नहीं दिया, किन्तु गाडी में एक उत्तेजित रानी की भाँति लेटी रही। उस समय वे लोग अकिडी ट्रिओम्पे की ओर चेम्पस-एलीसेज के ऊपर थे। लम्बे प्रासाद के अन्त में उस विशाल समाधि की गुम्बदें गगन को चूम रही थीं, और सूर्य उस पर आकाश से अग्निकणो को फेंकता हुआ अस्त होता सा दिखलाई पडता था।

सूर्य रश्मियो से चमकती हुई, चमकते हुए लेम्पों से युक्त गाडियों की पंक्तियाँ, एक नगर की ओर दूसरी जंगल की ओर जा रही थीं और काउन्ट डी मस्करेट ने कहना आरम्भ किया "मेरी प्रिय गैबरीले!"

तब अधिक सहन न कर सकने के कारण वह क्रोधयुक्त वाणी मे बोली: "ओह! कृपया मुझे शान्ति से मत रहने दीजिये! अब मैं अपनी गाडी में बैठने को भी स्वतन्त्र नहीं हूँ।" उसने उसकी बात को जैसे सुना ही न हो ऐसा दर्शाते हुए कहा "जितनी सुन्दर तुम आज लग रही हो उतनी सुन्दर तो कभी नही लगीं।"

निश्चय ही उसका धैर्य टूट चुका था, और वह क्रोध को न दबा पाती हुई बोली. "आप उसे देख कर गलत अनुमान लगा रहे हैं, क्योंकि मैं सौगन्ध

खाकर कहती हूँ कि मैं अब आपके साथ उस भाँति का कोई भी कार्य कभी भी नहीं करूगी।" वह अपनी बुद्धि खो बैठा, भड़क गया और उसकी पाशविक प्रवृत्तियों ने उस पर विजय प्राप्त कर ली, वह चिल्लाया "उससे तुम्हारा क्या मतलब है ?" वह इस भाँति चिल्लाया जिससे कि वह एक सहृदय व्यक्ति के बजाय निर्दयी स्वामी सा प्रतीत हुआ। किन्तु उसने धीमे स्वर से, जिससे कि गाड़ी के पहिओं के कर्णभेदी स्वर में उसके नौकर उसकी आवाज को न सुन सके, उत्तर दिया

"आह ! मेरा उससे क्या मतलब ? मेरा उससे क्या मतलब था ? अब मैं आपको फिर से पहिचान गई ! क्या आप मुझसे सब बातें कहलाना चाहते हैं ?"

"हाँ।"

"सब बातें, वे सब बातें जो कि मेरे हृदय में हैं-और तब से जब से कि मैं आपकी स्वार्थपरता का शिकार बनी हूँ ?"

वह क्रोध, एव आश्चर्य से लाल हो गया और अपने बन्द दांतों के बीच से घुड़का. "हाँ, मुझसे सब बातें कह दो।" वह एक लम्बा, लम्बी लाल दाढ़ी युक्त, सुन्दर, उच्चकुलीन, वृषमस्कन्धीय एव सांसारिक पुरुष था जिसने कि ससार में रहकर एक पति तथा बच्चों के पिता की भाँति अपना कार्य पूर्ण सफलता पूर्वक किया था और उसकी पत्नी ने चलने के बाद अब पहिली बार उसकी ओर मुड़कर उसके मुँह की ओर पूरी दृष्टि से देखा. "आह ! आप कुछ अरुचिकर बातें सुनेगें किन्तु आपको यह जान लेना चाहिये कि मुझे आज किसी का डर नहीं और आपका तो और भी नहीं और मैं सब बातों के लिये तैयार हूँ।"

वह उसकी आखों को भी देख रहा था और गुस्से से तो काँप ही रहा था: तब वह धीमे स्वर में बोला "तुम पागल हो।"

"नहीं, किन्तु मैं मातृत्व के घृणित दण्ड को, जिससे तुम मुझे ग्यारह वर्षों से दण्डित करते चले आये हो, अब और अधिक नहीं सहन करूँगी। मैं दुनियाँ में सांसारिक स्त्री की तरह रहना चाहती हूँ, क्योंकि मुझे भी अन्य स्त्रियों की भाँति ऐसे रहने का अधिकार है।"

वह एकाएक पीला पड गया और अटककर बोला: "मेरी समझ मे तुम्हारी बात नहीं आई।"

"ओह ! हाँ; आप खूब अच्छी तरह समझते है। अभी तीन महीने पहिले मेरे बच्चा हुआ है, और जैसा आपने अभी मुझे सीढियो से उतरते देखकर सोचा कि अब समय आ गया है जब मैं फिर से गर्भवती हो जाऊँ, आपके सारे प्रयत्नों के होते हुए भी मैं अभी भी बहुत सुन्दर हूँ और आप मेरी सुन्दरता को नष्ट नहीं कर सकते।"

"किन्तु तुम मूर्खता की बातें कर रही हो !"

"नहीं, मैं नहीं कर रही, मैं ३० वर्ष की हूँ और सात बच्चों की माँ हूँ और हमारे विवाह को ग्यारह वर्ष हो गये और आप चाहते हैं कि यह अभी दस वर्षों तक और इसी भाँति चलता रहे जिसके पश्चात ईर्ष्यित होकर आप छोड़ देगें।"

उसने उसकी बाँह पकडी और दबाते हुए कहा "मैं तुम्हें इस तरह की बातें अधिक नहीं करने दूगाँ।"

"और मै यह बातें तब तक करती रहूँगी, जब तक कि जो कुछ भी मुझे कहना हैं वह सब नहीं कह लेती, और यदि आप मुझे रोकने की चेष्टा करेंगे तो मैं अपना स्वर ऊँचाकर दूँगी जिससे कि ये दोनों नौकर जो बाक्स पर बैठे हुए हैं सुन लें। मैंने आपको अपने साथ ले चलना इस ही लिये स्वीकार किया, क्योंकि मेरे पास ये गवाह हैं, जो आपको बाध्य कर देगें कि आप मेरी बात सुनें। मेरे हृदय में आपके प्रति घृणा सदा से ही है और वह मैंने आपसे कभी छिपाई भी नहीं क्योंकि, श्रीमानजी, मैं कभी झूठ नहीं बोली। आपने मेरी इच्छा के विरुद्ध मुझसे विवाह किया, आपने मेरे अभिभावकों को, जो मजबूर हालत में थे, आपको सौंपने को दबाव डाला क्योंकि आप धनी थे और उन्होने मेरे अश्रुओं की भी परवाह न कर आपसे मेरा विवाह कर दिया।"

"इस तरह आपने मुझे खरीद लिया, और जैसे ही मैं आपके वश में आ गई, जैसे ही मैं आपकी साथिन बन गई और आपसे अपने आपको

समबद्ध करने को, आपकी घृणित एवं धमकी भरी गतिविधियाँ भूलने को मैं इसलिये तैयार हुई कि जिससे मैं केवल इतना ही ध्यान रखूँ कि मुझे आपकी सेवाकारिणी पत्नी बनना है और आपसे इतना प्रेम करना है जितना कि अधिकाधिक मैं आपसे कर सकती हूँ, आप ईर्ष्यित हो गए और एक गुप्तचर जैसी–नीच और कुत्सित ईर्ष्या से आप ईर्ष्यित हुए जैसी कि किसी व्यक्ति ने पहिले कभी नहीं देखी और जो आपके लिये भी उतनी हीन एवं अपमानजनक थी जितनी कि मेरे लिये। मेरे विवाह को आठ महीने भी नहीं हुए आपने मेरे ऊपर विश्वासघात का सन्देह किया, यह आपने और मुझसे कहा भी था। कितना अपमान है! और क्योंकि आप मुझे सुन्दर होने से, व्यक्तियों को प्रसन्न करने से, ड्राँइगरूमों मे बुलाए जाने से, और समाचार पत्रों में भी, पेरिस की सर्वाधिक सुन्दरियों में एक कहलाने से नहीं रोक सके, आपने मेरे प्रशंसकों को मुझसे दूर रखने के वे सब प्रयत्न, जो आपके मस्तिष्क में आ सकते थे, किये फिर आपके हृदय में मुझे मातृत्व की स्थायी हालत मे, जब तक कि मैं हर एक पुरुष से घृणा न करने लगूँ, डाले रखने की घृणित अभिलाषा जाग्रत हुई। ओह! अस्वीकार मत करो! पहिले तो मैं कुछ दिनों तक समझ ही नहीं पाई किन्तु फिर मैं उसे पहिचान गई। आपने अपनी बहिन के सामने भी इसकी बडाई मारी थी। उसने मुझसे कह दिया था क्योंकि वह मुझे बहुत चाहती है और आपके जंगली और असभ्य व्यवहार से वह बहुत घृणा करती है।

"आह! अपने झगड़े स्मरण कीजिये, किवाड बन्द हो गये, ताले ठोंक दिये गये! ग्यारह वर्षों तक आपने मुझे एक बैठी हुई घोडी की तरह जिन्दगी बिताने को लाचार किया। तब जब मै गर्भवती हुई आपको मुझसे घृणा हो गई और मैंने महीनो आपकी कोई बात नहीं देखी। आपने मुझे खेतों और दलदलों से घिरे पारिवारिक भवन में गाँव मे जापे के लिये भेज दिया। और उसके पश्चात जब मैं फिर से स्वस्थ, सुन्दर, अनश्वर और प्रेरक लगने लगी और प्रशंसकों से सदा घिरी रहने तथा आशा करने लगी कि मैं भी एक धनी नवयुवती, जो समाज से सम्बन्ध रखती है, की भाँति थोडी बहुत रह सकूँगी आपके अन्दर फिर से ईर्ष्या जाग्रत हुई, और आपने

इसी कुख्यात एव घृणित इच्छा से जो इस समय मेरे पास बैठे हुए आपके अन्दर जाग्रत हो रही है, मेरे साथ दुर्व्यवहार करना प्रारम्भ व दिया। और आपकी यह इच्छा मुझे अपनी ही बनाकर रखने के लिये नहीं है वरन् मुझे असुन्दर बनाने के लिये है, नहीं तो मैं कभी आपकी ही होकर रहना अस्वीकार नहीं करती।

"इसके अतिरिक्त वह घृणित एव गुप्त परिस्थिति, जिसे मैं बहुत दिनों से मनन कर रही थी। किन्तु आपके विचारों और कार्यों की गतिविधियो पर दृष्टि रखने के कारण बहुत उत्सुक हो गई थी। आप अपने बच्चों के उन सब विश्वासो को प्राप्त कर जो उन्होंने आपको दिलाये थे, के प्रेम में लीन हो गये जब कि गर्भ में मैंने उनको रखा था। और अपने अभद्रोचित भयो के होते हुए भी जो कि मुझे माँ देखने के आपके आनन्द मेंक्षणभर के लिये दब जाते थे, आपके हृदय में मेरे प्रति प्रेम उत्पन्न हुआ।

"ओह! कितनी बार मैंने आपके अन्दर वह हर्ष देखा था। मैंने उसे आपके नेत्रों में देखा था और पहिचान गई थी। आप अपने बच्चों से प्रेम इसलिये करते थे कि वे आपकी जीतें थीं न कि इसलिये कि वे आपके ही रक्त के थे वे मेरी धरोहर मुझे न दी और वे बच्चे मेरे ऊपर, मेरे यौवन प, मेरे सौन्दर्य पर, मेरे आकर्षणों पर सदभावनाओं पर जो मेरे प्रति प्रदर्शित की गई थी, और जो लोग मुझे चारों ओर से घेरे रहते थे उनपर विजय स्वरूप प्राप्त किये गये थे। और आपको उन पर गर्व है, आप उनसे परेड कराते हैं, आप उनको अपनी बग्घी में सैर कराने बोइस डी बोलोन में ले जाते हैं, और आप उनको मोन्टमोरेन्सी में गधे की सवारी देते हैं। आप उनको मेटिनी शो में ले जाते हैं ताकि आपको उनके मध्य में देखकर लोग कहें: 'कितना दयालु पिता है।' और यह दोहराया जा सके।"

उसने उसकी कलाई को जगली असभ्यता से पकड लिया, और इतनी जोर से दाबा कि यद्यपि दर्द के मारे उसके मुंह से चीख सी निकल गई किन्तु वह चुप हो गई। तब वह उससे फुसफुसाते हुए बोला—

"सुनती हो, मैं अपने बच्चो का प्रेम करता हूँ? तुम्हारी अभी कही गईं बातें एक माँ के लिये कलङ्क हैं। किन्तु तुम मेरी हो, मैं स्वामी हूँ—

तुम्हारा स्वामी। मैं-तुमसे जब और जो चाहूँ वसूल कर सकता है और कानून मेरे साथ है।"

वह अपने मजबूत पंजे से उसकी उँगलियों को मसोस डालना चाहता था और वह दर्द से व्याकुल हो उन्हें उससे, जो उन्हे कुचले डाल रहा था, बचाने का व्यर्थ प्रयत्न कर रही थी, कष्ट के कारण वह रो उठी और उसके नेत्रों में अश्रु आ गए। "देखा, मैं तुम्हारा स्वामी हूँ और तुमसे कही अधिक शक्तिशाली भी।" वह बोला ! और जब उसने अपनी पकड़ कुछ ढीली की तब वह उससे पूछने लगी . "क्या आप मुझे एक धार्मिक स्त्री मानते हैं ?"

वह आश्चर्य चकित हो गया और अटक कर बोला : "हाँ !"

"आपके विचार से यदि मै भगवान ईसामसीह के सामने जाकर किसी वस्तु की सचाई के लिये कसम खाऊँ तो क्या वह झूँठ हो सकती है ?"

"नहीं।"

"क्या आप मेरे साथ किसी गिरिजाघर तक चलेंगे ?"

"किसलिये ?"

"वहीं मालूम हो जायगा, चलेंगे ?"

"यदि तुम्हारी बिल्कुल यही इच्छा हो तो, हाँ।"

उसने अपना स्वर उच्च करके कहा "फिलिप !" और कोचवान अपने घोड़ों से नेत्र हटाए बिना ही थोड़ा सा झुकते ही ऐसा लगा मानों कि उसने केवल अपने कान ही अपने स्वामिनी की ओर कर दिये हों, जिसने कहा . फिलिप। डू रोल की ओर चलो।" वह बग्घी जो अब तक बोइस-डी-बोलोन के द्वार तक पहुँच ही गई थी, पेरिस को लौट दी।

रास्ते में पति और पत्नि में एक भी बात नहीं हुई। गाड़ी के गिरिजाघर पर रुकते ही मैडम डीमास्करेट उतरी और और उसके अन्दर चली। काउन्ट उसके कुछ कदम पीछे चल दिया। कोरस के पर्दे तक वह कहीं रुके बिना बराबर चलती रही और एक कुर्सी पर घुटने के बल बैठते हुए उसने अपना मुँह अपने हाथों में छिपा लिया। वह बहुत देर तक प्रार्थना करती रही और वह उसके पीछे खड़ा हुआ था—उसे दिखलाई दे रहा था कि वह रो रही थी। वह मन ही मन रो रही थी, जैसे कि बहुधा स्त्रियाँ जब बहुत

असह्य कष्ट में होती हैं रोया करती हैं। उसके तन में एक प्रकार की सिहरन थी जो उसके थोड़े से अश्रुओं में, जो कि उसके हाथों से छिपे हुए थे, परिवर्तित हो गई।

किन्तु काउन्ट डी मास्करेट ने सोचा कि देर बहुत हो गई थी अत उसने उसके कन्धों को अपनी उंगलियों से छुआ। स्पर्श ने उसे फिर से वास्तविकता में ला पटका और मानो वह जल गई हो, उसने उठते हुए सीधे उसके नेत्रों में देखा।

"मुझे आपसे यही कहना है। मुझे यह डर नहीं कि आप मेरा क्या करेंगे? आप यदि चाहे तो मुझे मार डाले। मै भगवान के सामने जो मेरी बात सुन रहा है कसम खाती हूँ कि इन बच्चों में से एक आपका नहीं है। आपके पुरुषोचित धृष्ट अत्याचारों, आपके द्वारा बार-बार बच्चे जनने के दण्ड की अवस्था मे पटके जाने का प्रतिशोध लेने का यही एक मात्र उपाय मेरे पास था। यह आप कभी नहीं जान पायेंगे कि मेरा प्रेमी कौन था? आप हर एक पर सन्देह कर सकते हैं किन्तु आप उसे खोज नहीं सकते। मैंने उसे अपने आपको बिना प्रेम, बिना आनन्द के केवल आपको धोखा देने के लिये उसको समर्पण कर दिया और उसने मुझे माँ बना दिया। उसका पुत्र कौन सा है? वह भी-आपको कभी नहीं मालूम हो सकेगा। मेरे सात पुत्र हैं, कोशिश कर खोज निकालिये! मै उसे बाद में कहना चाहती थी क्योकि कोई स्त्री किसी पुरुष को धोखा देकर तब तक पूरा बदला नहीं निकाल सकती जब तक कि वह मनुष्य स्वयं जान ले कि उसके साथ विश्वासघात हुआ है। आप मुझे यह कहलाने के लिये यहाँ घसींट लाए और मैंने कह दिया।"

वह गिरजा घर से शीघ्रता से निकल कर खुले द्वार की ओर चल दी। उसे आशा थी कि उसका पति जिसे उसने चुनौती दी थी अपनी तेज चाल से उसके पीछे २ आ रहा होगा और आते ही अपने शक्तिशाली घूंसे को उसके सिर पर मार उसे धराशायी कर देगा किन्तु उसे कुछ सुनाई नहीं दिया और वह अपनी गाडी तक पहुँच गई। एक ही उछाल में क्रोध से भरी हुई और भय से निराश वह उछल कर गाड़ी में बैठ गई। उसने अपने कोचवान से कहा, "घर।" और घोड़ो ने गति भरनी आरम्भ कर दी।

२

एक मृत्यु दण्ड का अपराधी जिस भांति अपनी अन्तिम घड़ी की प्रतीक्षा करता है उसी भाति काउन्टेस डी मास्करेट अपने कमरे में बैठी हुई डिनर के समय की प्रतीक्षा कर रही थी। अब वह क्या करेगा ? क्या वह घर आ गया ? स्वच्छन्द अत्याचारी, क्रोधी और हर भाति की हिंसा के लिये सनद्ध रहने वाला वह क्या सोच रहा है और उसने क्या करने का अपने मन में निर्णय किया है ? घर मे किसी प्रकार की आवाज नहीं थी और वह हर क्षण घड़ी की ओर देखती रहती। उसकी नौकरानी आयी और उसको सायकाल की पोशाक पहिना कर कमरे से बाहर चली गई। आठ बज गये। लगभग एक ही क्षण मे द्वार पर दो थपकी पड़ी और नौकर आकर कह गया कि भोजन तैयार था।

"क्या काउन्ट अन्दर आ गए ?"

"जी, मैडम ला कमरे से, वह डाइनिंग रूम (भोजन के कमरे) में हैं।"

एक क्षण को उसे लगा कि उसे अपना रिवोल्वर जो वह कुछ सप्ताह पहिले अपने हृदय की दुखान्तक घटनाओं को जिनका आभास उसे पहिले से ही रहा था, देख कर बाजार से खरीद लाई थी साथ ले चलना चाहिये। किन्तु यह ध्यान आते ही कि वहाँ सब ही बच्चे होंगे वह अपने साथ सूंघने की शीशी के अतिरिक्त और कुछ न ले गई। वह अपनी कुर्सी से कुछ नाटकीय ढङ्ग से उठा। उन्होने एक दूसरे को किंचित मात्र ही झुक कर अभिवादन किया और बैठ गये। उसके दाई ओर उसके तीन लड़के अपने मास्टर पादरी मार्टिन के साथ बैठे हुए थे, और तीनों लड़कियाँ उनकी अंग्रेज गर्वनेस मिस स्मिथ के साथ उसकी बाँई ओर थी। सबसे छोटा बच्चा जो अभी तीन महीने ही का था अपनी धाय के पास ऊपर वाले कमरे में ही था।

जैसा कि अतिथियो के न होने पर सदा ही होता था पादरी ने धन्यवाद दिया। यदि अतिथि उपस्थित होते तो बच्चे डिनर मे नही आते। उसके पश्चात् भोजन प्रारम्भ हो गया। काउन्टेस जो अभी तक अपनी भावनाओं को आँक

नही सकी थी, सिर झुकाये बैठी थी। काउन्ट ने अपनी अप्रसन्न एव अस्थिर दृष्टि से जो एक से दूसरे की ओर और दूसरे से तीसरे की ओर जा रही थी, अपने तीनो लडकियों की जाच की। एकाएक उसने अपना शराब का गिलास फेंक दिया-गिलास टूट गया और शराब मेज पोश कर फैल गई। उससे हुए जरा से शोर पर काउन्टेस अपनी कुर्सी से उठ खडी हुई और पहिली बार उन दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा। तब विचित्र कारण एवं हर दृष्टि में उत्तेजना होते हुए भी उन्होने पिस्तौल की गोलियो के समान तेज चलने वाली अपनी दृष्टियो का आदान प्रदान एक क्षण के भी लिये बन्द नहीं किया।

पादरी यह तो समझ गया कि दाल में कुछ काला अवश्य था। किन्तु यह न समझ पाया कि वह क्या था। उसने बातचीतें आरम्भ करने के लिये कितने ही विषय उठाये, किन्तु उसके व्यर्थ प्रयत्न न तो किसी विचार को ही उत्पन्न कर सके और न एक शब्द भी किसी के मुँह से निकलवासके। काउन्टेस ने सांसारिक स्त्रियोचित प्रवृत्ति से उसको दो तीन बार उत्तर देना चाहा किन्तु व्यर्थ। अपने मस्तिष्क की परेशानी मे उसे शब्द ही न मिल पाये और उसकी अपनी ही आवाज ने, इतने बडे कमरे में जहाँ कि केवल चाकू काँटे और तश्तरियों की आवाजों के अतिरिक्त और कोई आवाज नहीं आ रही थी, उसे भयभीत कर दिया!

एकाएक, उसके पति ने आगे झुक कर उससे कहा "यहाँ अपने बच्चों के मध्य क्या तुम कसम खा कर कह सकती हो कि जो कुछ भी तुमनें अभी मुझे कहा था वह सत्य था?

घृणा ने जो उसकी नस २ मे भर हुई थी, एकाएक उसे उत्तेजित कर दिया और उस प्रश्न का उसी दृढता से जिससे उसने उसकी दृष्टियों का उत्तर दिया था उत्तर देते हुए उसने दोनो हाथ उठाये, दांये से अपने लड़को को और बांये से अपनी लड़कियों को इंगित करते हुए बिना किसी हिचकिचाहट के दृढ़ एवं सयत स्वर में बोली: "मैं अपने बच्चों की कसम खाकर कहती हूँ कि मैने जो आपसे कहा था वह सब सत्य था।"

अपनी तौलिया को क्रोध से मेज पर पटक कर वह मुड़ा और अपनी कुर्सी को दीवाल की ओर फेंक एक शब्द भी कहे बिना वह चला गया। और

काउन्टेन्टस ने मानो पहिली विजय के पश्चात् एक दीर्घ निश्वास छोड़ते हुए शान्त स्वर मे कहा "मेरे बच्चो तुम्हे उन शब्दों पर जो तुम्हारे पिता ने अभी कहे थे ध्यान नही देना चाहिये, थोडी देर पहिले वह बहुत अधिक चिंतित थे, किन्तु थोड़े ही दिनो वे फिर ठीक हो जायगे।"

तब वह पादरी और मिस स्मिथ से बाते करने लगी। उसने अपने सब बच्चों से वैसे ही मीठे और प्रिय ढङ्ग से बातें की जैसी बातों से बच्चे बिगड जाते हैं और अपना हृदय खोलकर रख देते है।

डिनर समाप्त होने पर वह अपने सब छोटे २ बच्चों के साथ ड्राइगरूम में चली गई। उसने बड़े २ बच्चों को बातों में लगा लिया और उनके सोने के समय उसने उन्हें बडी देर तक प्यार किया और तब उनको छोड़ अपने कमरे में अकेली चली गई।

उसने उसकी प्रतीक्षा की, क्योंकि उसे अपने इस विचार मे कोई संदेह नही था कि वह अवश्य आयेगा। तब क्योकि उसके बच्चे उसके साथ नहीं थे उसने अपने मन ही मन जैसे कि उसने सासारिक स्त्री होने के नाते अपने जीवन की रक्षा की थी वैसे ही अपने तन की रक्षा करने का निश्चय किया। उसने अपनी जेब मे भरी हुई एक छोटी सी पिस्तोल, जो वह थोडे ही दिनों पहिले खरीदकर लाई थी, रख ली। घन्टे बीतते गये, उनके बजने की आवाज घर में आकर शान्त हो जाती। केवल सड़कों पर से गाड़ियाँ आ जा रही थीं, किन्तु उनकी आवाज बद और पर्देदार खिडकियो में से बहुत ही कम पहुँच पाती। वह उत्सुक और किंकर्तव्यविमूढ़ प्रतीक्षा करती रही। उसे कोई भय नहीं था, हर बात के लिये तैयार थी, और लगभग विजयिनी भी हो चुकी थी क्योंकि उसे उसको जीवन भर परेशान करते रहने का मार्ग मिल गया था।

किन्तु उसकीखिड़की के सूराख में से पर्दों की तह पर प्रभात की किरण आई किन्तु उसका पति न आया तब उसे इस पर विश्वास हुआ कि वह नही आयेगा और साथ ही साथ आश्चर्य भी हुआ। फिर अपनी और भी अधिक सुरक्षा के लिये उसने द्वार पर ताला लगा दिया और अर्गली खिसकाई फिर वह अपने बिस्तरे पर जाकर विचारों मे निमग्न नेत्र खोले सब बात को पूरी

तरह समझते हुए लेटी रही। वह यह न अन्दाज लगा सकी कि वह क्या करने जा रहा था।

उसकी नौकरानी उसके लिये चाय लेकर आई और तभी उसने उसके पति का एक पत्र दिया। पति ने लिखा था कि वह एक लम्बी यात्रा करने जा रहा था, साथ ही साथ पत्र के छोर पर यह भी लिखा था कि उसका वकील उसे जितना भी धन वह अपने खर्चे के लिये चाहेगी दे देगा।

३

रोबर्ट दी डेविल के दो अंको के मध्य ओपरा में यह हो रहा था। दूकानो मे मनुष्य अपने हैट लगाये खडे हुए थे। उनके वेस्टकोटों का गला काफी नीचा खुला हुआ था जिनमें से उनकी सफेद कमीजें काफी दिखलाई दे रही थी, जिनमे से उनके सोने और अमूल्य नगो के बटन चमक रहे थे। वे लोग नीची ड्रेसे पहिने हुए, हीरे और मोती से लदी हुई स्त्रियों की ओर देख रहे थे। स्त्रियाँ उस प्रकाश प्रदीप्त उष्ण प्रकोष्ठ में, जहाँ निरीक्षित होने के लिये उनके मुखों का सौन्दर्य और उनके कन्धों का गोरापन संगीत एवं लोगो की आवाज में खिल रहा था, फूलो की भाँति फल-फूल रहा था।

दो मित्र उस सगीत वाद्य की ओर पीठ किये हुए इस सौन्दर्य में भाग लेने वालों की ओर देख रहे थे। नगो, ऐश इशरतों, आडम्बरों असली या नकली आकर्षणो की एक प्रदर्शिनी सी उस ग्रान्ड थियेटर के चारों ओर लग रही थी। उनमे से एक रोगर डी सलनिस ने अपने मित्र बेर्नार्ड ग्रान्डिन से कहाः "देखो काउन्टेस डी मस्करेट अभी भी कितनी सुन्दर है।"

तब बडे वाले ने उसके उत्तर में अपने ओपर-काँच से पीछे वाले क्लास में एक लम्बी स्त्री की ओर देखा, जो अभी बिल्कुल नवयुवती सी लगती थी और जिसका आश्चर्यजनक सौन्दर्य ओपरा हाउस के हर कोने में खड़े हुए पुरुष के नेत्रों को अपनी ओर बरबस आकर्षित करता था। उसके रंग के कुछ पीलेपन ने उसके रंग को हाथी दांत के समान कर दिया था। वह एक मूर्ति के समान लग रही थी और उसके काले २ बालों पर एक हीरे का टुकड़ा एक तारे की भांति जगमगा रहा था।

उसकी ओर थोडी देर देखते रहने के पश्चात बर्नार्ड ग्रान्डिन ने परिहास के स्वर में दृढ़ विश्वास से कहा "तुम भले ही उसे सुन्दर कहो!"

"तुम उसकी अवस्था कितनी समझते हो?"

"थोडी देर रुको, मैं अभी बिल्कुल ठीक २ बतलाये देता हूँ। मै जब वह बच्ची ही थी तब ही से उसे जानता हूँ। मैने ही उसको समाज में सबसे पहिले, जब वह बिलकुल लडकी ही थी, लाकर उपस्थित किया था। उसकी उम्र है छत्तीस वर्ष।"

"असम्भव!"

"मैं ठीक कह रहा हूँ।"

"वह पच्चीस वर्ष की सी लगती है।"

"उसके सात बच्चे है।"

"यह विश्वास करने योग्य बात नहीं।"

"और सबसे बड़ी बात क्या है, वह सातो जीवित हैं क्योंकि वह बहुत अच्छी जननी है। कभी २ मैं उसके घर जो बहुत ही शान्त एव आनन्दप्रद है, जाता हूँ और वह परिवार की सत्यता को संसार के बीच उपस्थित करती है।"

"कैसे, बहुत अद्भुत! और क्या उसके बारे में कोई शिकायत नहीं हुई?"

"कभी नहीं।"

"किन्तु उसके पति की बावत तुम्हारा क्या विचार है? वह बडा सनकी है, नहीं है?"

"हाँ-भी और नहीं-भी। बहुत सम्भव है कि उनके बीच कभी कोई घरेलू नाटक जिसकी हर कोई शंका करता है, हो गया हो। वह नाटक क्या है इसको तो कोई नहीं जान पाया किन्तु उसका अनुमान हर कोई लगा लेता है।"

"वह क्या है?"

"मुझे उस विषय में कुछ भी नहीं मालूम। एक आदर्श पति बनने के पश्चात अब मस्करेट बहुत ही त्वर जीवन बिताता है। जब तक वह अच्छा

पति रहा तब तक उसका स्वभाव क्रोधी रहा और वह बहुत ही शीघ्र झगड़ा कर डालता था, किन्तु जबसे वह वर्तमान निराश जीवन बिताने लगा है तब से वह बिल्कुल बदल गया है, किन्तु कोई भी उसे देखकर यह अनुमान लगा सकता है कि वह कष्ट मे है, कहीं दाल में कोई काला है क्योंकि वह बहुत वृद्ध लगने लगा है।"

फिर वहाँ दोनों मित्र कुछ मिनटो तक गुप्त, अभेद्य कठिनाइयों पर, जो भिन्न स्वभाव या शायद शारीरिक स्वभावगत घृणाओं के कारण, जो पहिले मालूम न की जा सकी थीं, परिवारों में कठिनाइयाँ उत्पन्न कर देतो है, बात-चीतें करते रहे। तब रोगर डी सलर्निस जो अपने ओपरा के कांच से मेडम डी मस्करेट की ओर अभी तक देख रहा था बोला

"यह अविश्वसनीय है कि यह स्त्री सात बच्चों की माँ है।"

'हाँ, ग्यारह वर्षों में, उसके पश्चात् जब वह तीस वर्ष की थी, तब उसने अपने उन उत्पादनों को, स्वागतों के सुन्दर काल में पदार्पण करने के लिये, जिसका कि कभी अन्त होता नहीं दिखलाई देता, बन्द कर दिया।"

"बेचारी स्त्री!"

"तुम उस पर तरस क्यों दिखला रहे हो?"

"क्यों? आह! मेरे प्रिय मित्र, जरा सोचो तो! एक ऐसी स्त्री के लिये मातृत्व के ग्यारह वर्ष! कैसे नर्क के समान होते हैं! उसका सारा यौवन, उसका सारा सौन्दर्य, सफलता की प्रत्येक आशा, सुखद जीवन की प्रत्येक कवित्वमय कल्पना, उस बार२ उत्पादन के घृणित विचार के लिये, जो एक साधारण स्त्री को तो बच्चे पैदा करने की मशीन ही बना डालता है, स्वाहा कर दिये गये।"

"तुम क्या कर सकते हो? यह तो केवल प्रकृति है!"

"हाँ, मै कह सकता हूँ कि प्रकृति हमारी शत्रु है, कि हमें प्रकृति से सदा संघर्ष करना चाहिये, क्योंकि वह हमको निरन्तर पशुवत् अवस्था में पहुँचाने में लगी रहती है। तुम्हें विश्वास होना चाहिये कि भगवान ने इस ससार मे कोई भी ऐसी वस्तु नहीं रखी जो निर्मल, सुन्दर, शोभायुक्त या हमारे आदर्शों से अधिक हो किन्तु यह तो मनुष्य का मस्तिष्क है जिसने ऐसा

किया है। यह हम लोग हैं, जिन्होने थोडी सी मृदुता, सुन्दरता, अलौकिक आकर्षण, और रहस्य इसके बारे मे गा २ कर, अनेको अर्थ निकाल २ कर कवियो की भाँति इसकी प्रशसा कर, कलाकारों की भाँति आदर्श मानकर और उन विद्वानों की भाँति जो गलती करते है, जो अवास्तविक कारणों, मृदुता और सुन्दरता को-किसी अलौकिक आकर्षण एवं रहस्य को प्रकृति के कितने ही कार्यों में खोजते हैं, इसके अन्दर समावेश किया है।

"भगवान ने बीमारियो के कीटाणुओ से भरे हुए केवल भद्दे जीव उत्पन्न किये हैं जो पशुओ के से आनन्दो का उपभोग करने के कुछ वर्षों पश्चात असुन्दरता और प्राणियो की दुर्बलता व शक्ति की कमी के साथ २ वृद्ध और दुर्बल हो जाते हैं। मालूम पड़ता है कि भगवान ने उन्हें केवल बार २ घृणित तरीके से उनके ही सरीखा नमूना तैयार करने के लिये और उसके बाद कीडे मकोड़ो की भाँति मर जाने के लिये बनाया है। मैने कहा था, घृणित तरीके से ही नमूना तैयार करने के लिये--और मै अपने इन विचारों पर पुन: जोर देता हूँ। वास्तव में, प्राणियों के बार २ पैदा करने से अधिक नीच, घृणित एवं हास्यास्पद कार्य जिसके विरुद्ध हर समझदार व्यक्ति ने विद्रोह किया है और करता रहेगा, और क्या है? इस कंजूस और ईर्षालु विधि ने जितने भी साधन तैयार किये हैं, वे दो काम करते हैं। उसने इस पवित्र सन्देश को, जो सबसे अधिक सज्जनता और मनुष्य के कार्यों में सबसे अधिक प्रशंसा पूर्ण कार्य है, ऐसे योग्य व्यक्तियों को क्यो नहीं सौंपा, जिनपर कोई बट्टा नहो लगा सकता। मुहँ, जो सांसारिक भोजन करके शरीर का पोषण करता है, भाषण एव विचारों को भी प्रगट करता है। हमारा माँस जो अपने आप हीं को नव-चैतन्यता प्रदान करता है तथा साथ ही साथ हमारे विचारों को भी व्यक्त करता है। नाक, जो हमारे फेंफड़ो को प्राणदायक वायु देती है वही सारे ससार भर की सुगन्धियों, पुष्पों, जगल, वृक्ष, समुद्र की सुगन्धों, को हमारे मस्तिष्क में पहुँचाती है। कान, जो हमारे मित्रों से बातचीत करने की क्षमता प्रदान करते हैं, वही सगीत का आविष्कार करने, स्वप्नो, अनन्त आमोद-प्रमोदो का और शारीरिक आनन्दों का, ध्वनि द्वारा, रस प्रदान करते है!

"किन्तु कोई भी यह कह सकता है कि भगवान की इच्छा पुरुष को स्त्री के साथ अपने व्यापार को भद्र एवं आदर्श बनाये रखने की नहीं थी। साथ ही साथ मनुष्य ने भी प्रेम प्राप्त कर लिया है, जो उस चालाक विधि के लिये अशोभनीय प्रत्युत्तर नहीं है। और उसने इसको साहित्यिक कविताओं से इतना अधिक सजा दिया है कि स्त्री बहुधा अपने सम्बन्ध (स्पर्श) को जिसके लिये वह बाध्य होती है भूल जाती है। हम लोगों में से जो लोग अपने आपको धोखा नहीं दे सकते, उन्होंने बहुत सुन्दर और दूसरा ही स्वभाव आविष्कृत किया है, जो कि भगवान का परिहास करने का दूसरा ढंग है और वह है सुन्दरता का स्वागत–मूर्खता पूर्ण स्वागत।

"किन्तु साधारण व्यक्ति एक ऐसे जानवर की भाँति जो दूसरे का जोड़ा है, बच्चे पैदा करते हैं।"

"उस स्त्री की ओर देखो ! क्या यह सोचना घृणात्मक नहीं कि ऐसा नगीना, ऐसा मोती, जो सुन्दर रहने, प्रशंसा किये जाने, दावतों में आमन्त्रित किये जाने के लिये पैदा हुई है, उसने अपने जीवन के ग्यारह वर्ष काउन्ट डी मस्करेट के उत्तराधिकारी निर्माण करने में व्यतीत कर दिये हैं।"

बेर्नार्ड ग्रान्डिन ने हँस कर उत्तर दिया: "तुम्हारी बातों में बहुत कुछ सत्यता है, किन्तु इन्हें हर कोई नहीं समझ सकता।"

सलनिस और भी अधिक उत्तेजित हो उठा। "क्या तुम जानते हो मैं भगवान का चित्रण कैसे करता हूँ ?" उसने कहा "पैदा करने वाले एक बहुत बड़े यन्त्र की भाँति जिसका कि हम लोगों को कोई पता नहीं, जो शून्य में करोड़ों सृष्टियों को ठीक वैसे ही फेंकता है, जैसे एक मछली अपने अण्डों को समुद्र में फेंकती है। वह सृष्टि करता है क्योंकि उसका भगवान के नाते यह कर्तव्य है, किन्तु वह यह नहीं जानता कि वह कर क्या रहा है, वह मूर्खता से पैदा करने के अपने कार्य में लगा रहता है, और अपने फैलाये हुए सब प्रकार के पैदा किये हुए अणुओं की मिलावट से अनजान है। मनुष्य की विचारधारा कुछ भाग्यवान, कुछ स्थानीय, गुजरती हुई घटना मानी जाती है जो कि बिल्कुल नहीं देखी गई थी और जो उस पृथ्वी के साथ ही साथ

निश्चित अदृश्य कर दी जायगी और शायद फिर से यही या कही, ऐसी ही या कुछ नये स्वर्गिक मिलावट से युक्त इससे भिन्न प्रारम्भ होनी है। हम लोग इस छोटी सी घटना के कारण जो भगवान की बुद्धि मे घट गई थी, इस ससार मे जो हमारे लिये नहीं है, हमें रखने, हमें टिकाने, खिलाने या प्राणियों को सन्तुष्ट करने के लिये जिसका निर्माण नही हुआ, बहुत कष्ट का अनुभव करते हैं। और यह भी हमे उसी के कारण विधि के विधान कहलाने वाली वस्तु से निरन्तर सघर्ष करते रहना पडता है, और तब जबकि हम लोग वास्तव मे बहुत सुसभ्य एव सुसंस्कृत हो चुके हैं।"

प्रान्डिन, जो उसकी बातो को पूरे ध्यान से सुन रहा था, और उसकी कल्पना की आश्चर्यप्रद उडानो को बहुत दिनो से जानता था, बोला "तब क्या तुम्हारा विश्वास है कि मनुष्य की विचार धारा अन्धे, स्वर्गिक बच्चे पैदा होने का स्वभावगत ही उत्पन्न होने वाला उत्पादन है ?"

"बिल्कुल ! यह हमारे मस्तिष्क की रक्त की थैलियो का आकस्मिक कार्य है। यह किसी अदृश्य कैमीकल कार्य, जो कि नई मिलावटों से होता है, जो कि विद्युत के एक उत्पादन से मिलता है, जो कि किसी तत्व के आकस्मिक सामीप्य या रगड से उत्पन्न होता है, की तरह होता है। और, जो, अन्त में, प्राणियो की अनन्त एवं आवश्यक उत्तेजना से उत्पन्न हुए कार्यों से मिलता है ?

"किन्तु, मेरे मित्र, यह सचाई उन सब को मालूम पड़ जानी चाहिये जो अपने चारों ओर देखते है। यदि मनुष्य की विचार धारा एक सर्वज्ञान सृष्टि रचयिता के द्वारा, इसी रूप मे प्रदान की जानी थी कि जिस रूप मे वह अब आ गई है और जो यान्त्रिक विचारो एवं बिना किसी प्रतिवाद, क्रोध, एवं दुख सहन शक्ति से बहुत भिन्न हो चुकी है। यह ससार जो हम प्राणियों के लिये निर्मित किया गया था, यह सलाद जमीन, यह पहाडी जंगल और बगीचे, जहाँ पर तुम्हारे भगवान ने हमको नंगा रहने के लिये, गुफाओं में, पेडों के नीचे पड़े रह कर जीवन बिताने को भाग्य मे लिखा, तब क्या उसने वध किये हुए जानवरों के हमारे भाइयों के गोश्त पर हमारा पोषण किया या इन कच्ची

साग सब्जियों के ऊपर जो कि सूर्य एवं मेह से पुष्ट की गई थी उनसे पोषण किया ?

"इस पृथ्वी की ओर देखो, भगवान ने यह इसी के बसने वालों को दे दी है। क्या यह बिल्कुल स्पष्ट एव देखने योग्य बनी हुई है, यह पशुओं के लिये पेड़ पौधों से युक्त एव ढकी हुई नही है ? वहाँ हमारे लिये क्या है ? कुछ भी नहीं। और उनके लिये ? सब चीजें उनकी प्रवृत्तियो के अनुसार उनके पास खाने और शिकार करने, एक दूसरे को खाने के अतिरिक्त और कोई काम नहीं है क्योंकि भगवान अच्छे और शान्तिप्रद ढङ्गो को कभी नहीं देखना चाहता। वह तो उन पशुओ की जो एक दूसरे को मारने खाने में लगे हैं, उनकी मृत्यु चाहता है। क्या कबूतर, गिलगिलिया अन्य छोटे पक्षी बाज का स्वाभाविक शिकार नहीं है ? क्या भेड़े, बारहसिंगे और भैंसे बड़े २ माँसाहारी पशुओं के शिकार नहीं है ? क्या गोश्त से अधिक लाभ साग सब्जी नहीं पहुँचाती !

"और हम जितने अधिक सुसभ्य,सुसस्कृत एव बुद्धिमान हों उतना ही हम को उस पाशविक प्रवृत्ति को जो हमारे अन्दर भगवान की इच्छा का प्रतिनिधित्व करती है, जीतना और दबाना चाहिये। अत हमने अपने भाग्यों को असभ्यता से हल्का करने के लिये सब वस्तुओं को खोजा और उन्हे बनाया। मकानों से आरम्भ करते हुए, अच्छा खाना, तश्तरियाँ, पेस्टरी,शराब, सामान, कपड़े, गहने, बिस्तरे, गाड़ियाँ, रेलवे और असंख्यों मशीनों के निर्माण के अतिरिक्त हमने कला एव विज्ञान, लेखन एव कविता सब ही निर्मित किये। हम लोगों से और साथ ही साथ जीवन के आनन्दों से हर आदर्श हम को हमारे जीवन में केवल पुनरोत्पादक, जिसके लिये भगवान ने हमसे इच्छा की, बनाये रखने के लिये उतना ही सरल और साधारण उत्पन्न होता है।

"थियेटर की ओर देखो। स्वर्गिक विधाताओं की दृष्टि एवं ज्ञान से परे, केवल हमारी बुद्धि से ही ग्राह्य, प्राणियों का संसार नहीं निर्मित किया गया है ? क्या यह शारीरिक एवं बुद्धिवादी क्रोधी, जो कि केवल हमारे जैसे असन्तुष्ट और अशान्त पशु द्वारा निर्मित नहीं किया गया है ?

"उस स्त्री, मैडम डी मस्करेट की ओर देखो। भगवान ने उसे किसी गुफा में नग्न अथवा जंगली पशुओं की खाल मे लिपटा रहने के लिये बनाया था, किन्तु इस समय वह जैसी भी है क्या उससे अच्छी नहीं है ? किन्तु उसके विषय में बातें करते समय क्या कोई जानता है कि उसके पति के पशुत्व ने उसको सात बार माँ बना कर जब काफी पशुपन से व्यवहार किया, तब एका-एक अपनी बगल के ऐसे साथी को छोड़ कर कुलटाओं के पीछे भागना क्यो प्रारम्भ कर दिया ?"

ग्रान्डिन ने उत्तर दिया "ओह ! मेरे मित्र, मेरे विचार में शायद यही कारण होगा। उसने उसके साथ रहते हुए देखा होगा कि उसका व्यय बहुत है, और घरेलू आर्थिक कारणों से वह उन्ही विचारों पर, जिन्हे तुम दार्शनिक की हैसियत से कहते हो, आ गया होगा।"

तीसरे अक के लिये पर्दे के उठते ही-वे मुडे और अपने २ टोप उतार कर बैठ गए।

४

काउन्ट और काउन्टेस मस्करेट गाडी में, जो उन्हे ओपरा से घर ले जा रही थी, पास २ चुपचाप बैठे हुए थे। किंतु पति ने अपनी पत्नी से एकाएक कहा "गैबरीले।"

"क्या कहना है ?"

"क्या तुम्हारा विचार है ऐसे काफी बीत लिया ?"

"क्या ?"

"वह भीषण दण्ड जो तुमने गत ६ वर्षों से दे रखा है।"

"आप क्या चाहते हैं ? मै लाचार हूँ कि आपकी मदद नहीं कर सकती।"

"तब मुझे यह बतला दो कि उनमे से कौन सा है ?"

"कभी नहीं।"

"सोचो कि मैं अपने बच्चो के बीच में अपने हृदय से उस बोझ को हलका किये बिना नहीं रह सकता और न यह अनुभव ही कर सकता हूँ कि वे

मेरे बच्चे हैं। मुझे बतला दो मैं तुम्हें क्षमा कर दूँगा और उससे भी अन्य बच्चों की भाँति व्यवहार करूँगा।"

"मुझे यह बतलाने का अधिकार नहीं है।"

"तुम यह नहीं जानती कि मैं इस भांति के जीवन को, इस विचार को जो मुझे परेशान करता रहता है, या इस प्रश्न को जिसे मैं निरंतर मन ही मन पूछता रहता हूं, इस प्रश्न को जो मुझे प्रत्येक बार, जब भी मै उनकी ओर देखता हूँ, मुझे सताता रहता है, अब और अधिक सहन नहीं कर सकता हू। यह मुझे पागल किये दे रहा है।"

"तब आप बहुत कष्ट उठा चुके ?" वह बोली।

"बहुत। इसके बिना, क्या मैं तुम्हारे पास रहने के भय को स्वीकार कर सकता था और इससे भी बडे यह जानने या अनुभव करने के भय को, कि इनमें से एक है जिसे मै नहीं स्वीकार कर सकता और जो मुझे अन्यो को भी प्रेम करने से रोकता है, स्वीकार कर सकता था ?"

उसने दोहराया. "तब आपने वास्तव में बहुत काफी कष्ट उठाया है ?" और उसने दुख भरे सयमित स्वर में उत्तर दिया।

'हाँ, क्या मै तुमसे नित्य ही यह नहीं कहता था कि मेरे लिये यह दुख असह्य है ? यदि मै उनसे प्रेम नहीं करता होता तो तुम्हारे और उनके पास वाले मकान में ही क्यो रहता ? ओह ! तुमने मेरे साथ बडा घृणित व्यवहार किया है। मै ने अपने हृदय का समस्त प्रेम अपने बच्चो पर न्यौछावर कर दिया है, और यह तुम जानती ही हो। मैं उनके लिये पुराने जमाने का पिता हूँ, और क्योंकि मै अपनी प्रवृत्तियों के कारण सदा एक प्राकृतिक पुरुष रहा हूँ, पुराने जमाने का प्राकृतिक पुरुष, और मैं तुम्हारा भी प्राचीन घरानों की ही भाँति का पति रहा। हाँ, मैं उसका विश्वास दिलाऊँगा कि तुमने मुझे बहुत कष्ट पहुँचाया है क्योंकि तुम एक दूसरी ही जाति की, दूसरी ही आत्मा की, दूसरी ही आवश्यकताओ वाली स्त्री हो। ओह ! मैं तुम्हारी बातों को कभी नहीं भूलूँगा, किन्तु उस दिन से मैंने तुम्हारे बारे मे कोई चिंता नहीं की। मैंने तुम्हे इसलिये नही मार डाला कि फिर मेरे पास दुनियाँ के किसी भी

छोर पर यह बतलाने वाला नहीं मिलेगा कि हमारे बच्चों में से तुम्हारा कौन सा बच्चा है, जो मेरा नही है। मैंने प्रतीक्षा की है, किंतु तुम विश्वास नही कर सकोगी कि मैंने कितना कष्ट उठाया है क्योंकि मै अब उनमें से दो, शायद सबसे बडे दो के अतिरिक्त और किसी को प्रेम करने का साहस नही करता हूँ, अब मैं उनकी ओर देखने, उन्हे बुलाने, उनका चुम्बन लेने का साहस नहीं करता हूँ, और उन्हे, अपने मन से यह पूछे बिना 'क्या यही तो नही है ?' अपने घुटनों पर नहीं बैठा सकता हूँ। मैं तुम्हारे प्रति अपने व्यवहार मे इन छ वर्षों मे ठीक रहा हूँ और यहाँ तक कि दयालु भी रहा हूँ, मुझे सच बतलाओ, और मै सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि मै तुम्हारे साथ कुछ भी दुर्व्यवहार नहीं करूँगा।"

उसने गाडी में अन्धकार होते हुए भी सोचा कि उसने देखा था कि वह विचलित हो उठी थी और यह निश्चिय समझकर कि वह कुछ कहने जा रही थी, वह बोला "मै तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि तुम मुझे बतला दो।"

"किन्तु शायद आपके सोचने से भी मैं अधिक दोषी हूँ।" उसने उत्तर दिया "किंतु मै उस गर्भधारण के जीवन को और अधिक सहन नहीं कर सकी थी और मेरे पास आपको अपने बिस्तर से हटाने का एक ही उपाय था। मैंने भगवान के सम्मुख झूठ बोला, और मैंने अपने बच्चों के सिर पर हाथ धरकर झूँठ कहा क्योंकि मैंने आपको कभी धोखा नहीं दिया।"

उसने अन्धकार में उसका हाथ पकड़ लिया और उसी भयानक दिन की भाँति जिस दिन वे बोइस डी बोलोन को जा रहे थे, उसने उसका हाथ दबाते हुए हकला कर कहा. " क्या यह सच है ?"

"हाँ, यह सच है।"

किन्तु वह विकट वेदना से कराह कर बोला "अब मुझे नये सन्देह उत्पन्न हो जायेंगे जो कभी भी समाप्त नहीं होंगे। तुम ने झूठ कब बोला पहली बार या अब ? मैं इस समय तुम पर विश्वास कैसे करूँ ? कोई भी ऐसी बात हो जाने के पश्चात स्त्री पर कैसे विश्वास कर सकता है ? मै फिर कभी यह

नही जान पाऊँगा कि मुझे क्या सोचना चाहिये। इससे तो तुमने यह कहा होता तो मैं अधिक पसन्द करता 'वह जैकब है।" या "वह जैनी है।"

गाडी उनको लिये हुये उनके विशाल प्रासाद के आँगन मे गई और जब वह सीढियों के पास आकर खड़ी हो गई तब हमेशा की ही भाँति काउन्ट पहिले उतरा और अपनी पत्नी की मदद के लिये अपना हाथ बढ़ाया। और तब जब वे पहली मंजिल पर पहुंचे वह बोला "क्या मैं तुमसे थोड़ी देर तक और बातें कर सकता हूँ ?"

और उसने उत्तर दिया "मैं बिल्कुल तैयार हूँ।"

वे एक छोटे से ड्राइंग रूम मे गए—एक नोकर ने आश्चर्य से चकित हो उसमें मोमबत्ती जलाई। जब वह कमरे से बाहर निकल आया तब वह बोला. "मैं सत्यता कैसे जान सकता हूँ ?" मैने तुमसे हजारों बार बोलने को कहा किंतु तुम हमेशा गूँगी, कठोर एव अनम्र बनी रही और अब कहती हो कि तुम झूठ बोलती रही। छ वर्षों से तुमने मुझे इस पर पूर्णतया विश्वास करने दिया ! नहीं, तुम अब झूठ बोल रही हो, किन्तु क्यो, यह मैं नहीं जानता क्यों शायद मेरे ऊपर तरस खाकर ?

उसने गम्भीर एव प्रभावोत्पादक ढङ्ग से कहा "यदि मैने ऐसा नही किया होता तो इन छ वर्षों में मेरे चार और बच्चे हुए होते !"

और वह चिल्लाया "क्या एक जननी इस भाँति उत्तर दे सकती है ?"

"ओह !" मैं उन बच्चों के लिये जो मुझे कभी नही हुए अपने आपको उनकी माँ मानने के लिये तैयार नहीं हूँ, मेरे लिये इतना पर्य्याप्त है कि जो मेरे बच्चे हैं उनको प्रेम करूँ और अपने समस्त हृदय से करूँ। मैं हूँ—हम लोग हैं—वे स्त्रियाँ हैं श्रीमान जी, जो सभ्य संसार से सम्बन्ध रखती हैं और अब हम लोग उनमें से नहीं रहीं, और उनमे से होना अस्वीकार भी करती हैं, जो स्त्रियाँ पृथ्वी पर भार बढाती हैं।"

वह उठ बैठी किंतु उसने उसके हाथो को पकड़ लिया "गैबरीले एक शब्द, केवल एक शब्द। मुझसे सच सच कह दो।"

उसने उसके चेहरे की ओर, भूरे चेहरे को देखा, और वह अपनी भूरी आखों, जो ठण्डे आकाश की भाँति थी, से कितनी सुन्दर लग रही थी। उसकी बालो की गहरी ड्रेस मे उन केशो रूपी काली रात्रि पर एक हीरे का टुकड़ा सितारे की भॉति चमक रहा था। तब उसे एकाएक लगा, बिना किसी तर्क के धारणा सी बन गई, कि यह महान जीव केवल अपनी जाति बढ़ाने के लिये नहीं था, किंतु था सब सम्मिलित इच्छाओ का विचित्र एव रहस्यमय उत्पादन, जो हममे शताब्दियो से अपना घर बनाऐ बैठा है किंतु वह प्रारम्भिक एव स्वर्गिक वस्तु से परे हटा दिया गया और जो एक रहस्यमयी, अलभ्य एव अलौकिक सौन्दर्य मे उलझा दिया गया था। कुछ स्त्रियाँ ऐसी भी होती है, जो केवल हमारे स्वप्नों के उद्भव होती हैं, सभ्यता के प्रत्येक कवित्वमय कार्यों से पूजित की जाती हैं, और आदर्श विलास, चापलूसी, और अनिवर्णनीय आकर्षणों को उस जीवित जाग्रत मूर्ति को जो हमारे जीवन को प्रकाशित करती है चारो ओर से घेरे रहना चाहिये।

उसका पति उसके सामने इस देर से जाग्रत हुई, छिपी हुई खोजपर मुझसे अपनी पूर्व ईर्ष्या को धिक्कारता हुआ, और इस सबको बहुत ही कम समझता हुआ, मूर्ख सा खडा रहा। अन्त में वह बोला "मुझे तुम पर विश्वास है क्योंकि मुझे इस क्षण ऐसा लग रहा है कि तुम झूठ नही बोल रही हो, और पहिले मैंने सचमुच सोचा था कि तुम झूठ बोलीं थीं।"

पत्नी ने अपना हाथ आगे बढाकर कहा. "तो हम लोग मित्र हैं न ?"

उसने उसका हाथ अपने हाथ मे लिया। उसे चूमा और उत्तर दिया: "धन्यवाद् गैबरीले, हम लोग अब मित्र हैं।"

तब वह उसकी ओर अभी तक देखता ही हुआ और आश्चर्य में पड़ा हुआ कि वह अभी तक इतनी सुन्दर थी, चला गया। और एक विचित्र ही भावना उसके अन्दर उठी, जो शायद, पहिले और केवल प्रेम मात्र से अधिक अच्छी थी।

एक नोरमेन्डी परिहास

जुलूस उस सूनी सडक पर, जो खेतो के ढालों पर उगे हुए पेड़ो से आच्छादित थी दिखलाई दिया ' सबसे पहिले नवविवाहिता–दम्पति आये, तब रिश्तेदार, फिर निमन्त्रित अतिथि, और अन्त में पास पड़ौस के गरीब लोग आये। गाव के छोटे २ बच्चे और लड़के, जो कि उस नगी सड़क के चारो ओर मक्खियो की भाँति इकट्ठे थे, कभी जुलूस में से कही से निकल कर जाते, तो कभी कहीं से या फिर उसे अच्छी भाँति देखने के लिये पेडो पर चढ़ जाते।

दूल्हा, जेन पाट्ट, आस पास में सबसे धनी किसान, तथा बहुत सुन्दर नवयुवक था। सब बातो से ऊपर वह एक उत्सुक शिकारी था, जो अपनी इस उत्कट इच्छा को पूरी करने में अपनी बुद्धि भी खो बैठता था। वह अपने कुत्तो, उनकी रखवाली करने वालों, अपनी बन्दूकों, और जालो पर बहुत रुपया व्यय करता था। दुल्हिन, रोसली रोजल, जिले के लगभग समस्त नव-युवको मे सम्मानित हो चुकी थी क्योंकि वह उसे पहिले से ही ग्रहण करने योग्य समझते थे और वह यह जानते थे कि उसको दहेज बहुत अधिक प्राप्त होगा। किन्तु उसने पाट्ट को चुना था–कुछ तो इसलिये कि शायद वह उसे अन्य लोगों से अधिक पसन्द करती थी, किन्तु इससे भी अधिक, एक समझदार नोरमेन्डी युवती की भाँति, इसलिये कि उसके पास धन अधिक था।

उनके पति के खेत के श्वेत द्वार में पहुँचते ही चालीस गोलियाँ दागीं गईं। किंतु कोई यह न देख सका कि गोलियाँ दागीं किसने थीं। गोली चलाने वाले खाइयों में छिपे हुए थे और शोर ने उन सब व्यक्तियो को, जो अपने सबसे अच्छे कपड़े पहिने हुए वहाँ घिसट रहे थे, बहुत प्रसन्न कर दिया। पाट्ट अपनी पत्नी को छोड़ एक खेतिहर के पास दौड़ा २ गया, जिसे उसने एक वृक्ष के पीछे खड़ा देख लिया था, और उसकी बन्दूक लेकर उसने स्वयं एक फायर किया। तब वे ऊँची २ घास में से, बछड़ों के झुण्डो मे से जिन्होंने अपने बडे २

नेत्रो से उनकी ओर देखा, धीरे २ उठ खडे हुए और अपना मुँह सीधा बरात की ओर किये हुए, उनकी ओर देखते रहे, होकर फलो से लदे हुए सेबा के पेडो के नीचे जा पहुँचे।

बराती जब बढ़हार के स्थान से थोडी ही दूर रह गये तब गम्भीर हो उठे। उनमे कुछ लोग जो धनी थे चमकते हुए लम्बे सिल्क के हैट जो वहाँ बिल्कुल ही बेमेल से लग रहे थे, लगाये हुए थे, दूसरे लोगो के ऊनी हैटों पर पुराने फरदार कवर चढे हुए थे, और जो लोग गरीब थे वे केवल टोपियाँ ही पहिने हुए थे। समस्त स्त्रियाँ शाल ओढ़े हुए थी, जिसे वे ढीले २ लपेटे हुए तथा अपनी बाहों से हलके २ दबाये हुये थीं। वे शाल लाल रग के, अग्नि की लपटो के सदृश रगे हुये शाल थे। गोबर के ढेरों पर बैठी हुई काली शिकारी चिड़ियों को तालाब की बतखा को और फूसो के छप्परों पर बैठे हुए कबूतरो को मानो शालें अपनी चमक से आश्चर्य में डाल रहीं हो।

खेत की बहुत लम्बी चौडी इमारत, जो उन मेवो के पेड़ों की घुमावदार पगडण्डी के अन्त पर थी, बारात की प्रतीक्षा कर रही थी। एक भाँति की भाप खुले हुए द्वारों एवं खिडकियों में से निकल रही थी, और खाद्य पदार्थों की सुगन्धि जो उस विशाल भवन में चारों ओर फैली हुई थी उसकी खिडकियों, यहाँ तक कि दीवालों से भी आ रही थी। अतिथियों की पक्तियाँ आंगन मे थीं और सबसे आगे का अतिथि द्वार पर पहुँच गया, पंक्तियां टूट गईं और वे फैल गए—अभी तक पीछे के खुले द्वार से अतिथि आते ही जाते थे। खाइयों में बच्चे और गरीब लोग खडे हुए थे। गोलियों की अवाज अभी बन्द नहीं हुईं, किन्तु धुंऐ का बादल उडाती हुई, और वायुमण्डल में पाउडर की सी—सुगन्ध जो अकुलाहट उत्पन्न करती हैं उडाती हुई, चारों ओर से अभी तक आरही थी।

स्त्रियाँ द्वार के बाहर धूल से बचने के लिये अपने कपडों को झाड रहीं थीं, अपनी टोपियाँ खोल रही थीं तथा अपने शालों की तह कर कर के अपने कधों पर रख रही थीं। तब वे कमरे के अन्दर उन्हें उस समय

केलिये बिल्कुल अलग रखने केलिये प्रविष्ट हुईं। मेज जिस पर एक सौ अतिथि एक साथ बैठकर भोजन कर सकते थे बडे रसोईघर के अन्दर रखी हुई थी। वे लोग भोजन करने दो बजे बैठे और आठ बजे तक भी भोजन करते रहे, लोगो की कमीजों की तह खुली हुई थीं, कोटों के बटन खुले हुए थे और वे लोग लाल-चेहरों से भोजन को और शराब को निगलते ही चले जा रहे थे, मानों वे कभी सतुष्ट नहीं हो सकते थे। सेब का रस बडे २ गिलासो में उस गहरे रक्तवर्ण की शराब के पास ही रखा हुआ स्वच्छ तथा स्वर्णिम चमक रहा था। और हर तश्तरी के बीच में शराब के एक गिलास के साथ २ ट्राऊ-नोरमेन्डी ट्राऊ रखा हुआ था, जो शरीर को भडका देता, तथा सिर मे मूर्खतापूर्ण हावभाव भर देता था।

बार २ अतिथियों में से कोई न कोई पीपों की तरह भरपेट खाकर ताजा हवा लेने के लिये कुछ क्षणों को बाहर निकलता, और जैसा उन्होने कहा, और दूनी भूख के साथ वापिस लौट आता। गुलाबी चेहरों, चोलियां, जो लगभग फटी सी जा रही थीं, वाली किसान स्त्रियाँ उनके उदाहरणों को, तब तक नहीं दोहराना चाहती थीं जब तक उनमें से एक दूसरो से अधिक असुविधा का अनुभव कर बाहर न निकला। तब हर एक ने उसका उदाहरण दोहराया, और फिर किसी परिहास के लिये तैयार होकर लौट आईं, और मजाक फिर से ताजा हो गए। जब तक कि किसानों की समस्त योग्यता और बुद्धि उन परिहासों में स्वाहा न हो गई परिहास-उस शादी की रात्रि के बारे में परिहास-मेज से एक दूसरे के ऊपर होते रहे। सौ वर्षों से वे ही परिहास ऐसे अवसरो पर किये जाते, और यद्यपि सबही उनको जानते थे किंतु फिर भी वे उनको बहुत पसद आते तथा अतिथियों की दोनों पक्तियाँ बडी जोर से अट्टहास करने लगतीं।

मेज के नीचे चार नवयुवक नवविवाहित दम्पति के लिये व्यवहारिक परिहास तैयार करने मे लगे थे। वे लोग जिस ढङ्ग से फुस फुसाऐ और हँसे थे उससे मालूम पडता था कि उनको कोई बढ़िया सा परिहास सूझ गया था। एकाएक उनमें से किसी एक ने, क्षणिक शान्ति का लाभ उठाते हुए चिल्लाकर कहा. "शिकार चोरो को आज रात्रि को इस चन्द्रमा से बहुत लाभ

होगा। जीन मै कहता हूँ, तुम चद्र की ओर नहीं देखोगे, कि देखोगे ?" दूल्हे ने उसकी ओर मुडकर शीघ्र ही उत्तर दिया "बस उन्हे आने भर दो !" किंतु दूसरा अन्य नवयुवक मित्र हँसने लगा और बोला "मेरा तो विचार नही है कि तुम उनके कारण अपने कर्तव्य को भूल बैठोगे !"

सारी मेज पर बैठे हुए लोगों के हँसते २ पेट मे बल पड़ गए, गिलास हिल गये, किंतु दूल्हे को इस बात पर क्रोध आ गया कि उसकी शादी के अवसर से लाभ उठाकर कोई उसके खेत मे आये और चोरी से शिकार खेले। उसने दोहराया।

"मै तो केवल इतना ही कहता हूँ, कि उन्हे आने भर दो !"

यद्यपि दुलहिन पहिले से ही आशा से काँप रही थी किंतु जब दोहरे मानो की बातो का समुद्र उमड़ पडा तब वह लज्जा से लाल हो गई, और जब उन्होंने सारी ब्राडी पी डाली तब सब लोग सोने चले गए। नवयुवा दम्पति अपने अपने कमरे मे, जो पहली ही मन्जिल में था जैसे कि खेतों के मकान में हुआ ही करते हैं, चले गये। वहाँ गर्मी बहुत थी अत उन्होने खिड़कियाँ खोल लीं और किवाड़ बद कर दिये। एक छोटा सा लैम्प, जो दुलहिन के पिता ने भेट किया था, दराजो पर रखा हुआ मदा २ जल रहा था, और पलंग दोनों नवयौवन सम्पन्नों का स्वागत करने के लिये तैयार था। पलंग सारे उत्सव भर खडा नहीं किया गया। यह खडे रखने की पद्धति अधिक सुसभ्य व्यक्तियो में प्रचलित है। दुलहिन के फूलो के गुच्छे और उसकी ड्रेस पहिले से ही युवा स्त्रियो ने लेली थी। वह पेटीकोट पहिने हुए अपने जूते उतार रही थी। जीन सिगार फूंकता हुआ अपने नेत्रों के किनारे से उसकी ओर देख रहा था। यह दृष्टि उत्सुक, और कोमलता से अधिक इन्द्रिय प्रिय थी क्योंकि उसे उसके प्रति प्रेम से अधिक वासना का अनुभव हो रहा था। एकाएक एक फुर्तीली गतिविधि से उसने, किसी ऐसे व्यक्ति की भाँति जो किसी काम को करने को तैयार हो रहा हो, अपना कोट उतारा। वह अपने जूते उतार चुकी थी और अब मोजे उतार रही थी, तब वह उससे बोली· "जाइये और पर्दे की आड में हो जाइये, जिससे मै बिस्तर पर लेट जाँऊ।"

उसे लगा कि मानों वह मना करने जा रहा था, किंतु एक चालाक दृष्टि से देखता हुआ पर्दे के पीछे सिर बाहर निकाल कर छिप गया। वह हँस पड़ी और उसने उसके नेत्रों को ढकना चाहा और उनमें बिना किसी झिझक और लज्जा के हँसी दिल्लगी में गुत्थमगुत्था होने लगी। अंत में उसने उसकी इच्छानुसार काम किया, और एक ही क्षण में उसने अपने पेटीकोट का नारा खोल दिया, जो उसकी टांगों के नीचे खिसक गया, उसके पावों पर पड़ा और गोले की तरह फर्श पर जा पड़ा। उसने उसे वहीं छोड़ दिया और बदन से चिपकी हुई बोडी के अतिरिक्त बिल्कुल नंगी अपने बिस्तर पर जा लेटी। पलंग की स्प्रिङ्गें उसके भार से दब गईं। नंगे पावों बिना मोजों के वह शीघ्र ही उसके पास गया और अपनी स्त्री के ऊपर झुक उसके ओठों को जिन्हें उसने तकिये से ढक लिया था, ढूढ़ने लगा। तभी उसे दूर से गोली चलने की एक आवाज सुनाई दी, उसके विचारानुसार वह आवाज रापी के जंगलों की ओर से आई थी।

वह उत्सुक हो, सीधा हुआ और अपने धड़कते हुए हृदय से खिड़की के पास दौड़ कर उसने किवाड़ खोले। पूर्णचन्द्र ने आँगन को पीली चाँदनी से भर रखा था और सेव के पेड़ों की काली छाया उसके पावों पर पड़ रही थी, जबकि कुछ दूर पर पके अनाज से आच्छादित खेत चमक रहे थे। किन्तु जैसे वह बाहर झुक कर उस नीरव रात्रि में प्रत्येक आवाज को सुन रहा था, वैसे ही उसके गले में दो नग्न भुजाएँ झूल उठीं और उसकी पत्नी ने उसे वापिस खींचने का प्रयत्न करते हुए धीरे से कहा· "उन्हें छोड़िये, उनसे आपको क्या करना है, आइये बिस्तर पर चलिये।"

वह मुड़ा और उसको अपनी भुजाओं में भर उस पतले से कपड़े में से उसकी त्वचा की उष्णता का अनुभव कर, अपनी शक्तिशाली भुजाओं से ऊँचा उठाकर उसे अपने पलंग पर ले चला, किंतु वह उसे पलंग पर लिटाने जा ही रहा था कि उन्होंने दूसरी आवाज सुनी, जो शायद अब पहिले से अधिक समीप थी। जीन असह्य क्रोध से उत्तेजित हो बोला

"वाह मेरे भगवान! क्या तुम सोचती हो, तुम्हारे कारण मैं बाहर जाकर यह न देखूं कि यह क्या हो रहा है? थोड़ी सी देर रुको-अभी!"

उसने अपने जूते पहिने, बन्दूक ली, जो हमेशा दिवाल पर उसके पास ही टंगी रहती थी, और जैसे ही उसकी पत्नी भय से भयभीत हो अपने घुटने पर बैठ कर, उससे न जाने की प्रार्थना करने लगी, वह शीघ्र ही छूटकर खिडकी की ओर दौडा और आंगन मे कूद पडा।

वह एक घन्टे, दो घन्टे यहाँ तक कि सुबह तक प्रतीक्षा करती रही किंतु पति लौटकर नहीं आया। तब दुखी हो उसने घर को जगा डाला और बतलाया कि जीन कितना क्रोधित हो, शिकारी चोरों का पीछा करने चला गया था। तब शीघ्र ही सारे नौकर–यहाँ तक कि बच्चे भी अपने स्वामी की खोज में निकल गये। उन्होंने खेत के मकान से डेढ़ मील दूर देखा कि उसके हाथ और पैर बधे हुए थे, बन्दूक टूटी हुई पड़ी थी, उसके मोजे ऊपर से भीतर की ओर मुडे हुए थे, तीन मरे हुए खरगोश उसकी गर्दन मे लटक रहे थे और वह क्रोध से अधमरा हो रहा था। उसकी छाती पर एक पोस्टर लगा हुआ था, जिसमें लिखा था·

"जो करता है पीछा—वह जगह छोडता अपनी।"

और बाद में जब भी वह अपनी शादी वाली रात की इस कहानी को सुनाता, तब बहुधा कहा करता "आह ! जहाँ तक परिहास का प्रश्न था यह बहुत अच्छा परिहास था। उन्होंने मुझे एक जाल में फाँसा, मानो मै कोई खरगोश होऊँ और उन गन्दे हबशियों ने मेरा सिर बोरे में बन्द कर दिया। किंतु यदि मैं उनमे से किसी भी दिन किसी को भी पकड पाता तो उनके किये का फल तो चुका ही देता।"

इस भाँति वे लोग नोरमेन्डी में विवाह दिवस पर आनन्द मनाते हैं।

भेड़िया

यह वह कहानी है जो मारक्विस डी आरविले ने, सेन्ट-ह्यूबर्ट के सम्मान में बैरन डी रावेल्स के मकान पर दिये गये सहभोज के अवसर पर कही थी। उस दिन उन्होंने एक बारहसिंगे का पीछा किया था। मारक्विस उन अतिथियों में से अकेला ऐसा व्यक्ति था, जिसने उसके पीछा करने में भाग नहीं लिया था, उसने कभी शिकार नहीं खेला था।

अब तक की सारी बातचीतों में उन्होंने जानवरों के अतिरिक्त अन्य किसी बात पर शायद ही एक या दो शब्द कहे होंगे। यहाँ तक कि स्त्रियाँ भी उन हिंसात्मक और असम्भव कहानियों मे रुचि ले रही थीं और बोलने वाले बड़े उच्च स्वरों में जोर २ से अपनी बाहें उठाकर बातें करते हुए मनुष्यों और पशुओं के आक्रमणों एवं संघर्षों को सुना-सुना कर अन्य व्यक्तियों को प्रसन्न कर रहे थे।

मि० डी' आरविले कवित्वमय एवं उत्तेजनात्मक किन्तु प्रभावोत्पादक बातें अधिक कर रहा था। उसने यह कहानी पहले भी कितनी ही बार दोह-राई होगी, वह कहानी किसी शहर का चुनाव कर, एक मूर्ति को कपड़े पहि-नाने के लिये नहीं रोकी गई किन्तु बहुत ही धारा प्रवाह से कही गई थी।

"सज्जनो! मै कभी शिकार नहीं करता और न मेरे पिता ही, न बाबा ही करते थे। परबाबा, ऐसे पिता के पुत्र थे, जिन्होंने आप सब लोगों से अधिक शिकार खेले। सन् १७६४ में उनकी मृत्यु हो गई थी। मै आप लोगों को बतलाता हूँ कैसे। उनका नाम था जोन। वह विवाहित थे और वह एक पुत्र के, जो मेरे परबाबा थे, पिता थे। वह अपने छोटे भाई फ्रान्सिस डी' आरविले के साथ लौरेन के जगलों में हमारे किले में रहते थे।

"फ्रान्सिस डी' आरविले शिकार के अपने प्रेम के कारण हमेशा क्वारे ही रहे। वे दोनों ही साल के आरम्भ से लेकर अन्त तक बिना किसी

छुट्टी और थकावट के शिकार खेलते रहते। वे और किसी चीज को नहीं चाहते थे और न समझते ही थे, केवल इसकी ही बातें करते और शायद जीते भी इसी के लिये थे।

" वे इस भयानक एवं क्रूर लालसा से युक्त थे। यह उन्हें घेरे रहती उनके ऊपर पूरी तरह से अधिकार किये रहती और उनके मस्तिष्क में अन्य किसी वस्तु के लिये कोई स्थान नहीं छोड़ती। उन्होंने आपस में निश्चय कर लिया था कि वे शिकार का किसी भी परिस्थिति म चाहें वह कैसी भी क्यों न हो, पीछा करना नहीं छोड़ेंगे। जब मेरे परबाबा का जन्म हुआ तब उसके पिता लोमड़ी का पीछा कर रहे थे किन्तु जोन डी' आरविले ने अपना खेल नहीं बन्द किया और कसम खाई कि उस छोटे शिशु क को मृत्यु की आवाज आने तक प्रतीक्षा करनी चाहिये थी। उसके भाई फ्रान्सिस उनसे भी अधिक गर्म मिजाज के थे। सबेरे उठते ही उनका सबसे पहला काम था कुत्तों को देखना, फिर घोड़ों को और बड़े शिकार खेलने जाते समय भी वह वहीं पास में ही कुछ चिड़ियों का शिकार करते।

वे मिस्टर डी' मारकिस और मिस्टर डी' केडेट कहलाते थे। तब सज्जन लोग आज कल के सज्जनों की भाँति नहीं थे, जो अपनी पदवियों का क्रम नीचे उतरता हुआ रखना पसन्द करते हैं। मारकिस का पुत्र कांउन्ट नहीं रहता, या विस्काउन्ट का बैरन, फिर जनरल का पुत्र जन्म से ही जनरल कहलाता है। किन्तु आज कल का व्यर्थ गर्व इसी पद्धति में लाभ का अनुभव करता है। हाँ, तो!

" ऐसा लगता है कि वे लोग काफी लम्बे तगड़े, क्रोधी और शक्तिशाली थे। छोटे वाले बड़े से लम्बे थे और किम्वदन्तियों के आधार पर मैं कहता हूँ कि उनकी आवाज ऐसी थी कि जिसके ऊपर उन्हें गर्व था और जब वह चिल्लाते थे, तब जगल की पत्तियाँ तक हिलती जातीं थीं।

" और जब वे शिकार खेलने के लिये घोड़ों पर चढ़ते थे, तब उन दोनों बृहत्काय जीवों को अपने घोड़ों की बगल में खड़े हुए देखते ही बनता था।

"सन् १७६४ के जाड़ों के मध्य में ठण्ड बहुत तेज पड़ी थी। अत भेड़िये अति क्रूर हो गये थे।

"वे रात को देर से आने वाले किसानों पर आक्रमण करते, रात को घरों के चारों ओर घूमते, सूर्यास्त से सूर्योदय तक रोते रहते, और जहाँ-तहाँ घोड़ों को भी खा जाते।

"एक बार एक अफवाह उड़ी। यह कहा जाता था कि एक बहुत बड़े, भूरे, सफेद रङ्ग के भेड़िये ने दो बच्चे खा लिये, एक स्त्री की बाँह काट खाई, सारे शिकारी कुत्तों की गर्दनें दाब दी थीं, अब घरों के द्वारों पर निर्भय होकर चक्कर लगाता तथा दरवाजों को सूँघता फिरता था। बहुत से निवासियों ने इसकी पुष्टि करते हुए कहा कि उन्होंने उसको सूँघते हुए अनुभव किया—क्यों कि उसके सूँघने से दीपकों की लौ हिलजाती जिससे रोशनी हिल उठती थी। थोड़े ही दिनों में सारे प्रान्त भर के निवासी भय-भीत हो गये। किसी की हिम्मत रात को घर से निकलने की नहीं होती थी। जरा सी भी छाया दिखलाई पड़ी कि उसी भेड़िये का भ्रम हो जाता था।

"डी' आरविले भ्राताओं ने उसे खोज कर मार डालने का निश्चय किया। अत उन दोनों ने सारे गाँव के निवासियों को उसका पीछा करने के लिये बुलाया।

"वह व्यर्थ रहा। उन्होंने सारा जगल छान डाला, सारी झाड़ियाँ खोज डाली। किन्तु उसका कोई चिह्न भी न मिला। उन्होंने बहुत से भेड़िये मार डाले, पर वह नहीं मरा। और हर पीछा किये जाने वाले दिन की रात को उस पशु ने मानो बदला लेने के लिये कभी किसी यात्री पर आक्रमण किया या कभी किसी चौपाये को खा गया, और कहाँ? वहाँ, जिस स्थान पर उसकी खोज होती, उस स्थान से बहुत दूर।

"अन्त में वह एक रात्रि को डी, आरविले के किले के सुअरों को रखे जाने वाले घर में घुस गया और बहुत बढ़िया नस्ल की सूअरियों को खा गया।

" दोनो भाई क्रोधित हो उठे, उस आक्रमण को उन्होंने उस विशाल काय की गीदड़ भबको, सीधी हानि तथा ललकार समझी। अत अपने साथ सब अच्छे से अच्छे होशियार कुत्ते लेकर, वे क्रोध से उन्मत्त हो उसका पीछा करने को निकल पड़े।

"सुबह से सूर्यास्त तक वे जङ्गल छानते रहे, किन्तु व्यर्थ।

"अन्त में भग्न हृदय एव उत्तेजित हो, वे दोनों अपने घोड़ों को मोड़ पगडण्डी में जो दोनों ओर सिवार घास से घिरी हुई थी, ले चले। वे इस भेड़िये की धोखा देने की शक्ति पर आश्चर्य कर ही रहे थे कि वे एक गुप्त भय से भयभीत हो गये।

" बड़े वाले ने कहा

"वह कोई साधारण पशु नहीं हो सकता। हर कोई कह सकता है कि यह मनुष्यों की भाँति सोच सकता है।"

" छोटे वाले ने उत्तर दिया

"हमे अपने चचेरे भाई, पादरी से उसके लिये एक गोली का आशीर्वाद देने के लिये मिला जाय या किसी पुरोहित से अपनी सहायता के लिये कुछ शब्द उच्चारण करने को कहा जाय।"

" तब वे दोनो चुप होगये।

" जोन ने कहा ' सूर्य की ओर देखो, कितना लाल है, यह विशाल काय भेड़िया आज रात को बदमाशी करेगा।"

" उन्होंने अपनी बात अभी समाप्त भी न की थी कि उनका घोड़ा हिनहिनाया। उसी समय फ्रान्सिस का घोड़ा भागने लगा। सूखी हुई पत्तियों की एक झाड़ी उनके सामने हिली और एक विशालकाय पशु, भूरे सफेद रङ्ग का उछल कर कूदा और उस जङ्गल में अदृश्य हो गया।

" दोनों के चेहरे पर सन्तोष का भाव झलक उठा और अपने भारी घोड़ों की गर्दनो पर झुकते हुए उन्होंने अपने भारी भार से उन्हें चेताया, उत्तेजित किया, और अपनी आवाज और टिक-टिक से उन्हें और भी तेज कर दिया और तब तक करते रहे जब तक कि उन शक्तिशाली सवारों को ऐसा

लगने लगा कि उनके घोड़े उड़ने लगे हैं और उनका सारा भार उनके घुटनो में दब गया है।"

"इस तरह वे जगलो को रौंदते हुए, घाटियों को पार करते हुए, पहाड़ों के गहरे सकरे पथ को लांघते हुए और बीच २ में पड़ोस के कुत्तों और लोगों को जगाने के लिये भौंपू बजाते हुए, घोड़ों पर सवार रहे।

"किंतु एकाएक इस गर्दन तोड़ घुड़सवारी के बीच मे, मेरे पूर्वज का सिर एक पेड़ की बड़ी शाखा से टकरा गया और उनके सिर की हड्डी टूट गई। वह भूमि पर इस भाँति गिर पड़े, मानों मर गये हों और उनका भयभीत घोड़ा पास की झाड़ियों में अदृश्य हो गया।

"छोटे डी आरविले रुके, पृथ्वी पर कूद, अपने भाई को बाहो में भरा और देखा कि उन्होने अपनी चैतन्यता लुप्त कर दी थी।

"वह उनकी बगल में बैठ गये, उनका विकृत सिर चेहरा अपने घुटनों पर रखा और उनके मृतक चेहरे को उत्सुकता से देखने लगे। धीरे २ करके एक विचित्र भय, जैसा उन्हें कभी नहीं लगा, छायाओं का भय, एकांत का भय, निर्जन जगलों का भय और उस बदमाश भेड़िये का भय, जो अब उनके भाई की मृत्यु के लिये आया था, उनके ऊपर सवार होने लगा।

"छायायें गहरी होने लगीं, वृक्षो की शाखायें तेज ठण्ड से कड़क रही थीं। फ्रान्सिस को कपकपी आने लगी, वह वहाँ अपने आपको अशक्त अनुभव करने लगे और वहाँ अधिक ठहरने मे अयोग्य हो गए। वहाँ कुछ भी नही सुनाई दे रहा था, न तो कुत्ते की आवाज और न भौंपू की ही, यहाँ से चारों ओर जहाँ तक भी दिखलाई पड़ता था, सब शांत एव निस्तब्ध था। और उस अंधेरी निस्तब्धता, और सांयकाल की ठण्ड मे कुछ भयानकता एव विचित्रता थी।

"अपने सशक्त हाथों से उन्होंने जीन का शव उठाया और जीन पर घर ले जाने के लिये आड़ा रखा, तब धीरे से उसके पीछे सवार हुए, उनका मस्तिष्क भयानक एवं अपार्थिव चित्रो से परेशान हो रहा था, मानों कि उनमें वे चित्र भरे हुए हो।

"एकाएक इन भयों के बीच में एक विशाल आकार वहाँ से निकल कर गया। यह भेड़िया था। भय का बहुत जबरदस्त प्रभाव शिकारी के ऊपर छा गया, उनकी नसों में कुछ ठण्डी सी बर्फ के पानी की धार सी प्रवाहित होने लगी, और उन्होंने क्रास का चिन्ह बनाया। उस वीभत्स आँखों के फिर से दिखलाई दे जाने से वह इतने अप्रसन्न हो उठे जैसे कि एक महात्मा दुष्टों द्वारा पीछा किये जाने से हो जाता है। तब, उस मृतक शव पर दृष्टि पड़ते ही उनका भय शीघ्र ही क्रोध में परिवर्तित हो गया और वह असाधारण क्रोध से काप उठे।

"उन्होंने घोड़े को ऐड़ दी और उसके पीछे छोड़ दिया।

"वह उसका छोटे मोटे पेड़ों, खाइयों, और घने जगल के पेड़ों और एक दूसरे के अन्दर जाते हुए जगलों में से होते हुए, जिन्हें वह पहिचानते भी नहीं थे, एक सफेद से धब्बे की ओर जो उनसे दूर बहुत दूर उड़ता चला जा रहा था, क्योंकि रात्रि पृथ्वी को ढके जो लेती थी, (अपनी दृष्टि स्थिर किये हुए) पीछा करते चले जा रहे थे।

"मालूम पड़ता था कि कोई अदृश्य शक्ति ही उनके घोड़े को दौड़ा रही थी। वह अपनी गर्दन लम्बी करके, छोटे मोटे पेड़ों, चट्टानों को कुचलता हुआ, अपनी पीठ पर शव को आड़ा रखे हुए चौकड़ी भरता चला जा रहा था। वृक्षों की शाखें उसकी लगाम से टकरातीं, उसका सिर जहाँ से उनसे टकराता, वहीं रक्त से लाल हो आता, और उसकी जाघों पर–सवार की एड़ियों के निशान बन गये थे।

"एकाएक घोड़ा अपने सवार के साथ जगल के बाहर एक घाटी मे दौड़ता हुआ निकल आया और चन्द्र पहाड़ी के ऊपर निकल आया था। यह घाटी पथरीली थी और बड़ी २ चट्टानों से बन्द थी, उन चट्टानों को पारकर निकल जाना असम्भव था। भेड़िये के लिये, अब जिस रास्ते से वह आया था, लौटने के लिये उसके अतिरिक्त और कोई मार्ग नही था।

"बदले तथा खुशी की लहर से फ्रांसिस इतनी जोर से चिल्लाये कि उनकी आवाज बिजली के समान कड़कड़ाती हुई गूंज गई! हाथ में चाकू लिये हुए वह अपने घोड़े पर से कूद पड़ा।

" बालों वाला पशु अपनी गर्दन मोड़े हुए, उनकी प्रतीक्षा कर रहा था, उसके नेत्र दो तारा की भाँति चमक रहे थे। किन्तु युद्ध आरम्भ करने से पूर्व शक्तिशाली शिकारी ने अपने भाई पर दृष्टि पड़ते ही उसके शिर को अब जो केवल लोथ ही था, पत्थरों का सहारा देकर टिकाते हुए उसे एक चट्टान पर बिठला दिया और उसकी ओर देखते हुए जोर से बोले

' जोन देखो ! इधर देखो !'

"तब वह उस विशालकाय जीव पर टूट पड़े। उन्हें उस समय अपने अन्दर एक पर्वत को उठा कर फेंक देने तथा चट्टानों को कुचल डालने के लिये भी शक्ति पर्य्याप्त लग रही थी। पशु चाहता था कि वह प्राण हरने के लिये शिराओं में पंजों को घुसा कर उन्हें मार डाले। किन्तु उन्होंने बिना किसी हथियार उसे गर्दन से पकड़ कर धीरे २ तब तक दाबते रहे जब तक कि उसकी साँस न बन्द हो गई और वह मर न गया। और वह अप्रसन्नता की खुशी में अपने भयानक हाथों से उसे और भी अधिक दबाते हुए हँसे और अपनी जरंवक में चिल्लाने लगे

'जोन देखो ! देखो !' सब गतिविधियाँ बन्द हो गई। भेड़िये का शरीर निष्प्राण हो गया। वह मर चुका था।

" तब फ्रान्सिस ने उसे हाथों में उठा कर अपने बड़े भाई के चरणों पर पटक दिया और बहुत ही सम्वेदनात्मक स्वर से बोले' ' मेरे जोन ! देखो यह-यह-यह रहा वह !'

"तब उन्होंने जीन पर दोनों शव रक्खे और एक पर एक, तब वह अपने रास्ते से चल दिये।

"जब वह किले लौटे तब वह हँसते भी थे और रोते भी थे। अपनी विजय की प्रसन्नता पर पशु की मृत्यु की घटना सुनाते हुए उन्मादित होते तथा अपने भाई के नाम पर रोते और अपनी दाढ़ी नोंचते।

" बहुधा जब वे इस दिन को स्मरण करते, वह अपनी आँखों से अश्रु भर कर कहते' "मुझे विश्वास है कि यदि बेचारे जोन ने मुझे उस पशु से युद्ध करते देख लिया होता तो वह संतोष की साँस लेकर मरता।"

" मेरे पूर्वज की विधवा पत्नी ने इंकारा करने के प्रति अपने पुत्र के हृदय में भय उत्पन्न किया जो पिता से पुत्र में और फिर मुझमें भी विद्यमान है।"

मारक्विस डी' आरविले शान्त हो गया। किसी ने पूछा. "यह कहानी शान्त है या नहीं ? " और कहानी कहने वाले ने उत्तर दिया

" मैं आपसे कसम खाकर कहता हूँ कि यह आरम्भ से अन्त तक सही है।"

बस एक स्त्री अपने मधुर सुरीले स्वर में बोली " ऐसी लालसाऐं होना भी कितना सुन्दर है।"

द्वन्द

समाज मे सब लोग उसे "सुन्दर सिगनोलेस" के नाम से पुकारते थे। वह अपना नाम बतलाता विस्काउन्ट गोन्टरोम जोसेफ डी सिगनोलेस।

उसके विषय मे लोगो की कुछ ऐसी धारणा थी कि वह एक बहुत बड़ी सम्पति का अनाथ स्वामी था। उसका चेहरा मोहरा आकर्षित था। उसके अन्दर किसी परिहास का उत्तर देने मे पर्य्याप्त तत्परता थी, सुन्दर व्यवहार उसको प्रकृति में ही मिला हुआ था, सज्जनता एव गर्व उसके चेहरे से टपकते, उसकी मूँछें नयनाभिराम एव सुन्दर लगती थी—यह स्त्रियों को खुश भी करती हैं।

ड्राइङ्गरूमो, और वाल्जनृत्यो में उसको बुलाया जाता क्योंकि वह पुरुषों मे एक ऐसी भयनिश्चित शत्रुता उत्पन्न कर देता जो किसी पहलवान को देख कर हो जाती है। उस पर सदेह था, कि वह कुछ गुप्त प्रेम सम्बन्ध रखता था जिनके कारण वह बहुत स्वच्छन्द हो गया था। वह प्रसन्न-चित्त शान्त तथा एक पूर्णता प्राप्त किये हुए व्यक्ति की भाँति रहता था। उसके बारे में शोहरत थी कि तलवार चलाना बहुत अच्छा जानता था तथा उससे भी अच्छा पिस्तौल चलाना।

"यदि मेरी किसी से लड़ाई हो जाय" वह कहता, "तो मैं पिस्तौल ही चुँनू। उस अस्त्र से मैं अपने शत्रु को निश्चय ही मार डालूँगा।"

अब एक दिन सायकाल अपनी दो मित्र स्त्रियों का, उनके पति भी साथ में थे, थियेटर तक पहुँचाने गया और वहाँ जाकर उसने उन सबको टोरटोनी होटल में बर्फ खिलाने के लिये निमन्त्रित किया। वे लोग वहाँ दस मिनट तक रहे, उसने देखा कि पास की ही मेज पर एक सज्जन बैठे हुए उसकी पार्टी को एक स्त्री को लगातार घूर ही रहे हैं। वह कुछ परेशान सी

और अशान्त सी दिखलाई दी— उसने अपने नेत्र भी नीचे कर लिये और अंत में वह अपने पति से बोली.

"वह व्यक्ति मेरी ओर घूर रहा है। मैं उसे नहीं जानती कि वह कौन है, क्या आप उसे जानते है ?"

" नहीं बिल्कुल नहीं।"

नवयुवती कुछ क्रोधित सी हो और कुछ हसती सी हो उत्तर दिया, "यह बहुत बुरी बात है, वह मेरी बर्फ का सत्यानाश किये देरहा है।"

पति ने उत्तर देते हुए अपने कन्धे हिलाये.

" शा ! उसकी ओर कोई ध्यान मत दो । यदि हम सब दुष्ट प्रकृति के पुरुषो को जो हमे मिलते ही रहते है, देखते ही रहेगे तो इसका कोई छोर ही नहीं मिलेगा।"

किन्तु विस्काउन्ट वैसे ही उठा। वह उस अपरचित व्यक्ति द्वारा अपनी दी हुइ बर्फ को बिगडने नहीं दे सका। यह हानि तो उसकी थी, क्योंकि उसके ही साथ और उसके ही कारण उसके मित्र होटल में आये थे। तब यह मामला उसी से सम्बन्धित हुआ। वह इस व्यक्ति की तरफ बढ़ा और बोला

"श्री मान् जी, जिस ढङ्ग से आप इन युवतिओं की ओर देख रहे हैं, यह असह्य है। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप इस दृष्टि से देखना बन्द कर दें।"

दूसरे ने उत्तर दिया, "अच्छा तो आप मुझे शान्ति बनाये रखने की आज्ञा देरहे हैं, क्यों ठीक है ना ?"

दाँत भींचकर विस्काउन्ट ने उत्तर दिया. " श्री मान् जरा होश में रहिये नहीं तो आप मुझे अपना आपा खो बैठने पर बाध्य कर देंगे।"

उस सज्जन ने एक शब्द, गन्दे शब्द में उत्तर दिय, जो होटल में एक सिरे से दूसरे सिरे तक गूँज गया और प्रत्येक अथिति एक आकस्मिक मुद्रा से घूम कर देखने लग गया मानो किसी स्प्रिंग पर बैठा हो। जो लोग

सामने थे पीछे मुड़े, और बाकी दूसरों ने सिर उठाये, तीनों चपरासी अपनी एड़ियों पर घूम गये, दो स्त्रियाँ जो काउन्ट पर थीं उछल कर आगे कूद गई तब सबने उस दृश्य के ऊपर अपनी पीठें घुमाली मानो वे एक ही नियमो को मानने वाले दो मशीन की भाँति काम करने वाले पुरुष हो।

वहाँ बहुत शान्ति थी। तब अकस्मात बड़े जोर का शोर होने लगा, विस्काउन्ट ने अपने विरोधी को ठोक डाला था। हर कोई उनमें बीच बचाव करने को उठ दिया। ताश बाल दिये गये।

घर लौटने पर विस्काउन्ट कुछ मिनटो तक छोटे २ कदमों से कमरे में चहल कदमी करता रहा। वह इतना उत्तेजित था कि किसी विषय पर सोच भी नहीं पा रहा था। उसके मस्तिष्क में केवल एक ही विचार चक्कर लगा रहा था "एक द्वन्द्व" इस विचार के उठने पर भी उसके अंदर किसी भी प्रकार की कैसी भी भावना का समावेश नहीं हुआ। जो उसके लिये करना उचित था वह उसने किया था, जैसा उसे प्रकट करना चाहिये था वैसा ही उसने अपने आप को सिद्ध कर दिया था। लोग बाग इसकी बात करेंगे, सराहेंगे, और उसको धन्यवाद देंगे। उसने उच्चस्वर में जोर से कहा जैसा कि बहुधा विचारों में बहुत उलझ जाने पर लोग किया करते है

"यह कैसा जानवर आदमी है।"

तब वह विचार करने के लिये बैठा। उसे सुबह ही से कुछ गवाह (सैकण्ड) खोजने थे वह किसे चुने ? उसने बहुत ही प्रतिष्ठित एवं उच्चवर्गीय व्यक्तियों के बारे में जो उससे परिचित थे, सोचा। अंत मे इसने मार-क्किस डी ला टूरनोइयर और कर्नल बोर्डिन को जो एक बहुत बड़ा जमींदार और एक सैनिक जो बहुत तगडा था, लिया। उनके नाम समाचार पत्रों में छपेंगे। उसे लगा कि वह प्यासा था और उसने एक के बाद एक करके पानी के तीन गिलास पी डाले तब वह फिर घूमने लगा। उसने अनुभव किया उसके अंदर बहुत शक्ति थी। उसने सोचा कि अपने आपको गर्म मिजाज दिखलाने में हर बात से दृढ़ता और अक्खड़पन दिखलाने में, भयानक शर्तों और एक गम्भीर द्वन्द्व मांगने से उनका विरोधी अवश्य ही किसी न किसी बहाने उससे क्षमा माँग कर द्वन्द्व अस्वीकार कर देगा।

उसने उस कार्ड को जो उसने अपनी जेब से निकाल कर और मेज पर पटक दिया था एक दृष्टि से गैस के प्रकाश मे वैसे ही पढ़ा जैसे उसने रेस्टोरेन्ट, फिर गाडी में, और फिर घर आने पर पढा,जोर्ज लामिल,५१ मोरसी गली।" बस यही लिखा था।

उसने उन शब्दो की, जो एक साथ इकट्ठे किये गये और जो उसको इतने रहस्यमय लग रहे थे, जाँच की, उसकी बुद्धि भ्रम गई जार्ज लामिल वह कौन व्यक्ति था? उसने क्या किया था? उसने उस स्त्री की ओर उस ढङ्ग से क्यों देखा था? क्या वह घृणास्पद नहीं था कि एक अजनबी अनजान केवल इसलिये कि वह एक स्त्री की ओर घूर २ देखने मे प्रसन्नता का अनुभव करता था। उसके जीवन को एक ही फूँक में इस तरह से परेशान करे और विस्काउन्ट ने फिर जोर से दुहराया.

"कितना जंगली था?"

तब वह कार्ड की ओर अस्थिर दृष्टि से देखता, निश्चल खडा हुआ सोचता रहा। उस कागज के टुकडे के प्रति उसके हृदय में एक विशेष प्रकार का क्रोध, एक घृणा से भरा हुआ क्रोध जिसमे नुकसान पहुँचाने की विचित्र ही भावना भरी हुई थी, उत्पन्न हो आया। यह पूरी कहानी ही मूर्खतापूर्ण थी। उसने चाकू जो उसके हाथ मे खुला हुआ रखा निकाला। और उसने कार्ड को नाम लिखी हुई जगह के बीच में से उठाया, मानो कि वह किसी के ऊपर Poignard प्रयोग करने जारहा था।

अत उसे लडना चाहिये! उसे पिस्तौल या तलवार क्या चुननी चाहिये। क्योंकि वह अपने आप को अपमानित समझता था तलवार से उसे खतरा कम था, किन्तु पिस्तौल से यह हो सकता था कि उसका प्रतिद्वन्दी अपना नाम वापिस ले ले। तलवार से द्वन्द में बहुत कम मृत्यु देखी गई हैं,आपसी बुद्धिमानी है जो दोनों प्रतिद्वन्दियों को एक दूसरे को साँघातिक वार करने वाले स्थान से दूर ही बनाये रखती है, पिस्तौल से उसके जीवन का भय था, किन्तु बिना किसी मुठभेड के ही मामला तय हो सकता था और उसे विजय का सम्मान भी प्राप्त हो सकता था, वह जोर से बोला·

"दृढ़ रहना आवश्यक है। वह स्वय ही डर जायगा।"

उसकी आवाज ने उसे ही कंपा दिया और वह अपने चारो ओर देखने लगा। वह नरबस सा हो गया। उसने फिर एक गिलास पानी पिया, तब सोने के लिये कपड़े उतारने आरम्भ किये।

जब वह तैयार हो गया तब उसने रोशनी बुझा दी और अपने नेत्र बन्द कर लिये। तब उसने सोचा.

"कल मेरा सारा दिन इस झगड़े मे व्यस्त रहेगा। मुझे शात होने के लिये पहिले सोना ही चाहिये।"

अपने कपड़ों के अंदर वह काफी आराम में था किंतु उसे नींद न आ सकी। वह बार २ करवटें बदलता रहा, पाँच मिनट तक पीठ के बल लेटा रहा, बाँई ओर मुड़ा फिर दाँई ओर लुड़का।

वह अभी भी प्यासा था। वह उठा और उसने पानी पिया। तब उसमें एक प्रकार की अशान्ति उत्पन्न हो गई

"क्या मै डर गया?" वह बोला।

कमरे में जरा सा शोर होने पर और जब घडी घंटा बजाने वाली थी, स्प्रिङ्ग ने घूमने के लिये जरा सी किर-किर की तब उसके हृदय को क्यों इतनी मूर्खता से धडकना चाहिये? और उसकी बैचेनी इतनी अधिक थी कि उसे इन चीजों के बाद मे सास लेने के लिये मुँह खोलना आवश्यक पड़ जाता। वह इस बात की सम्भावना पर अपने आप ही तर्क करने लगा

"भय की बात ही क्या है?"

नहो निश्चय ही उसे भय नहीं करना चाहिये, क्योंकि उसने इसे अत तक पूरा करने का निश्चय कर लिया था और क्योंकि उसने बिना किसी क्षणिक आवेश के लड़ने का निश्चय कर लिया था। किंतु वह अपने आपको इतना अधिक परेशान लगा कि उसने मन ही मन पूछा.

"क्या यह हो सकता है कि मै अपने अहत्व के बावजूद भी भय-भीत हूँ?"

और इस भ्रम, इस अशान्ति एवं भय ने उस पर आक्रमण कर दिया। यदि उसकी इच्छा शक्ति से भी अधिक सशक्त, प्रभावशाली, एव दृढ़ शक्ति

इस पर विजय प्राप्त कर लेगी तो क्या होगा ? निश्चय ही यदि वह पृथ्वी पर जाना चाहे तो वहाँ चल फिर सकता था। किंतु यदि वह कांपा तो ? यदि वह अपनी चैतन्यता खो बैठा तो ? और उसने अपनी स्थिति, अपनी मर्यादा, अपने नाम के सम्मान के ऊपर विचार किया।

और उसके ऊपर केवल एक ही इच्छा ने अधिकार कर लिया कि वह उठे और दर्पण में अपना प्रतिबिम्ब देखे। उसने बत्ती को फिर से जलाया। जब उसने पालिशदार दर्पण में अपना प्रतिबिम्ब देखा तो उसे लगा कि उसने अपना प्रतिबिम्ब अभी तक पहिले कभी नहीं देखा था। उसके नेत्र बहुत बड़े दिखलाई दिये, निश्चय ही वह पीला पड़ा हुआ था, वह पीला था बहुत पीला।

वह दर्पण के सामने खड़ा ही रहा। उसने जीभ बाहर निकाल कर देखी मानों वह अपने स्वास्थ्य की हालत देखना चाहता था, और एकाएक, गोली के फैशन के पीछे, यह विचार मस्तिष्क में घुसा.

"कल के बाद इसी समय पर, शायद मैं मरा हुआ होऊँगा।"

और उसके हृदय की धड़कन बड़ी तीव्र हो गई।

"कल के बाद इसी समय पर शायद मैं मरचुका होऊँगा। यह व्यक्ति जो मेरे सामने है,यह जीव जिसे मैंने कितनी ही बार इस दर्पण में देखा है फिर नहीं रहेगा। यह कैसे हो सकता है ! मैं यहाँ हूँ, मैं अपने आपको देख रहा हूँ, मैं अनुभव कर रहा हूँ कि मै जीवित हूँ और चौबीस घन्टों के अन्दर मैं उस बिस्तर पर मृत, नेत्र बन्द किये हुए, ठण्डा, नि श्वास, विदा कर लिटा दिया जाऊँगा।"

उसने बिस्तरे पर करवट बदली और अपने आपको, उन्हीं कपड़ों में जिन्हें वह बाहर जाते समय पहिन गया था, अपनी पीठ पर खरोंचा हुआ दिखलाई दिया। उसके चेहरे पर मृत्यु की रेखाएँ थीं और थी उसके हाथों में कठोरता जो कभी भी नहीं हिल सकते थे।

तब अपने बिस्तरे से ही उसे भय लगने लगा और उसे फिर न देखने के कारण वह अपने स्मोकिंग रूम में पहुँच गया। यन्त्रवत् उसने एक सिगार निकाली, जलाई और यहीं चक्कर लगाने लगा। वह ठण्डा था वह अपने

व्यक्तिगत सेवक को जगाने के लिये घण्टी के पास गया, किन्तु रस्सी पर हाथ रखा ही रोक दिया

"वह आदमी शीघ्र ही पहिचान लेगा कि मै भयभीत हूँ।"

उसने घण्टी नहीं बजाई, किंतु आग जलाई। किसी वस्तु से स्पर्श होते ही उसके हाथ बेबसी की कपकपी से काप गये। उसका मन घूम रहा था, कष्ट से उसके विचार भयभीत, चचल एवं दुखपूर्ण हो गये थे, एक अजीब सी हालत उसके मस्तिष्क की हो गई थी मानो वह खूब शराब पिये हुए हो। और लगातार वह पूछने लगा.

"मैं क्या करने जा रहा हूँ ? मेरा क्या होने जा रहा है ?"

उसका सारा शरीर कपकपी और सिहरन से संचारित था; वह उठा, पर्दे खोलता हुआ खिड़की पर पहुँचा।

गर्मी का दिन था—दिन निकल आया। गुलाबी रग के आकाश ने सारे नगर की छतों और दीवारों को गुलाबी बना दिया था। प्रकाश के एक बहुत बड़े पुञ्ज ने, उगते हुए सूर्य के आलिगन की भाँति, जगते हुए संसार को आवरित कर लिया, और इस प्रकाश से विस्काउन्ट के हृदय में एक प्रसन्न, आसुरी एवं चंचल आशा ने प्रवेश किया ! कि बिना किसी बात के तय हुए, अपने गवाहों के जोर्ज लामिल से मिलने से पूर्व ही, यह जानने से पूर्व ही कि वह द्वन्द्व लड़ेगा या नही इतना अधिक भयभीत हो जाना मूर्खता थी।

उसने स्नानादि से निवृत्त हो कपड़े पहिने और दृढ़ चाल से बाहर निकला।

एक पंक्ति का स्थान छोड़ना

चलते २ वह निरन्तर दोहराता रहा

"मुझे चुस्त-बहुत चुस्त रहना आवश्यक है। मुझे सिद्ध करना चाहिये कि मै भयभीत नहीं हुआ हूँ।"

उसके गवाह मारक्विस और करनल उसकी इच्छानुसार कार्य करने को तैयार हो गये थे और उससे फुर्ती से हाथ मिलाने के पश्चात् उन्होने नियमो पर बहस की। करनल ने पूछा

"क्या तुम इस द्वन्द को साघातिक चाहते हो ?"

विस्काउन्ट ने उत्तर दिया "बिल्कुल।"

मारक्विस ने कहा "क्या तुम पिस्तौल का प्रयोग करोगे ?"

"जी हाँ।"

"बाकी सब शर्तों को नियम-बद्ध करने को हम तुम्हे स्वतन्त्र करते हैं।"

विस्काउन्ट ने शुष्क एव सिहरते हुए स्वर मे कहा

"आज्ञा पर बीस कदम, और हाथ नीचे करने की जगह हाथ ऊँचे करने पर। गोलियों का आदान प्रदान जब तक कि कोई साघातिक रूप से घायल न हो जाय।"

करनल ने सन्तुष्ट स्वर में उत्तर दिया

"यह बहुत ही सुन्दर शर्तें है। तुम्हारा निशाना अच्छा है-सब अवसर तुम्हारी ही ओर हैं।"

वे अलग २ हो गये। विस्काउन्ट उनकी प्रतीक्षा करने के लिये घर लौट आया। उसकी परेशानी, जो थोड़ी देर के लिये शान्त हो गई थी अब फिर क्षण प्रति क्षण बढ़ने लगी। उसे अपनी भुजाओं, टागो, और छाती मे एक प्रकार की कपकपी का लगातार संचारण अनुभव हो रहा था, वह न तो बैठ ही और न खड़ा ही शान्त रह सका। उसका गला सूख गया, और हर क्षण वह अपनी जीभ से शोर करता रहा।

उसने नाश्ता करना चाहा किन्तु खा नहीं सका। तब उसे शराब पीने का विचार आया जिससे उसमें साहस उत्पन्न हो जाय अत. वह रम की एक छोटी सी बोतल उठा लाया, जिसे वह छ गिलासों में एक के बाद एक करके पी गया।

उसके अन्दर जलती हुई अग्नि के समान एक गर्मी आई और वह आत्म विस्मृत होने लगा। उसने सोचा·

"मैने उपचार खोज लिया है और अब सब ठीक है।"

किन्तु एक घन्टे पश्चात् उसने बोतल खाली कर दी थी और उसकी परेशानी की हालत असह्य हो उठी थी। उसे जमीन पर लुढ़कने की, चिल्लाने की और काटने की मूर्खता पूर्ण धुन सवार हुई। तब रात हो गई।

घन्टी की एक आवाज ने उसको ऐसा धक्का पहुँचाया कि उसके अन्दर उठकर अपने गवाहों का स्वागत करने की भी शक्ति न रह गई। उसका 'गुड ईवनिंग' कहने का भी साहस नहीं होता था कि कहीं उसकी आवाज में परिवर्तन देखकर वे लोग यह न पहिचान जाँय कि वह भयभीत हो गया था।

करनल ने कहा

"जैसी शर्तें तुमने बतलाई थीं वैसा ही सब बन्दोबस्त हो गया है। तुम्हारे प्रतिद्वन्दी ने आक्रमण किये जाने वाले के लिये स्वीकार की जाने वाली सुविधाएँ मागी थीं किन्तु शीघ्र ही उसने अपनी मांग वापिस लेली और सब शर्तें स्वीकार कर लीं। उसके गवाह दो सैनिक हैं।"

विस्काउन्ट ने कहाः

"धन्यवाद।"

मारक्विस ने कहा·

"क्षमा करना यदि हम लोग केवल अन्दर आकर चले जाँय, क्योंकि हमें हजारों बातों पर ध्यान देना है। एक अच्छे डाक्टर की आवश्यकता पडेगी, क्योंकि द्वन्द तो सांघातिक चोट के ही पश्चात् बन्द हो सकेगा और तुम जानते हो गोलियां कोई खेल तो हैं ही नहीं। फिर एक ऐसा स्थान, जिसके पसमें ही कोई घर हो जहाँ कि यदि आवश्यकता पडे तो आहत व्यक्ति को हम लोग

ले जा सके, आवश्यक है इत्यादि २; अन्त मे इसमे बस अब दो तीन घन्टों की ही देर है ।"

विस्काउन्ट ने प्रयत्न कर दुबारा कहा.

"धन्यवाद ।"

करनल ने पूछा·

" तुम्हे यह क्या हो गया है ? तुम शान्त हो ?"

" हाँ बहुत शान्त हूँ, धन्यवाद ।?

दोनों व्यक्ति चले गये ।

•

जब वह फिर अकेला रह गया तब उसे लगा कि वह पागल हो गया था । उसकी नौकरानी ने लेम्प जला दिया और वह मेज पर कुछ पत्र लिखने को बैठा। एक कागज के सिरे पर लिखने के पश्चात् "यह मेरी परीक्षा है ।" वह काँप कर उठा और उसे उसने दूर रख दिया, इस समय वह दो विचार बनाने में या यह निश्चय करने मे कि उसे क्या करना चाहिये अक्षम था ।

इस तरह वह द्वन्द्व लड़ने जा रहा था । उससे बचने का कोई मार्ग था नहीं । इस भांति वह लड कैसे सकता था ? उसकी इच्छा लड़ने की थी, उसकी कामना थी और दृढ़ निश्चय था कि वह ऐसा करे, और फिर भी लगा कि उसके मन के सब प्रयत्नो और इच्छाओ की शक्ति के होते हुए भी उसके अन्दर उस स्थान तक पहुँचने की क्षमता नही थी । उसने द्वन्द्व की, अपने रवैये और अपने प्रतिद्वन्दी की स्थिति की कल्पना करनी चाही।

बार २ उसके मुँह के अन्दर दाँत जरासा शोर करते हुए किटकिटा जाते । उसने चेत्यूविलार्ड का द्वन्द्व युद्ध का कोड उठाकर उसे पढ़ने की चेष्टा की । तब उसने मन ही मन पूछा·

"क्या मेरा प्रतिपक्षी कभी लड चुका है ? क्या वह प्रसिद्ध है ? क्या वह उच्चवर्ग का है ? मुझे कैसे मालूम हो ? उसे बोरन डी व्रौक्स की पिस्तौल से लड़ने वाले दश व्यक्तियों के ऊपर लिखी गई किताब का स्मरण हुआ और

वह दौड़ कर उसे उठा लाया तथा एक सिरे से दूसरे सिरे तक पन्ने पलट डाले। उसमें जार्ज लामिल का नाम नही लिखा था। फिर भी यदि यह व्यक्ति दक्ष नहीं होता तो इस भयानक अस्त्र एवं भीषण शस्त्रो को स्वीकार नहीं करता।

जाते हुए गास्टिने रैनेट्स का एक छोटा बक्स, जो एक छोटी सी टिकटी पर रखा हुआ था, उसने खोला और उसमे से एक पिस्तौल निकाल कर उसे चलाने की स्थिति में पकड़ ली। और अपनी बाँह ऊँची उठाई। किन्तु वह सिर से लगाकर पैर तक काँप गया और बन्दूक ने अपना प्रभाव उसकी नस २ पर छोड़ दिया।

तब वह बोला "यह असम्भव है, मैं इस हालत में नही लड़ सकता हूँ।"

उसने नली के सिरे की ओर देखा, उस छोटे काले सूराख की ओर जो मृत्यु थूकता रहता है, उसने अपमान के विषय में सोचा, अपने परिकर मे फुसफुसाहटों के विषय में सोचा। ड्राइङ्ग रूमों की हँसी दिल्लगी, स्त्रियों की फटकारो, समाचार पत्रो की टिप्पणियों और इन सब अपमानों के विषय मे सोचा जो कायर लोग उसका करते।

उसने अस्त्र की परीक्षा जारी ही रखी और काक को उठाते ही उसने एकाएक चिनगारी सी निकलती देखी। यह पिस्तौल भूल से अचानक भरी हुई थी उसको इस खोज पर अनिवर्णनीय आनन्द प्राप्त हुआ।

दूसरे व्यक्ति की उपस्थिति में उसे वह शान्ति, वह सहनशीलता, जो उसे होनी चाहिये थी, नहीं मिल सकती थी और वह हमेशा २ के लिये समाप्त हो सकता था। उस पर दाग लगाया जायगा, बदनामी के साथ उसका नाम लिखा जायगा और दुनियाँ से भुला दिया जायगा। और वह जानता था कि यह शाति, एवं वीरता-पूर्ण कार्य वह नहीं कर पायेगा, उसे यह अनुभव भी हो रहा था। फिर भी वह बहादुर था क्योंकि वह लड़ने की इच्छा तो करता था। यह बहादुर था, क्योंकि ·· । विचार जो उसके अन्दर उत्पन्न हुआ उसके मस्तिष्क में भी कार्यान्वित हुआ क्योंकि अपना मुँह फाड़

कर उसने धीरे २ पिस्तौल की नली को अपने गले में घुसेड़ लिया और उसका घोड़ा दबा दिया

आवाज सुन कर उसका व्यक्तिगत सेवक दौड़ा २ उसके पास आया तो वह देखता क्या है कि उसका स्वामी अपनी पीठ के बल औंधा मरा हुआ पड़ा था। खून की एक धार मेज पर रखे हुए सफेद कागज पर जा गिरी थी और उसने कुछ लिखे हुए पर एक लाल धब्बा बना दिया था। वे चार शब्द थे.

"यह मेरी परीक्षा है।"

मैडम टेलियर की दावत

पुरुष वर्ग वहाँ रात को ग्यारह बजे इसी भाँति जाता जैसे वह किसी होटल मे जा रहा हो। यहाँ उनमें से छः या आठ व्यक्ति मिलते, वे लोग व्रत या उपवास करने वाले नहीं होते थे वरन् होते थे सम्माननीय व्यापारी, और सरकार में नौकरी करने वाले नवयुवक। वे अपनी चारट्र्ज पीते, लड़कियों को छेड़ते या फिर मैडम से गम्भीरता से बातें करते तब रात्रि के बारह बजे वे लोग अपने २ घर जाते। मैडम का सम्मान हर कोई करता था। नव-युवक कभी २ रात्रि वहीं व्यतीत करते थे।

वह छोटा सा सुविधाजनक मकान सेन्ट एटेने की चर्च के पीछे एक गली के कोने में था। खिड़कियो से जहाजों से भरे डेक दिखलाई देते थे, जहाँ उनमे से सामान उतारा जाता था। और पहाड़ी पर पुरानी भूरे रङ्ग की वर्जिन की चर्च भी वहाँ से दिखलाई पड़ती थी।

मैडम, योर प्रान्त के किसानों के मालिकों के सम्माननीय परिवार में से थी और उसने इस व्यापार को दर्जी या टोप बनाने के व्यापार की भाँति प्रारम्भ किया था वेश्या वृत्ति के विरुद्ध नोरमेंन्डी के गावों में बड़े नगरों की भाँति पहले से ही निश्चित धारणा इतनी भयंकर एव हृदयो में गहरी बैठी हुई नहीं होती। किसान केवल कहा करते हैं

"धन्धा अच्छा है।" और वह अपनी पुत्रियो को जैसे लड़कियों का स्कूल रखने के लिये भेजते हैं वैसे ही भूखी लड़कियों का हरम रखने के लिये भेजते हैं।

यह मकान उसके वृद्ध चाचा का था· जिससे अब उसे प्राप्त होगया था। मिस्टर और मैडम ने, जो पहले पेवेरोट के पास सराय का धन्धा कर चुके थे, यह सोच कर कि फेकेम्प में इस व्यापार मे अधिक लाभ होगा, अपने उस मकान को बेच डाला। वे उस व्यापार के निर्देशन के लिये, जो एक कर्त्ता के अभाव मे गिरता जारहा था एक दिन मनोहर सुप्रभात में आ

पहुँचे। वे लोग अपने व्यवहार मे काफी अच्छे व्यक्ति थे और शीघ्र ही अपने नौकरों तथा पास पड़ोसियो मे घुल मिल गये।

मिस्टर की दो वर्ष हुए उस नये धन्धे में आलस्य और अपरिश्रम के कारण लकवे से मृत्यु हो गई थी। वह काफी मोटा हो गया था और उसका स्वास्थ्य गिर चुका था। मैडम अब विधवा हो गई थी। अत सब आने जाने वालो को उसकी आवश्यकता थी, किन्तु लोग कहते थे कि व्यक्तिगत रूप में वह सर्व गुण सम्पन्न थी। यहाँ तक कि उसके मकान की लड़कियों को भी उसके विरुद्ध कहने को कुछ नहीं मिल पाता। वह लम्बी, तगड़ी और मृदुल स्वभाव की थी और उसका रङ्ग जो उस मकान के अन्धकार मे जिसकी खिड़कियाँ बहुत कम खुला करती थीं, पीला हो चुका था और इस भाँति चमकता था मानो उसके चेहरे पर वार्निश कर दी गई हो। उसके नकली बालों के घुँघराले गुच्छे उसके चेहरे को यौवन-सम्पन्न बना देते थे और उसके अध्यक्षीय चेहरे से बिल्कुल स्पष्ट विरोधाभास प्रगट करते। वह सदैव प्रसन्न एवं मुस्कराती रहती तथा उसे परिहास प्रिय थे किन्तु वह अपने नये धन्धे में पूरी तरह से खुल न सकी थी अत उसके चेहरे पर लज्जा छाई रहती थी। भद्दे शब्दों से उसके हृदय को ठेस पहुँचती, जब कोई गन्दे वातावरण मे पला हुआ नवयुवक उसके स्थान को असली नाम से सम्बोधित करता तब वह क्रोधित एव दुखी हो जाती थी।

एक शब्द में, उसका मन शुद्ध था और यद्यपि वह अपनी स्त्रियो से मित्रो की भाँति व्यवहार करती तब भी वह कभी २ कह ही देती कि वे और वह दोनो ही एक मिट्टी के बने हुए नहीं हैं।

सप्ताह मे एक या दो बार वह गाड़ी किराये पर लेती और अपनी स्त्रियों मे से कुछेक को गाँव में ले जाती, जहाँ वे सब छोटी सी नदी के किनारे घास पर अपना मन बहलाया करतीं। वे स्कूल से छूटी हुई लड़कियो का सा व्यवहार करती और दौड़ लगातीं या बच्चों के से खेल खेला करतीं। वहीं घास पर वे ठण्डा भोजन करती, साइडर शराब पीतीं और हलकी सी थकावट अनुभव कर रात को घर लौटती। गाड़ी मे मैडम का,

माँ की दृष्टि से, आलिङ्गन लेतीं क्योंकि वह बहुत दयालु तथा अच्छी थीं। घर में दो द्वार थे। कोने मे यहाँ एक तरह का नीचा पटावदार होटल था जिसमें नाविक एवं नीची जातियो के लोग रात को आते जाते थे और व्यापार के उस भाग को चलाने के लिये उसी काम के लिये विशेषतया उसके पास दो लड़कियाँ थी जो चौकीदार की सहायता से जिसका नाम था फ्रेडरिक और जो ठिगना, गन्जी चाँद का, निमुच्छा, तथा घोड़े की तरह शक्तिशाली था, हिलने वाली सफेद पत्थरों की मेजों पर बीयर और शराब की आधी भरी बोतलों को रख, उनके घुटनों पर दूर बैठ कर, उन्हें पिलातीं।

अन्य तीन लड़कियाँ (वे सब मिला कर पाँच थी) एक प्रकार का शासकीय मण्डल थी, और पहिली मन्जिल पर आने जाने वालो के लिये नियुक्त थीं। वे नीचे तब ही जातीं जब कि पहली मन्जिल पर कोई नहीं होता और नीचे उनकी आवश्यकता होती। जूपीटर का अथिति-गृह, जहाँ व्यापारी वर्ग इकठ्ठा होता था, नीले कागजों से सजाया हुआ था तथा लडा की हंस के साथ बनी हुई बडी छवि से सुसज्जित था। कमरे में एक घुमाव-दार सीढी से, जिसका गली मे छोटा सा दरवाजा था, जाया जाता था। ऊपर तारों की छड़ों के पीछे, बहुत से शहरों मे किसी सन्त के चरणों में रखे हुये दीपकों की भाँति, एक दीपक सारी रात जलता रहता था।

मकान जो पुराना और सीला हुआ था, सीलन की दुर्गन्ध देता था, कभी कभी उसके मार्ग में यू-डी कोलन की सुगन्धि आती, या सीढियों के खुले अधखुले दरवाजों से नीचे बैठे हुये लोगों का शोर पहली मन्जिल में सुनाई दे जाता, जिसने वहाँ बैठे हुये लोगों को दुख ही होता था। मैडम जो अपने ग्राहकों से काफी परिचित थी या मित्रता की भावना रखती थीं, अथिति गृह से नही जाती थी। वह नगर की गतिविधियों मे रुचि रखती थी और वे लोग उसे उनसे परिचय कराते रहते थे। उसका गम्भीर वार्ता-लाप उन तीनों स्त्रियों की बातचीतों से भिन्न था, यह प्रतिदिन सायंकाल नागरिक स्थानों पर शराब का गिलास पीकर बिगड़ी हुई लड़कियों के साथ उन मौज करने वाले लम्बे तगड़े व्यक्तियों के मजाकों से भिन्न था।

पहिली मजिल पर रहने वाली लडकियो के नाम थे फरनेन्डे, रास्फेले, और रोजा उर्फ जेड । क्योकि उसका गिरोह बहुत छोटा था अस उसने हर किस्म की, हर जाति की लड़कियों को इकट्ठा करने का प्रयत्न किया था जिससे हर ग्राहक को अपने २ आदर्श की, जहाँ तक हो सके वहाँ तक, प्राप्ति कर सके । फरनेन्डे सुन्दर ड्रैस का प्रतिनिधित्व करती, वह बहुत लम्बी बल्कि मोटी, और चुस्त थी । वह एक गाँव की लडकी थी जिसके मुँह पर चित्तियाँ पड़ीं हुई थी और जिसके सिर से छोटे, हल्के, बेरङ्ग के सन की भाँति कंधे से कढ़े हुए बाल थे ।

रास्फेले जो कि मार्शेलीज से आई थी एक सुन्दरी यहूदिन की होड करती थी । वह पतली थी, उसके गालो की हड्डियाँ उठी हुई थीं जिन पर गालों की लाली लगी रहती थी तथा उसके काले २ घुघराले बालों के छल्ले जिनपर पोमेड लगी रहती थी, उसके माथे पर झूमते रहते थे । उसके दाएँ नेत्र मे यदि एक फुली नही होती तो उसके नेत्र अवश्य सुन्दर लगते । उसके जबडे चौड़े थे जिनमें कि ऊपर दो नकली दाँत अन्य सब दाँतो के गन्दे रंग से बिल्कुल भिन्न चमकते थे और उसकी नाक रोमनों की सी थी ।

रोजा उर्फ जेड् के पाव छोटे तथा पेट के समान ही वह बिल्कुल गोल गुट्टी थी । वह सुबह से लेकर शाम तक कर्कश स्वर में भद्दे और वासना पूर्ण गाने गाती रहती, मूर्खतापूर्ण तथा कभी अन्त न होने वाली कहानियाँ कहती रहती और बातें करना तभी बन्द करती जब खाना खाना होता या बातें करने के लिये खाना भी छोड कर उठ बैठती । वह कभी चुप नहीं रहती, और अपने मुटापे तथा छोटे पावों के बावजूद भी गिलहरी की तरह चचल थी। और उसकी हँसी कभी यहाँ, कभी वहाँ, कभी बिस्तरे पर, कभी कोने मे हर जगह बिना ही किसी बात के, ही ही और ठी ठी में निरन्तर ही गूंजती रहती ।

नीचे की मजिल की दोनो स्त्रियों के नाम थे लुइस उर्फ 'ला कोकोटे' और फ्लोरा जिसको कि इसके जरा से लँगड़ाने के कारण 'बालनशियेर' के नाम से पुकारा जाता था । पहली तो एक तिरंगे पटके के सङ्ग सदा 'लिबर्टी' की भाँति कपडे पहिनती और दूसरी ताँबे के सिक्कों की एक माला के साथ,

जो उसके गाजर के से बालो मे हर कदम पर हिलती और बजती एक स्पेनिश स्त्री की भाँति कपडे पहिनती। दोनो ही ऐसी लगती मानो किसी कारनीवाल के रसोइये हो और ऐसी लगतीं जैसे नीची श्रेणियो की औरतें साधारणतया होती हैं। वे उनसे न तो सुन्दर ही और न असुन्दर ही लगतीं। दर असल, वह किसी सराय की नौकरानियो की भाति लगती थीं। अत दोनों ही 'पम्बो' कहलाती थीं।

मैडम की सन्तोष दिलाने वाली बुद्धि को तथा उसके हर समय अच्छे बने रहने वाले स्वाभाव को धन्यवाद कि उन पांचों स्त्रियो पर एक शान्त ईर्षा, जो बहुत कम अशान्ति से परिवर्तित होती, छाई रहती। और वह स्थान, जो कि उस छोटे से कस्बे मे अन्यत्र नहीं था, दर्शको से घिरा रहता था। मैडम को इसे सम्मान प्राप्त करवाने मे बहुत सफलता मिली थी, वह इतनी विनीत एव हर एक के प्रति कृतज्ञ रहती, उसके निष्कपट हृदय को इतनी ख्याति थी कि उससे बहुत सोच समझकर व्यवहार किया जाता था। उसके स्थायी ग्राहक उसके ऊपर अपना धन व्यय करते तथा जब वह उनके साथ विशेष मित्रता बर्तती तब प्रमुदित होते। दिन में वे जब उससे मिलते तब कहते.

"आज शाम को तुम जानती हो कहाँ," ठीक जैसे लोग कहते हैं "भोजन के बाद होटल मे।" एक शब्द मे, मैडम टेलियर का मकान कहीं जाने को था, और उसके ग्राहक वहाँ रोज मिलने से बहुत कम चूकते।

मई के महीने में एक दिन सांयकाल मिस्टर पोलिन को, जो एक टिम्बर मर्चेन्ट था तथा पहले मेयर रह चुका था, पहले पहल पहुँचने पर किवाड बन्द मिले। खिड़की के पीछे रखी रहने वाली छोटी लालटेन नहीं जल रही थी, मकान के अन्दर से कोई आवाज भी नहीं आ रही थी, हर चीज मृतक सी लग रही थी। उसने पहले तो दरवाजा धीरे से खटखटाया फिर जोर से किन्तु कोई उत्तर न आया। तब वह चुपके से सड़क पर आ गया, बाजार में पहुँचते ही उसे मि० डूबंट, बन्दूकसाज मिला। वह भी वहीं जा रहा था, अत वे दोनों एक साथ ही चल दिये किन्तु फिर भी उन्हें कोई सफलता न हुई। किंतु एकाएक उन्हें पास मे शोर की एक जोरदार आवाज आई

और उन्होने मकान क कोने पर जाकर कुछ फ्रासीसी तथा अग्रेज नाविक देखे, जो अपने घूसो से बद किवाडो पर प्रहार कर रहे थे ।

दोनो व्यापारी वहाँ से जल्दी ही बच निकले कि कहीं उन्हे भी उसमें शामिल न होना पडे । किंतु एक धीमी सी शि ने उन्हे रोक दिया, यह मि० टूरनेवो, मछली का इलाज करने वाला था जिसने उन्हें पहिचान लिया था और जो उनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना चाह रहा था । उन्होने उसे सब बातें बतला दी, और वह उन दोनो से अधिक परेशान हो उठा क्योंकि वह विवाहित पुरुष तथा एक परिवार का पिता अपने मित्र डाक्टर पोरडे की राय से, सफाई की पोलिसी के लिये, सप्ताह में एक दिन केवल शनिवार को ही वहाँ जाया करता था । यह उसकी क्रमानुगत सध्या थी, और अब वह पूरे सप्ताह तक उससे वंचित रहेगा ।

तीनो व्यक्ति घाट तक साथ ही साथ गये और मार्ग में उन्हे बै कर का लडका नवयुवक फिलिप्स जो वहा अक्सर आया जाया करता था तथा कलक्टर मि० फिनिप्पीज मिला । वे सब आखरी प्रयत्न करने को रयू आक्स जूइफ्स लौटे । किंतु उन्मत्त नाविक उस मकान को घेरे हुए, उसके दरवाजो पर पत्थर फेक रहे तथा चिल्ला रहे थे और पहली मजिल के पाचो ग्राहकों से जितनी जल्दी हो सका उतनी ही जल्दी वह वहाँ से लौट दिये और सडको पर निरुद्देश्य घूमने लगे ।

अब उन्हें मि० डूपूइस इ स्योरे सएजेन्ट और तब व्यापारिक मण्डल के जज मि० वासी मिले और वे सब लम्बी सैर करने सबसे पहले घाट की ओर चल दिये । वे एक पत्थर की चट्टानों की बनी हुई दीवाल पर बैठ गये और ज्वार भाटो को देखने लगे । जब वे लोग थोडी देर तक बैठे रहे तब मि० टूरनेवो ने कहा "यहाँ कुछ मजा नहीं आया !"

"वास्तव मे बात सही है ।" मि० फिनिप्पिज ने उत्तर दिया और वे फिर आगे चल दिये ।

सडक से चलते २ पहाडी की चोटी तक पहुँच जाने के बाद वे लकड़ी के पुल के जो रेटेन्यू के ऊपर बना हुआ था, ऊपर गये । वे रेलवे के पास आये

और फिर बाजार में पहुँचे ही थे कि एकाएक मि० फिनिप्पीज और मि० टूर-नेवो मे एक खाने योग्य खुम्बी के ऊपर झगड़ा हो गया। उनमे से एक कहता था कि वह उसे पडौस मे ही पड़ी मिली थी।

पहले से ही परेशान होने के कारण वे दोनो क्रोध मे थे और यदि इस समय अन्य लोगो ने बीच बिचाव नहीं किया होता तो उनमें घूसेबाजी हो जाती। मि० फिनिप्पीज क्रोध में उन्मत्त एक ओर चला गया। फिर शीघ्र ही एक्स मेयर मि० पोलीन, और इन्स्योरेन्स एजेंट मि० डूपूइस में कलक्टर की तनख्वाह पर और उसकी कमाई पर कि वह कितना कमाता था विवाद छिड गया। वे एक दूसरे से आपस मे अपमानजनक वचन कहने लगे कि एकाएक बड़ी तेज चिल्लाहट सुनाई दी और नाविको का झुण्ड जो अब प्रतीक्षा करते २ आकुल हो उठा था मैदान मे आया। वे दो दो कर के हाथ मे हाथ डाले कतारों मे चल रहे थे। उन्होंने एक लम्बा जुलूस बना लिया था और क्रोध में उन्मत्त चिल्ला रहे थे। ये सब लोग जाकर एक बडे से फाटक के अन्दर छिप गये और वह आवाज गिरिजाघर की ओर जाकर धीरे २ विलीन हो गई। वह आवाज फिर भी बहुत देर तक सुनाई देती रही और बाद मे कही जाकर पुन शान्ति हुई। मि० पोलीन और मि० डूपूइस एक दूसरे से अभिवादन किये बिना ही भिन्न २ दिशाओ में चल दिये।

बाकी चारो फिर चले और स्वाभावतः ही मैडम टेलियर के मकान की दिशा मे गये। वह अभी भी बन्द और शान्त था। एक शांत किंतु जिद्दी और पियक्कड आदमी उस होटल के द्वार को खटखटा रहा था। वह रुका और उसने फ्रेडरिक चौकीदार को धीमे स्वर में आवाज दी, किंतु कोई उत्तर न पाकर वह दरवाजे की सीढ़ियो पर ही बैठकर आगे घटने वाली घटनाओं की प्रतीक्षा करने लगा।

अन्य लौटने जा ही रहे थे कि सडक के दूसरे सिरे पर से शोर मचाता हुआ नाविकों का गिरोह फिर से दिखलाई दिया। फ्रांसीसी नाविक चिल्ला रहे थे "मार्शेलीज़" और अगरेज नाविक, "ब्रिटेन पर शासन करो।"

कोई जहाज दीवाल से टकरा गया था और ये पियक्कड दानव, घाट की ओर भागे, जहाँ दोनों राष्ट्रो में युद्ध छिड गया। इसमें एक अंग्रेज की बाँह टूट गई और एक फ्रांसीसी की नाक फट गई।

पियक्कड जो द्वार के बाहर ही रुक गया था, पियक्कडो और बच्चो की तरह जब वे परेशान हो जाते हैं, बैठा २ अब रो रहा था, और अन्य सब लोग जा चुके थे। धीरे २ कर उस नगर मे शोर शांत हो गया और कभी २ उठने वाले छोटे मोटे शोर दूर जाकर शात होते चले गये।

एक व्यक्ति मि० टूरनेवो मछली का इलाज करने वाला, इस बात पर परेशान होकर कि उसे फिर एक सप्ताह तक रुकना पड़ेगा अभी तक घूम रहा था। उसे उम्मीद थी कि कुछ न कुछ हो जायगा, किंतु क्या होगा यह वह नही जानता था, किंतु उसे पुलिस पर क्रोध आ रहा था कि एक सार्वजनिक कार्य एव लाभ के लिये उत्साहित किया हुआ व्यवसाय, जो उसकी शक्ति के अंदर की बात थी, उसे इस तरह बद किये जाने की क्यो इजाजत दी गई।

वह फिर वहाँ गया, उसने दीवालो को जाचा और कारण मालूम करना चाहा। द्वार पर उसने एक बोर्ड लगा हुआ देखा अत उसने एक मोम-बत्ती जलाई और उसे पढ़ा। उस पर टेढ़े मेढ़े अक्षरों मे लिखा था. "धर्म-दीक्षा केकारण बंद।"

तब वह वहाँ ठहरना व्यर्थ समझ उस पियक्कड को उसी द्वार के बाहर प्रगाढ निद्रा में लीन फर्श पर लेटा छोड़ कर चला गया।

दूसरे दिन सब स्थायी ग्राहक बगल में कागजो का बण्डल दबाये कोई किसी, कोई किसी बहाने रयू आक्स जुइफ्स गये और सबने सरसरी दृष्टि से उस रहस्यमय बोर्ड को पढा

"धर्म-दीक्षा के कारण बद।"

२

मैडम का एक भाई उसकी मातृभूमि विरविले, जो कि योर प्रांत में थी, में बढ़ई था। वेटोट में जब मैडम् सराय का काम करती थी तब वह अपने भाई की एक लडकी कान्स्टेन्स रिवेट की धर्म-माता बनी थी, वह स्वय भी

अपने पितृपक्ष से रिवेट थी। उसका भाई, जो यह जानता था कि उसकी बहिन की आर्थिक अवस्था अच्छी थी उसे अपनी आखो से ओझल नहीं करता था। उन दोनों के रहने वाले स्थानो मे काफी अन्तर था और वे अपने २ व्यवसाय के कारण अलग २ रहते थे और आपस मे मिलते भी बहुत कम थे। किंतु जब लडकी की अवस्था १२ वर्ष की हो गई और उसको दीक्षित किये जाने का समय आ गया तब उसने अपनी बहिन को लिखने का अवसर नही खोया और उसको उस धर्मदीक्षा समारोह में उपस्थित होने के लिये लिखा। वृद्ध माँ बाप की मृत्यु हो चुकी थी अत मैडम अस्वीकार न कर सकी और उसने उस निमन्त्रण को स्वीकार कर लिया। उसके भाई, जिसका नाम जोसेफ था, को आशा थी कि अपनी बहिन की ओर तनिक ध्यान देने और अपनापन जतलाने से वह अपनी सम्पत्ति को उस लडकी के नाम कर देगी, क्योकि उसके कोई अपना बच्चा तो था ही नहीं।

अपनी बहिन के व्यवसाय से उसे तनिक भी चिन्ता नहीं थी, अलावा उसके विरविले में कोई भी इस बात के बारे मे जानता भी नहीं था। जब कभी वे लोग मैडम के बारे में बाते करते, वे केवल इतना ही कहा करते "मैडम टेलियर फेकेम्प में रह रही है। जिसका यह अर्थ हो सकता था कि वह वहाँ अपनी ही आमदनी पर रह रही थी। विरविले व फेकेम्प के अन्दर बीस मील का अन्तर था, और एक ग्रामीण किसान के लिये जमीन के बीस मील एक शिक्षित व्यक्ति के समुद्र यात्रा से भी अधिक थे। विरविले के निवासी रोम से आगे कभी नही गये थे, और फेकेम्प के व्यक्तियों को पाँच सौ मकानों के गाँव में जो मैदान के बीच में और दूसरे किले मे अवस्थित था, कोई आकर्षण दिखलाई नहीं देता था। किसी भी तरह, उसके व्यापार के विषय में कुछ भी नही जाना जा सकता था।

किन्तु दीक्षा समारोह पास आता जा रहा था और मैडम बहुत परेशान थी उसके पास कोई सह-अध्यक्षा नही थी और यह घर को एक दिन के लिये भी नहीं छोड़ना चाहती थी। किंतु उसको भय था कि नीचे की

मन्जिल वाली लडकियो और ऊपर की मन्जिल वाली लड़कियो में विद्रोह अवश्य हो जायगा, कि फ्रेडरिक शराब अधिक पी लेगा और उस हालत में किसी को भी एक शब्द पर ही ठोक-पीट डालेगा ! अन्त मे, किसी भी तरह उसने उस आदमी को छोड़ कर बाकी सबको अपने साथ ले जाने और उसे एक दिन की छुट्टी देने का निश्चय किया।

जब उसने अपने भाई से पूछा तब उसने कोई आपत्ति न की किन्तु एक रात उन सबको रखने की जिम्मेवारी ले ली। अत: आठ बजे की एक्सप्रेस से मैडम तथा उसकी अन्य साथियाँ सैकन्ड क्लास मे बैठकर चल दीं। ब्यूजेले तक वे लोग अकेले ही थे और चकर-चकर बाते करते ही रहे, किन्तु उस स्टेशन पर डिब्बे में एक दम्पत्ति ने प्रवेश किया। पुरुष, एक प्रौढ़ किसान लौट कालर का नीला ब्लाउज पहने हुये था, जिसकी बाँहें कलाई पर तङ्ग थीं और उस पर सफेद रेशम से कढ़ाव हो रहा था, और उसने एक पुराना हैट पहिन रखा था। उसके एक हाथ मे एक बड़ा सा हरा छाता था और दूसरे मे एक बडी टोकरी, जिससे से तीन भयभीत बतखों के सिर दिखलाई दे रहे थे। स्त्री जो ग्रामीण ढङ्ग के अच्छे कपडों मे लदी पड़ी थी, चिड़िया की सी शकल की थी और उसकी नाक हुक की तरह नुकीली थी। वह अपने पति के सामने ही बैठी हुई थी और हिलती तक नहीं थी क्योंकि इतनी तेज तुर्राक सगति मे पाकर वह आश्चर्यचकित हो गई थी।

गाडी के अन्दर भिन्न २ चमकीले रङ्गो के वस्त्र थे। मैडम एड़ी से चोटी तक नीली शिल्क से लदी हुई थी और उसकी ड्रैस पर नकली फ्रेन्च कश्मीरे की चमकीली शाल थी फरनन्डे स्कोटिस ड्रैस पहिने हुए थी जिसकी चोली, जिसे उसके साथियो ने इतनी अधिक कसदी थी जितनी अधिक उनसे कसी जा सकती थी, ने उसकी छातियों को दो गुम्मजों की भाँति कर दिया था जो लगातार नीचे ऊपर हिल रही थीं, मानो किसी ठोस वस्तु के नीचे कोई तरल पदार्थ हो। एस्फेले, एक परदार स्कोच टोपी पहिने हुये थी, जो चिडियो से भरे घोसले की भाँति लग रहा था, और एक सिल्क ड्रैस, जिस पर सुनहरी बूँदे बनी हुई थी, पहिने हुए थी, उसके

अन्दर कुछ ऐसा पुरबियापन था कि वह (ड्रैस) उसकी यहूदियोंकी शकल को फब जाती थी। रोजा उर्फ जेड गुलाबी झालरदार पेटीकोट पहिने हुए थी और एक मोटी बतख की तरह बौनी सी लग रही थी, जबकि दोनों पम्पे ऐसी लग रही थीं मानो उन्होंने अपनी ड्रैस बाबा आदम के जमाने के पुराने फूलदार पर्दों मे से काटकर बनाई हों।

स्त्रियों ने,यह देखते ही कि वे अब उस डिब्बे में अकेली नहीं रह गई, गम्भीर भाव धारण कर लिये और उन विषयों पर वार्तालाप करने लगी, जिससे दूसरों के मन में उनके विषय में अच्छी धारणा बन सके। किन्तु बोल्बेक पर हल्की मूछों वाला एक व्यक्ति, जिसके गले मे सोने की एक जजीर तथा उंगलियो में अँगूठियाँ पडी हुई थीं, अपने सिर पर एक टोकरी में आइल क्लाथ में लिपटे हुये कुछ बन्डल लेकर प्रविष्ट हुआ। मालूम पड़ता था कि वह एक अच्छे स्वभाव का आदमी था और मज़ाक करना चाहता था।

"क्या आप लोग अपना २ मकान बदल रही हैं?" उसने पूछा।

इस प्रश्न से सबको काफी परेशानी हुई।

मैडम जल्दी ही सँभल गई और अपनी पार्टी की लज्जा बचाने को बोली.

"मेरा विचार है कि आपको विनम्र बनने की चेष्टा करनी चाहिये।"

उसने क्षमा माँगी और बोला "मैं आपसे क्षमा माँगता हूँ, मुझे आप लोगों को योगिन कहना चाहिये था।"

मैडम या तो इसका उत्तर न दे सकी, या उसने अपने आपको काफी ठीक मान लिया। उसने उसे झुक कर अभिवादन किया और अपने ओठ काट लिये।

तब रोजा उर्फ जेड और वृद्ध किसान के बीच में बैठा हुआ व्यक्ति जान बूझ कर बतखों की ओर, जिनके सिर टोकरी से बाहर निकले हुये थे आँख मारने लगा। जब उसे निश्चय हो गया कि उसके पास बैठे हुए लोगों की दृष्टि उस पर जम गई है तब वह उनके हुकों के नीचे से उन्हें छेड़ने

लगा और अपने सब साथियों को हंसाने के लिये हँसी करते हुए बोला

"हमने अपना छोटा तालाब छोड दिया है, क्वेक ! क्वेक ! अब हम समुद्र की रेती मे जाएंगे, क्वेक ! क्वेक !"

अभागे पक्षियों ने उसके प्रेम से बचने के लिये अपनी २ गर्दनें मोड ली, और अपनी इस कैद से छुटकारा पाने का बहुत प्रयत्न किया। फिर एकाएक दुख से व्यथित हो क्वेक क्वेक कर दर्द-भरे शब्द में चिल्लाये। स्त्रियाँ बडी जोर से हँस दी। उसे अच्छी तरह से देखने को वे एक दूसरे के ऊपर झुकीं और धक्का देने लगीं, वे सब बतखो मे बहुत रुचि ले रही थीं और वह व्यक्ति दूनी शान और अकड़ से उन बतखो को दूना परेशान करने लगा।

रोजा उसमे सम्मिलित हुई और अपने पडौसी की टाँग पर झुक कर उसने तीनों पक्षियो के सिर पर आलिङ्गन किया। शीघ्र ही सब लड़कियाँ भी आलिगन करने को झुकीं। उस व्यक्ति ने उस टोकरी को अपने घुटनो पर रख लिया और उन बतखों मे कुछ लगा २ कर उन्हे उपर नीचे उछालने लगा। दोनो ग्रामीण, जो अपनी बतखों से भी अधिक परेशान लगते थे, बुत बने से देखते रहे मानो वे अपनी आँखें चला ही न पाते हों, और उनके झुर्रीदार वृद्ध चेहरो पर कोई भी हँसी या मुस्कराहट का भाव नहीं था।

तब उस व्यक्ति ने, जोकि एक व्यापारी यात्री था, हँसी मजाक के रूप मे उन स्त्रियो को गेटिस दी, और एक बन्डल उठाकर उसने खोल डाला। यह एक चाल थी, क्योकि पारसल के अन्दर गेटिसें ही भरी थी। उसमे नीली, गुलाबी, लाल तथा जामुनी रङ्ग की सिल्क की गेटिसें थीं और बकसुऐ गिलट के थे, जिनमे रति और काम दोनो का एक दूसरे को आलिङ्गन करते हुये चित्र बना था। लड़कियाँ उसे देख प्रसन्नता से चीख पडीं और उसकी ओर गम्भीरता से देखने लगीं। जब कभी स्त्रियाँ सौदेबाजी करती है तब इसी भाँति हर वस्तु को देखती हैं। वे एक दूसरे की ओर मूक दृष्टि से देखने लगी और फुसफुसाहट और दृष्टियो में एक दूसरे के प्रश्न का उत्तर देने लगीं। स्वयं मैडम के हाथ मे एक नारङ्गी रङ्ग की एक गेटिस थी जो

दूसरों से चौडी तथा अच्छी थी और ऐसी संस्था की स्वामिनी के ही योग्य थीं।

"आओ बच्चियो" वह बोला, "तुम इन्हे पहिन कर देखो।"

आश्चर्य से चीखों की लहर दौड गई, और उन्होने अपने २ पेटीकोट अपनी २ टाँगो मे दबा लिये, मानो वह उन्हे फंदे मे फँसा रहा हो, किंतु वह अपनी बात के लिये चुपचाप इन्तजार करता रहा और बोला· "खैर, यदि आपको नही चाहिये तो मैं इन्हे बद करके रख सकता हूँ।"

उसने धूर्तता से कहा "जो जिस भी जोडे को पहिन लेगी मै उसे वह गेटिस ही मुफ्त दे दूँगा।"

किंतु उनमें से किसी ने नही पहनी, वे सीधी तनी बैठी रही और बड़ी अजीब धज से।

किंतु वे दोनो पम्पो इतनी परेशान दिखलाई पडने लगीं कि उसे अपना आफर फिर से देना पडा। फ्लोरा विशेषतया हिचकिचाई और उसने उसे दबाया

"आओ मेरी प्यारी आओ, थोडी सी हिम्मत करो! देखो तो सही इस बैंजनी रङ्ग की गेटिस को, यह तुम्हारी पोशाक में गजब की फबेगी।"

अब उसने अपना निश्चय कर लिया और अपनी स्कूर्स उठाते हुये उसने ढीलाढाला भद्दा मोजा पहिना हुआ दूध-वालियो का सा मोटा पैर निकाल कर दिखलाया। व्यापारी यान्त्रिक ने नीचे झुक कर पहिले तो गेटिस घुटनो से नीचे बाँधी फिर ऊपर की ओर, और उसने लडकी के आहिस्ते से सुहरा दिया जिससे वह चिल्ला कर कूद पडी। जब उसने यह काम कर दिया तब उसने उसे बैंगनी रङ्ग का जोडा दे दिया और बोला "अब कौन?"

"मैं! मैं!" सब एक साथ ही चिल्ला पडीं और उसने रोजा उर्फ जेक को पहिनाना शुरू किया, जिसने बिना किसी शकल की, बिना ऐडी की कोई गोल २ चीज उघाडी।

व्यापारी यान्त्रिक ने फरनन्डे को धन्यवाद दिया और उसके शक्तिशाली खम्भो की ओर झुका।

सुन्दरी यहूदिन की पतली टाँग की हड्डी के साथ चापलूसी कम हुई और लुईस कोकोट ने बतौर मजाक उसका पेटीकोट उस आदमी के सिर पर रख दिया, अत मैडम को उस धृष्ट व्यवहार मे दखलन्दाजी करने को बाध्य होना पडा।

अन्त में मैडम ने स्वय अपनी सुंदर, पुष्ट, दृढ माँस पेशियो वाली नोरमन टाँग बाहर निकाली और व्यापारी यात्रिक ने आनद एवं आश्चर्य से फ्राँसीसी सैनिक की भाँति फुर्ती से अपना टोप उतार कर उसको अभिवादन किया।

दोनों किसान, जो विस्मय के कारण मूक हो रहे थे, अपनी आँखों के किनारो से, कनखियो से देखते रहे। वे ठीक फाउलो की भांति देख रहे थे अत: जब हलकी मूछों वाला वह व्यक्ति बैठा हुआ और उनके मुँह के पास मुँह ले जाकर बोला "कुकड़ूँ कूँ" तब हँसी का फिर से तूफान आ गया।

दोनों वृद्ध मोटविले पर अपनी टोकरी, बतखो और छाते को लेकर उतर गये और उन्होंने स्त्री को अपने पति से चलते २ कहते सुना

"ये फूहड स्त्रियाँ हैं और उस बदनाम जगह-पेरिस को जा रही हैं।"

मज़ाकिया व्यापारी यात्रिक इतना बुरा व्यवहार करने के बाद जिसके कारण मैडम को शीघ्र ही उसका मिज़ाज ठिकाने लगाने के लिये कुछ कहना पड़ा, रोने पर उतर गया। वह बोला " अब हमको कान हो जाऐंगे कि हमें नवागन्तुको से बातें नही करनी चाहिये।"

ओइजल मे उन्होंने गाडी बदली, और आगे एक छोटे से स्टेशन पर मि० जोसेफ रिवेट एक बडी सी गाडी लिये हुये, जिसमें कितनी ही कुर्सियाँ लगी हुई थीं तथा एक सफेद घोड़ा जुता हुआ था, उनकी प्रतीक्षा कर रहा था।

बढ़ई ने उन सब स्त्रियो का विनम्रता से आलिगन किया और उनको अपनी गाडी में चढ़ने मे सहायता की।

उनमें से तीन पीछे वाली तीन कुर्सियों पर बैठीं और रास्फेलें, मैडम तथा उसका भाई आगे की तीन कुर्सियों पर, और रोजा, जिसके लिये कोई सीट नहीं थी, फरनन्डे के घुटनो पर जितने आराम से बैठ सकती थी, बैठी। गाडी चल दी।

किन्तु घोडे के चलने पर गाडी इतने भयङ्कर ढङ्ग से हिली कि कुर्सियाँ यात्रियो को हवा मे कभी बाँये कभी दाये उछालती हुई मानो कि वे नाचने वाली कठपुतली हों, नाचने लगीं। इसके कारण वे सब चीखने चिल्लाने लगी। उनकी चीखे चिल्लाहटें कुछ २ गाडी के झटकों में दब जाती थीं।

वे गाडी के किनारों की ओर झुक जातीं, उनके हैट उनकी पीठों पर गिर जाते, उनकी नाकें उनके कन्धो से जा टकरातीं, और घोडा अपनी गर्दन लम्बी किये हुए, पूँछ, जोकि छोटे से बिना बालों वाले चूहे की तरह थी, सीधी ताने हुए, जिससे वह कभी २ अपने नितम्बो को बुहार देता था, चल रहा था।

जोसेफ रिवेट, एक पैर पर बैठा हुआ, दूसरे को डन्डे पर रखे हुए, लगामो को पकडे हुए, कुहनी ऊँची किये हुये टिक टिक कर रहा था, जिससे घोडा कान ऊँचे उठा कर और भी तेजी से चलने लगता।

वह हरा-भरा प्रदेश दोनो ओर फैला हुआ था, पुष्पो की पीली २ पराग एक तेज, मीठी, मादक सुगन्ध दे रही थी, जिसे हवा उडा कर थोडी दूर ले जाती थी।

राई के बीच में गट्टे के नीले फूल अपना सिर ऊँचा उठाये हुये थे। स्त्रियो ने उन्हें तोडने की इच्छा व्यक्त की किन्तु मि० रिवेट ने रुकना अस्वीकार कर दिया।

कहीं कहीं पोस्ते के पेड इतने गहन दिखलाई दे जाते कि सारे के सारे खेत रक्त से सने हुए से लगते और गाडी जो और भी अधिक आकर्षक रङ्ग के फूलों से लदी हुई मालूम पडती थी, खेतों के पेडों की ओट मे छिप जाने को और फिर से प्रगट होजाने को और फिर से पीली या हरी खडी

फसलों, जिनमे नीले या लाल रङ्ग के फूल लगे हुये थे, में से जाने को, जङ्गली फूलो से लदे हुये खेतों में से होती हुई जाने लगी।

बढ़ई के घर के द्वार तक पहुँचते २ उनको एक बज गया। वे थक गये थे और क्योकि घर से चलने के बाद से उन्होने कुछ खाया पिया नहीं था अत भूखे भी थे। मैडम रिवेट दौडकर बाहर आई और एक के बाद एक करके चुम्बनो से, घर मे अन्दर आने पर, उनकी थकावट दूर की। मालूम पडता था कि वह अपनी ननद को, जिस पर वह अपना स्पष्ट ही इजारा कर लेना चाहती थी, आलिगन करते कभी नही थकेगी। उन्हें कारखाने के अन्दर, जिसे दूसरे दिन के सहभोज के लिये साफ किया गया था, भोजन कराया गया।

आमलेटो, सूअर की छोटी आतो और साइडर ने उनकी थकावट दूर कर दी।

रिवेट ने एक गिलास ले लिया जिससे उन्हे वह मदिरा पीने का निमन्त्रण दे सके। और उसकी स्त्री जिसने सामान तैयार किया था, उनको परोसने को खडी थी और तश्तरियो मे सामान ला ला कर उनसे धीरे २ पूछती कि उन्हें किसी वस्तु की आवश्यकता तो नहीं थी। दीवालो के सहारे कितने ही तख्ते खडे थे, और छीलन छालन कोनो में पडी थी। उनमें से लकडी के छिल जाने के कारण लकडी की गन्ध, जोकि फेफडो मे प्रवेश करती चली जाती है, आरही थी।

वह उस छोटी लड़की को देखना चाहती थी किन्तु वह चर्च गई हुई थी और शाम से पहले लौटने वाली नही थी अत वे सब गाँव मे घूमने घामने चल दीं।

वह एक छोटा सा गाँव था, जो प्रधान सडक के किनारे था। सडक के दोनों ओर दस या बारह घर थे जो रोटी वाले, गोश्त वाले, बढई, सराय वाले, मोचियों आदि को किराये पर उठा दिये गये थे।

चर्च सडक के अन्त में था। उसके चारो ओर आंगन था और थे चार बडे २ नीबू के पेड, जो द्वार के ठीक बाहर ही खडे थे और उस पर

छाया किये हुये थे। यह चर्च पथरी का बना हुआ था। बनावट मे कोई विशेषता नहीं थी और मीनार सिलेटी रङ्ग की थी। अब तुम इससे आगे निकल जाओगे तो खुले गॉव मे आ जाओगे, जो कि इधर उधर से हटे हुये थे।

रिवेट यद्यपि अपने काम करने वाले कपडे पहने हुए था और बडी अकड से चल रहा था फिर भी उसने शिष्टाचार के नाते अपनी बहिन के हाथ में हाथ दिया। उसकी पत्नी, जो रास्फेले की सुनहरी धारीदार पोशाक से लदी हुई थी उसके और फरनन्डे के बीच मे चल रही थी और गोलाकार रोजा लुइस कोकोटे और फ्लोरा, जो थक कर लँगडाती चली आ रहीथीं, के साथ पीछे २ आ रही थी।

ग्रामीण अपने द्वारो पर आये, बच्चों ने खेलना छोड दिया, खिड-कियों के परदे उठे, जिनमे से मलमल की टोपी दिखलाई दे जाती, और एक वृद्धा ने, जो लगभग अन्धी ही थी एक क्रौस बनाया मानो कि यह कोई धार्मिक जलूस हो। वे सब उन सुन्दरी स्त्रियो को, जो इतनी दूर से जोसिफ रिवेट की छोटी लडकी के धर्म दीक्षा समारोह में सम्मिलित होने के लिये नगर से आई थीं, देख रहे थे। उन लोगों की दृष्टि मे बढ़ई का सम्मान बहुत बढ गया।

जब वे लोग चर्च के पास से निकलीं तब उन्हे कुछ बच्चो के गाने की ध्वनि सुनाई दी। छोटे बच्चों की पतली आवाज मे गाना हो रहा था, किन्तु मैडम ने उन छोटे बच्चों के कार्य में भङ्ग पड जाने के भय से उन्हें वहाँ अन्दर नहीं जाने दिया।

सैर के पश्चात्, जिसमे जोसेफ ने खास २ बनी हुई इमारतो की गणना की, पृथ्वी के उत्पादन, और गायो भेडो की उपादेयता के विषय मे बतलाया, स्त्रियो के उस झुण्ड को घर ले गया और क्योंकि उसका घर बहुत छोटा था अत उसने अपने घर के एक २ कमरे मे दो २ करके उन्हें टिकाया।

केवल एक बार के लिये, रिवेट लकडी के टुकडों पर अपने कार-खाने में और उसकी पत्नी अपनी ननद के बिस्तर पर सोने वाली थी तथा

फरनन्डे और रास्फेले दूसरे कमरे मे एक साथ टिकी थी। लुइस और फ्लोरा को रसोई घर मिला, जहाँ उनके लिये फर्श पर एक चटाई बिछा दी गई थी, और रोजा को अपने लिये एक छोटा सा लकड़ी का पट्टा ऊपर झीने मे मचान के पास मिला जहाँ धर्म दीक्षा दी जाने वाली लडकी सोने वाली थीं।

लडकी जब अन्दर आई तब उस पर चुम्बनो की बौछार लग गई। हर स्त्री उस कोमल अभिव्यक्ति की उस व्यवसायक फुसलाने की आदत से प्रेरित होकर, जिसने उन्हे रेलवे मे उन बतखो का आलिगन करने को प्रेरित किया था, उसका चुम्बन लेना चाहती थी।

उन्होने उसे गोदी मे लिये उसके छोटे हलके मुलायम बालो को थपथपाया, और प्रेम तथा स्नेह के प्रबल तथा स्वेच्छापूर्ण वेग से उसे अपनी भुजाओ मे दबा लिया और बच्ची ने, जो बहुत शील तथा मिलनसार स्वभाव की थी इस सबको धैर्य पूर्वक सहन किया।

क्योकि दिन भर मे सब लोग बुरी तरह से थक गई थी अत भोजन करने के पश्चत् शीघ्र ही वे अपने २ बिस्तरो पर चली गईं। सारा गाँव बिल्कुल निस्तब्ध एव नीरव हो गया, नीरवता जो कि धार्मिक शान्ति के समान थी, और लडकियाँ जो अपने मकान के शोरगुल के वातावरण की आदी थीं उस सोये हुये गाँव की निस्तब्धता से प्रभावित सी प्रतीत हुईं। वे काँपी, ठण्ड से नहीं वरन् एकान्त को डर कम्पियो से जो कि दुखी और परेशान हृदयो मे उठा करती हैं।

बिस्तरों पर दो दो कर लेटते ही उन्होने एक दूसरे को, मानो कि उस शान्ति एव पृथ्वी की प्रगाढ निद्रा को अपनी रक्षा करने की भावना से, अपनी २ भुजाओ मे भर लिया। किन्तु रोजा उर्फ जेड जो अपने पट्टे पर अकेली थी, को एक अस्पष्ट एव दुखी भावना ने आच्छादित कर दिया।

वह सो न सकने के कारण अपने बिस्तर पर इधर से उधर करवटें बदल रही थी कि उसे एक छोटे बच्चे की दूसरे कमरे से धीमे २ रोने की और सिसकियो की आवाज सुनाई दी। वह डर गई, उसने उसे

आवाज दी। उसे सिसकियों से भरे दुर्बल स्वर में उत्तर मिला। यह वह छोटी लडकी थी, जो अपनी माँ के कमरे में सोया करती थी और अपनी छोटी सी मचान पर भयभीत हो गई थी।

रोजा खुश हो गई, उठी, और धीरे २ ताकि कोई जाग न जाय, उसके पास पहुँची और उसे अपने कमरे मे लिवा लाई। उसने उसे अपने गर्म बिस्तरे पर लिटा दिया, प्यार किया और अपनी छाती से चिपकाया, दुलारा, कोमलता के कितने ही उपचार काम में लाई, और अन्त मे स्वयं भी शान्त होकर सो गई। और सुबह तक धर्म दीक्षा प्राप्त करने वाली लडकी, रोजा के उघडे स्तनों पर अपना सिर धरे सोती रही।

पाँच बजे की चर्च की घन्टी ने इन सब स्त्रियों को, जोकि नियमानुसार सारी सुबह सोती रहती थीं, उठा दिया।- किसान पहले ही उठ चुके थे और स्त्रियाँ एक मकान से दूसरे मकान मे व्यस्त हो, कलफ लगी हुई, छोटी मलमल की ड्रैसों को कपडो की पोटलियो में, या बहुत लम्बे मोमिया कागजों के रेपरों में रख कर सावधानी से लेकर आ-जा रही थीं।

सूर्य नीलाकाश में जो अभी तक आकाश के घेरे मे अरुणाच्छटा दिखला रहा था, काफी ऊँचा चढ चुका था। मानो प्रभात निकलने की धूमिल रेखायें रह गई हों। फाउलो के परिवार मुर्गियो के दरबो के पास घूम रहे थे और एक काला चमकदार वक्षस्थल तथा रङ्गीन टोपी वाला मुर्गा इधर उधर घूमता हुआ अपना सिर ऊँचा उठाता, पखो को फड-फडाता और अपनी तेज आवाज से चिल्लाता, जिसे दूसरे मुर्गे दुहरा देते।

पास पडौस के मुहल्लों और टोलो से सब तरह की गाडियाँ आई और गहरे रङ्ग की ड्रैसों में नोरमन स्त्रियो को, जो अपने गले मे रूमाल डाले हुए थीं, जोकि उन्होने अपने वक्षस्थलों पर चाँदी-की सौ साल पुरानी फूलदार पिनो से बाध रखे थे, ला लाकर उतार रही थीं।

पुरुषो ने अपने नये फ्राक कोटों के ऊपर या हरे रङ्ग के कपडों के अपने पुराने ड्रेस कोटों के ऊपर वास्कट पहिन रखे थे। घोडे घुडसालो में बाँध

दिये गये और ग्रामीण आवागमन के साधनो की पंक्तियाँ सडक पर लगी हुई थी। हर जमाने के हर शक्ल के गाडियाँ, रथ, मझोली, तागे या तो अपने बम्बो के सहारे पडे हुये थे या फिर उनके बम्ब आकाश की ओर उठे हुये थे।

बढई के मकान मे शहद की मक्खियो के छत्ते की भाँति व्यस्तता थी। ड्रेसिग जाकेट और पेटीकोट पहिने हुये स्त्रियाँ अपने लम्बे, पतले, हलके बालो से, जो ऐसे लगते थे कि मानो रगने मे हल्के पड गये थे तथा टूटते गये थे, बच्ची को, जो मेज के पास स्थिर एव चुपचाप खडी थी, कपडे पहिनाने मे लग रही थी और मैडम टेलियर अपनी बटालियन को काम करने के आदेश दे रही थी। उन्होने उसे नहलाया, उसके बाल काढे और बहुत सी पिनो से उसकी ड्रैस मे पट्टे डाले तथा उस ड्रैस को जो बहुत बडी थी उसकी कमर मे पहिनाया ।

जब वह तैयार हो गई तब उसे वही चुपचाप बैठने को कहा गया और स्त्रियाँ जल्दी जल्दी तैयार होने को चल दीं।

चर्च की घन्टी फिर से बजने लगी और उसकी गूँज एक दुर्बल आवाज की भाँति जो शीघ्र ही सुनाई देना बन्द हो जाती है आकाश मे जाकर विलीन हो गई। वे लोग घरो से निकल आये और उस चर्च की सी इमारत की ओर, जिसमें स्कूल और विशाल गृह दोनो ही थे, चल दिये। वह गाँव के इस छोर पर थी जब कि चर्च बिलकुल दूसरे छोर पर।

माता पिता अपने भिन्न सूरत शक्लो वाले पुत्र पुत्रियो के साथ अपने सुन्दर से सुन्दर कपडे पहिन कर अपने तन की, जो सदा काम में लगे रहते हैं, ढीली ढाली गतियो से चल दिये।

छोटी लडकियाँ मलमल के बादलो मे, जो मथी हुई क्रीम की भाँति लग रही थी, छिप गईं और लडके होटल के बॉय की भाँति, जिनके सिर पोमेड से चमक रहे थे, वे अपने पांवों को अधर उठाकर चल रहे थे ताकि उनके काले पाजामो पर कहीं धूल धक्कड न जम जाय।

परिवार के लिये यह कुछ गर्व का विषय था, दूर २ के मुहल्लो से

आये हुये रिश्तेदारों में से बहुत सों ने बच्ची को घेर रखा था, और इस तरह से बढ़ई की पूर्ण विजय हो गई थी।

मैडम टेलियर की रेजीमेन्ट अपनी स्वामिनी के नेतृत्व मे कोन्सटेन्स के पीछे २ चल दी। उसके पिता ने अपनी बहिन के हाथ मे हाथ डाल रखा था, उसकी मा रास्फेले की बगल में चल रही थी, फरनन्डे रोजा के साथ और दोनो पम्पो एक साथ चल रही थी। इस तरह वे शान से पूरी वर्दी मे एक जनरल के स्टाफ की भाँति गाँव मे चल रही थी और गाँव पर आश्चर्य जनक प्रभाव पडा।

स्कूल मे लड़कियां मास्टरनी के पास और लडके मास्टर के पास गये और जाते ही उन्होंने एक प्रार्थना बोली। लडके दो २ की पक्ति मे, जो कि गाडियो, जिनमे घोडे खोल दिये गये थे, की पक्तियों के बीच मे थी, चल रहे थे और लडकियाँ भी उसी क्रम से उनके पीछे २ आ रही थीं। गाँव के सब पुरुषों ने अपनी विनम्रता के कारण स्त्रियो को आगे चलने की सुविधा दे दी थी, लडकिया के बाद ही स्त्रियाँ, तीन दाई ओर, तीन बाई ओर जलूस को और बडा बनाती जा रही थीं। उनको पोशाकें आतिशबाजी के फूलों की भाँति मनोहर लग रही थीं।

चर्च मे पहुँचते ही भक्त समुदाय उत्तेजित हो उठा। वे देखने के लिये एक दूसरे को धक्का देते, मुडते और झटका देते। प्रार्थना करने वालो मे से कुछ जोर २ से बोल पडे। वे लोग इन स्त्रियो, जिनकी पोशाकें पुरोहित के चोगे से भी अधिक चमकदार थीं, को देख कर बहुत आश्चर्यचकित हो गये थे।

मेयर ने कोयर के पास ही दाहिनी ओर की पहली कुर्सी उनके बैठने के लिये दी और उस पर अपनी भाभी के साथ मैडम टेलियर जा विराजी। फरनन्डे रास्फेले, रोजा उर्फ जेड और दोनो पम्पो बढ़ई के साथ दूसरी सीट पर बैठ गई। गाने वालो के झुण्ड में बच्चे-एक ओर लडके, दूसरी ओर लड-कियाँ घुटनों के बल बैठी। और लम्बी मोमबत्तियाँ जो वे पकडे हुए थे, चारों दिशाओं में उठाये हुए कोड़ो की भांति लग रही थीं। तीन आदमी सामने

े, जितने अधिक ऊँचे स्वर से वे गा सकते थे, गा रहे थे ।

लेकिन भाषा के उच्चरणो को वे दीर्घ करते और अ ऽ ऽ का उच्चारण करते ।

एक बच्चे की तेज आवाज उत्तर ले रही थी । बार २ गाने वालों के पास ही दीवाल के सहारे लगी हुई एक कुर्सी पर एक चोगा पहिने हुए पुरोहित उठता और कुछ गुनगुना देता और फिर बैठ जाता । तीनों गायक उस धुरी पर लगे हुए चील के पखों पर रखी हुई गानो की सादा किताब की ओर दृष्टि जमाते गाते ही रहे ।

तब शान्ति हो गई । प्रार्थना चलती रही । और उसके अन्त में रोजा को एकाएक अपनी मा और ऐसे ही मौके पर अपने गाव की चर्च का ध्यान आ गया और वह अपने हाथो मे अपना सिर रख कर बैठ गई । उसे लगा कि वही दिन जब वह इतनी ही छोटी थी और श्वेत ड्रैस मे ही लिपटी हुई थी, लौट आता था, और वह रोने लगी ।

पहले तो वह चुपचाप रोती रहो, आंसू धीरे २ गिरते रहे किन्तु उसकी स्मृतियो के साथ २ उसकी भावनाएे बढ गई और वह सिसकियाँ लेने लगी । उसने अपना जेबी रूमाल निकाल लिया, आँखें पोछी और मुँह में ठूँस लिया ताकि वह चिल्ला न पडे, किन्तु वह सब व्यर्थ रहा ।

उसे एक हिचकी आई फिर दो तीन हृदय विदारक सिसकियाँ । लुइस और फ्लोरा जो उसके पास ही झुक कर घुटनों के बल बैठ रही थीं वे भी उसी भाँति की स्मृतियों से भर उठी थी और उसकी बगल म आसू बहाती रही थीं । आँसुओं की बाढ आ गई थी और क्योंकि रोना तो छूत का रोग है अत मैडम ने शीघ्र ही अनुभव किया कि उसके नेत्र भी गीले हो रहे थे और मामी की ओर उसने मुड कर देखा कि उस कुर्सी पर सभी बैठे हुए लोग रो रहे थे ।

बहुत ही शीघ्र जिधर देखो उधर ही, पत्निया, मा, बहिनें उस करुण भावना से ओत-प्रोत हो और इन घुटनो के बल बैठी हुई सुन्दरी स्त्रियो के दुख से द्रवित हो अपने रूमालों को भिगोने लगीं और उन्होंने धडकते

हुए हृदयों को अपने बाँये हाथ से दाब लिया ।

जिस भाँति इन्जन मे से निकलने वाली चिनगारी सूखी घास को जला डालती है उसी भाँति रोजा तथा उसकी सहेलियों के आसुओं ने क्षण भर मे सारी उपस्थिति को प्रभावित कर दिया । नये २ ब्लाउजों को पहने हुए पुरुष, स्त्रियाँ, वृद्ध और तरुण शीघ्र ही अश्रुपूर्ण हो गये मानो कोई मनुष्य शक्ति से ऊपरी शक्ति—एक भावना, अदृश्य एव सर्वशक्तिमान की शक्तिशाली श्वास ने उन सबके ऊपर प्रभाव डाल दिया ।

एकाएक चर्च मे ऐसा लगा मानो एक प्रकार का पागलपन, पागलपन की अवस्था में भीड़ का शोर, अश्रुओ एव सिसकियो का तूफान आ गया हो । लोगों के ऊपर से यह एक ऐसे हवा के झौंके की तरह होकर निकल गया जो कि पेडों की डालियो को जंगल मे झुका देता है और पुरोहित भावाभिभूत होकर, बेमेल प्रार्थनाऐं, आत्मा की वे अस्पष्ट प्रार्थनाऐं जब वह स्वर्ग की ओर उडान भरती है, हिचक २ कर बोल रहा था ।

उसके पीछे खडे हुए व्यक्ति धीरे २ शान्त होने लगे । कोयर के अग्रसर, अपने सफेद जामों की शान में, कुछ अस्थिर सी आवाजों में बोलते रहे, और वाद्य भी कुछ रूखा सा लग रहा था, मानो वह स्वयं रो रहा हो । खैर, किसी भी भाँति पादरी ने उन लोगो को शान्त हो जाने के लिये, सङ्केत स्वरूप अपना हाथ उठाया, और वह गिरजाघर की सीढ़ियों पर चला गया । शीघ्र ही सब लोग शान्त हो गये ।

अभी २ की घटना, जिसे उसने एक आश्चर्य समझा था, पर दो चार शब्द कह कर उसने बढ़ई के अथितियों की ओर मुँह कर के बोलना प्रारम्भ किया ।

"मेरी प्रिय बहिनों को, मै विशेषतया आप लोगो को, जो इतनी दूर से आई है, जिनकी हम लोगों के मध्य उपस्थिति ने, जिनके स्पष्ट विश्वास एव प्रचण्ड ईश्वर भक्ति ने हम सब लोगो के सम्मुख एक आदर्श उदाहरण उपस्थित किया है, धन्यवाद देता हूँ । आप लोगो ने मेरी बस्ती को सुधार दिया है, आपकी भावनाओ ने सब के हृदय मे उत्साह पैदा कर दिया है,

आप लोगों के बिना शायद आज यह स्वर्गिक अनुभूति नहीं प्राप्त होती। कभी २ एक पुण्यात्मा ही नाव को पार लगा देता है।"

भावावेश मे उसके मुँह से फिर आवाज न निकल सकी और कुछ न कह कर उसने प्रार्थना समाप्त की।

वे लोग जितनी जल्दी निकल सकते थे चर्च से बाहर निकल आये। बच्चे स्वय इतनी अधिक देर तक के मस्तिष्क के खिचाव से चञ्चल हो उठे थे। इसके अतिरिक्त बडे बूढे लोगों को भूख लग रही थी, और वे सब एक-एक करके सहभोज के लिये चर्च से निकल आये।

अन्दर एक भीड और मिली हुई आवाजो की गडबडी थी जिसमें नोरमन स्वर पहिचाना जा सकता था। ग्रामीणो ने दो दल बना लिये और बच्चो के आते ही हर परिवार ने अपने २ बच्चों को अपने पास बुला लिया।

घर की सारी स्त्रियों ने कोन्स्टेन्स को पकड लिया और उसे घेर कर आलिंगनो की बौछारें लगा दीं—रोजा अपने हृदय के भावावेश को सबसे अधिक प्रदर्शित कर रही थी।। अन्त मे उसका एक हाथ उसने तथा दूसरा हाथ मैडम टेलियर ने पकड लिया और राफेले तथा फरनन्डे ने उसका मलमल का पेटीकोट पकड लिया जिससे कि वह धूल में घिसटने न पाए। लुइस और फ्लोरा मैडम रिवेट के साथ उसका पिछवाड़ा पकड़े चल रही थीं और बच्ची इस सलामी के बीच बहुत शान्त तथा विचार-मुद्रा मे घर चल दी।

सहभोज कारखाने में मेज के ढांचों पर लम्बे २ तख्तो पर रख दिया गया और खुले हुए द्वार से आनन्द एवं सहभोज जो अन्दर हो रहा था, दिखलाई देता था। हर खिडकी से लोग रविवार को अपनी ड्रैसों में मेजों के चारो ओर बैठे दिखलाई देते थे हर जगह लोग भोजन कर रहे थे। हर मकान मे मनोरञ्जन हो रहा था और लोग अपनी बाँहदार कमीजें पहिने हुए गिलास पर गिलास साइडर पी रहे थे।

बढई के मकान मे इस प्रसन्नता में लड़कियों की सुबह की भावनाओं के परिणाम स्वरूप कुछ लज्जा का सा समिश्रण था। रिवेट ही एक ऐसा

व्यक्ति था जो बहुत प्रसन्न था और आवश्यकता से अधिक पिये जा रहा था। अपने दो दिन नष्ट न होने देने के लिये मैडम टेलियर हर क्षण घडी की ओर देख लेती थी। वह ३ ५५ की गाडी से, जो कि रात्रि तक उनको फेकेम्प पहुँचा देती, घर चली जाना चाहती थी। बढई ने उसका ध्यान बटाने की, जिससे कि वह अपने अथितियों को एक दिन के लिये और रोक सके, बहुत चेष्टा की। किन्तु क्योंकि जब काम का समय होता तब वह बिलकुल भी मजाक नहीं करती थी अत वह सफल न हो सका, काफी पीने के तुरन्त ही बाद उसने अपनी लडकियो को जल्दी से तैयार हो जाने की आज्ञा दी। उसके बाद वह अपने भाई की ओर मुड़ कर बोली

"तुम्हें घोडे शीघ्र ही तैयार कर लेने चाहिये।" और वह स्वयं अपनी पूरी तैयारी करने के लिये चल दी।

जब वह फिर नीचे आई तब उसकी भाभी उससे बच्ची के बारे में बातें करने को खडी हुई उसकी प्रतीक्षा कर रही थी, और उनमें एक बहुत लम्बा वार्तालाप हुआ जिसमें कुछ भी तय न हुआ। बढई की स्त्री ने बहुत ही द्रवित हो जाने का उत्कृष्ट अभिनय किया, और मैडम टेलियर ने, जो बच्ची को अपने घुटनो से चिपकाये हुई थी, कोई भी निश्चित वचन नहीं दिया। किन्तु वह हलके पतले वायदे करती रही. वह फिर मिलेंगी और अभी तो बहुत समय था और इसलिये वे फिर भी अवश्य मिलेंगे।

किन्तु गाडी द्वार पर नहीं आई और स्त्रियाँ नीचे उतर कर नहीं आई ऊपर से उन्हे अट्टहासों, पटका पटकी, हलकी चीखे और तालियों की आवाजें आती सुनाई दे रहीं थी और इसलिये जब बढई की स्त्री अस्तबल मे यह देखने के लिये गई कि गाडी तैयार हुई कि नहीं तब मैडम ऊपर चली गई।

रिवेट, जो खूब पिये हुए था तथा आधा नङ्गा था, रोजा का, जो हँसी के मारे बेदम हो रही थी, चुम्बन लेने का व्यर्थ प्रयत्न कर रहा था। और दोनों पम्पो, चूँकि वे सुबह के उत्सव के पश्चात ऐसे दृश्य को देखकर दुखी ही हुई थी, उसकी बाँहों को पकडकर उसे शान्त करने का प्रयत्न कर रही

थी, किंतु रास्फेले और फरनेन्डे अपनी २ तरफ से उसके हाथ पकड़ कर तथा उमेठ कर हँसते हँसते उसे उकसा रही थीं तथा उसके हर व्यर्थ प्रयत्न पर जो कि वह पियक्कड़ कर रहा था, बडी जोर २ से चीख रही थीं।

वह क्रोध मे भरा हुआ था, उसका चेहरा लाल हो रहा था, उसके कपड़े बेतरतीब थे और जब वह रोजा की चोली को अपनी पूरी शक्ति से खींच रहा था और कह रहा था "तुम मूर्ख क्या तुम नहीं आओगी।" तब वह उन दोनों स्त्रियों से, जो उससे लटक रही थी, छूटने का प्रयास कर रहा था।

किन्तु मैडम, जो बहुत क्रोधिनी थी, अपने भाई के पास गई, उसके कन्धे पकडे और इतने जोर से उसे धक्का दिया कि वह रास्ते की दीवाल पर जा गिरा। एक मिनट बाद ही आगन में से उसके सिर धाने की आवाज आई। जब वह गाडी लेकर लौटा तब तक वह शान्त भी हो गया था।

वे सब परसों की ही भाँति गाडी में बैठ गये, और छोटा सफेद घोडा अपनी तेज तथा तालमय गति से चलने लगा। सूर्य की उष्णता मे उनका परिहास, जो सहभोज मे रोक दिया गया था, फिर से आरम्भ हो गया।

लडकियाँ अब गाडी के धक्कों से प्रसन्न होतीं, अपने पडौसियों की कुर्सियों को धकेलती और प्रत्येक क्षण हँसती रहती क्योंकि रिवेट के व्यर्थ प्रयासों के पश्चात् से वह उस क्रम को प्रारम्भ ही रखना चाहती थीं।

गाँव में कोहरा पड रहा था, सडकें चमक रही थी और उनके नेत्रोंमे चकाचौंध कर रही थी। पहियों से धूल की दो कतारें उड रही थी, जो प्रधान सडक पर बहुत दूर तक उडती रही, और उस समय फरनेन्डे, जो सगीत मे रुचि रखती थी, रोजा से कोई गाना गाने को बोली उसने शीघ्र ही एक गाना बतलाया किन्तु मैडम ने उस गाने को उस दिन के अनुपयुक्त समझा और बोली

"बेरान्जर का कुछ याद हो तो सुनाओ।"

क्षण भर की हिचकिचाहट के पश्चात् रोजा ने बेरान्जर का गाना प्रारम्भ कर दिया, अपनी फटी आवाज में "आन्डमदर ने और सब लड़कियों

ने यहाँ तक कि मैडम ने भी उस सम्मिलित गान को गाना प्रारम्भ कर दिया।

"बहुत सुन्दर" रिवेट उस गायन की लय में खोकर बोला। वे हर पंक्ति को राग से दुहरा २ कर जोर २ से गा रही थीं। रिवेट गाड़ी के बम्ब पर अपने पैरों से तथा घोड़े की पीठ पर रास से ताल दे रहा था। पशु स्वयं भी उस गायन से प्रभावित हो बहुत तेजी से दौड़ने लगा और एक स्थान पर तो उसकी गति के कारण एक के ऊपर एक करके सब उसमे गिर पड़ीं।

वे हँसती हुई उठी मानो कि पागल हो और गायन चलता रहा। वे जलते हुए आकाश के नीचे और पके धानों के बीच मे उस घोड़े की तेज गति के साथ, जो कि हर पक्ति के दुहराव पर और भी तेज दौड़ने लगता और जिसे देखकर उन्हे बहुत प्रसन्नता होती कि वह सौ गज आगे निकल जाता, अपने उच्च स्वर से गाती रहीं। कभी २ सड़क के किनारे बैठा हुआ कोई पत्थरकूटा इस स्त्रियोचित जंगली आवाज पर आश्चर्यचकित हो अपने तार के चश्मे में से उनकी ओर देखने लगता।

जब वे स्टेशन पर उतर गई तब बढ़ई बोला

"मुझे दुःख है कि तुम लोग जा रही हो, हम लोगों में एक साथ कुछ परिहास होते।"

किन्तु मैडम ने बहुत समझदारी से उत्तर दियाः "हर एक वस्तु अपने २ समय पर ठीक हुआ करती है, और हम हर समय दिल्लगी नहीं कर सकते है।"

तब उसे एकाएक प्रेरणा उत्पन्न हुई "देखो, मैं अगले महीने फेकेम्प मे आकर तुमसे मिलूँगा।" और वह अपनी चमकीली तथा शरारत भरी आँखो से देखने लगा।

"आओ," मैडम बोली, "तुम्हे अक्लमन्द होना चाहिये, तुम चाहो तो आ सकते हो किन्तु तुम्हे चालाकी छोड देनी चाहिये।

उसने कोई उत्तर नहीं दिया और गाडी की सीटी सुनते ही वे सब एक दूसरे का जल्दी २ चुम्बन लेने लगे।

जब रोजा की पारी आई, वह उसके मुँह के पास अपने ओठ ले जाना चाहता था, जिसे वह ओठ बन्द कर मुस्कराते हुए बहुत जल्दी २ हर बार इधर से उधर घुमा लेती थी। उसने उसे अपनी भुजाओं में भर लिया, किंतु वह अपने उद्देश्य मे सफल न हो सका क्योंकि उसका बड़ा कोड़ा जो वह अपने हाथ मे पकड़े हुए निराशा के कारण लडकी की पीठ के पीछे घुमा रहा था उसके प्रयत्नो मे बाधा उपस्थित कर रहा था।

"रोन जाने वाले यात्री कृपाकर अपनी २ सीटों पर जा बैठे !" एक गार्ड ने चिल्लाकर कहा और वे लोग गाडी मे चढ़ गये। इन्जिन की, जिसने अपनी पहली भाप जोर की आवाज के साथ निकाली, तेज सीटी के साथ ही साथ एक हलकी सी सीटी की आवाज सुनाई दी और गाडी के पहिये जरा से हिले, माना बडी शक्ति लगानी पडी हो। रिवेट स्टेशन से बाहर आकर लाइन के बगल के दरवाजे पर रोजा को एक बार फिर से देखने के लिये आ खडा हुआ, और ज्यो ही भिन्न २ भाँति के मनुष्यों को लिये हुए गाडी आगे बढी रिवेट अपना कोडा लेकर उछल २ कर जोर २ से गीत की वही पंक्तियाँ, जो गाडी में रोजा ने गाई थीं, गाने लगा।

और तब उसने एक सफेद वस्त्र का जेबी रूमाल, जिसे कोई हिला रहा था, सुदूर मे अदृश्य होते हुए देखा।

३

रोन पहुँचने तक वे शान्ति से सोते रहे। जब वे घर पहुँच गई आराम कर चुकीं और स्वस्थ हो गई तब मैडम से यह कहे बिना न रहा गया.

"यह सब बिलकुल ठीक था, किन्तु मै घर आजाने के लिये बहुत उत्सुक थी।"

उन्होंने शीघ्रता से भोजन किया और जब उन्होंने सायंकाल की हलकी ड्रैसे पहिन ली तब वे अपने स्थायी ग्राहकों की प्रतीक्षा करने लगीं। द्वार के बाहर रखे हुए छोटे रङ्गीन लैम्प ने आने जाने वालों को बतला

दिया कि पक्षी नीड में आ गये और पता नहीं किसने और कैसे यह समाचार चारों ओर फैला दिया।

बैन्कर के लडके, मि० फिलिप ने तो यहाँ तक ढिठाई की कि मि० टूरनेबो के परिवार के अंतरग मे अपने एक विशेष दूत को भेज दिया।

मछलियो का इलाज करने वाला हर रविवार को अपने भतीजो और चचाजात भाइयों को डिनर मे दावत देता था, और जब एक आदमी अपने हाथ मे एक पत्र लेकर पहुंचा तब वे लोग काफी पी रहे थे। मि० टूरनेबो अत्यन्त उत्तेजित हो उठा, पत्र खोलते ही वह पीला पड गया, उसमे पेन्सिल से लिखे हुए ये शब्द थे

"मछलियो का जहज मिल गया है, जहाज अपने बन्दर पर आ गया है, तुम्हारे लिये व्यापार अच्छा है। शीघ्र ही आजाओ।"

उसने अपनी जेब टटोली और पत्र-वाहक को दो सौस दीं तथा एका-एक कानो तक लज्जा से लाल हो बोला "मुझे जाना चाहिये।" उसने अपनी पत्नी को वह संक्षिप्त एवं रहस्यमय पत्र दिया, घन्टी बजाई और जब नौकर अन्दर आया तो उसे अपना हैट तथा ओवरकोट शीघ्र लाने की आज्ञा दी। गली में पहुँचते ही वह दौड़ने लगा और अपने अधैर्य के कारण उसे रास्ता पहले से भी दूना लगने लगा।

मैडम टेलियर का घर ऐसा लग रहा था जैसे कि उस दिन छुट्टी हो। नीचे वाली मन्जिल पर बहुत से नाविक बड़ा शोर मचा रहे थे, और लुइस और फ्लोरा कभी किसी के साथ तो कभी किसी के साथ शराब पी रही थी मानो आज वे अपने नाम 'पम्पो' को बिलकुल ही सार्थक कर देना चाहती हों। वे हर जगह शीघ्र बुलाई जारहीं थीं, वे पहले से ही अपने व्यवसाय के अनुरूप गम्भीर नहीं थीं और रात्रि तो उनके लिये बहुत ही आनन्ददायक सिद्ध हुई।

नौ बजे तक ऊपर की मन्जिल के कमरे भर गये थे। व्यापार मण्डल का जज मि० वासी, जो मैडम के प्लेटोनिक विवाह का प्रार्थी था, एक कोने में उससे धीमे स्वर में बाते कर रहा था, और वे दोनों ही हँस रहे थे मानो

किसी समझौते पर रजामन्द होने वाले थे।

एक्स-मेयर मि० पोलिन, रोजा को अपने घुटनों पर बैठाये हुए था, और वह अपनी नाक को उसकी नाक के पास रखे हुए उस वृद्ध सज्जन की सफेद मूछों पर अपना हाथ फेर रही थी।

लम्बी फरनन्डे सोफा पर लेटी हुई अपने दोनो पैरों को टैक्स कलक्टर मि० फिलिप्पीज के पेट पर तथा अपनी पीठ को नवयुवक मि० फिलिप्स के वेस्टकोट पर रखे हुए लेट रही थी, उसका दाहिना हाथ उसकी गर्दन मे पड़ा हुआ था तथा बाँये हाथ में एक सिगरेट थी।

रास्फेले इन्स्योरेंन्स एजेन्ट मि० डुपनीस के साथ तर्क मे व्यस्त थी। उसने उसे समाप्त करने के लिये कहा

"हाँ मेरे प्रिय मैं करूँगी।"

ठीक तब ही द्वार खुला और एकाएक मि० टूरनेवो अन्दर आया। उसका उत्साह भरे स्वर "टूरनेवो ! तुम्हारी उम्र बड़ी हो !" से स्वागत किया गया और रास्फेले, जो इधर उधर घूम रही थी, गई और उसके बाहुपाश मे आबद्ध हो गई। उसने उसे प्रगाढ़ालिगन मे आबद्ध कर एक भी शब्द कहे बिना ऊँचा उठाया जैसे कि वह कोई चिड़िया हो और उस कमरे में से ले गया।

रोजा एक्स मेयर से बातें करती रही थी और हर क्षण उसका चुम्बन लेती और साथ ही साथ उसका सिर सीधा रखने के लिये उसकी मूछों को खींच देती।

फरनन्डे और मैडम चार आदमियो के साथ थीं और मि० फिलिप्स ने चिल्लाकर कहा, "मैडम टेलियर, मै दाम दे दूँगा, तीन बोतल शैम्पेन मँगवा दीजिये।" और फरनन्डे ने उसे अपने वक्ष से चिपकाते हुए कहा: "क्या आप हमारे साथ वाल्जनृत्य करेंगे ?" वह उठा और एक कोने में रखे हुए पुराने पियानों पर जा बैठा और उसने वाद्य की रीडो मे से एक बेसुरा वाल्ज निकाला।

लम्बी लड़की ने टैक्स कलक्टर को अपने बाहुपाश में आबद्ध कर

लिया और मैडम ने मि० वासी से कहा कि वह उसे अपनी बाँहों में आबद्ध करले और दोनो युग्म एक दूसरे का चुम्बन लेते हुए नाचने लगे। मि० वासी जो पहले सभ्य समाज मे नृत्य कर चुका था, इतने सुन्दर ढङ्ग से नाचा कि मैडम आश्चर्यचकित हो गई।

फ्रेडरिक शैम्पेन ले आया, पहली कार्क चटपट बाहर निकली, और मि० फिलिप ने क्वाड्रिल आरम्भ किया,' जिसमे चार नृत्यकारों ने सामाजिक फैशन में आचार विचार, रीति रिवाजों के अनुसार नृत्य किया और तब वे शराब पीने लगे।

मि० फिलिप ने पोलका नृत्य किया और मि० टूरनेवो उस सुन्दरी यहूदिन, जिसे उसने ऊँचा ही उठाये रखा और जिसके पैर जमीन पर छूने नहीं दिये, के साथ नृत्य करने लगा। मि० फिलिप्पीज और मि० वासी ने नये उत्साह मे नृत्य आरम्भ कर दिया और समय-समय पर एक या दूसरा युग्म शराब से भरे हुए चमकते गिलास को उछालने के लिये रुकता।

नृत्य ऐसा होता जारहा था कि मानो वह समाप्त ही नही होगा कि रोजा ने द्वार खोला।

"मैं नृत्य करना चाहती हूँ," वह बोली। और उसने मि० डुपनील को, जो कि कोच पर सुस्त बैठा हुआ था, पकड़ लिया और नृत्य फिर से आरम्भ हो गया।

किन्तु बोतलें खाली हो चुकी थीं। "मै एक की कीमत दूँगा।" मि० टूरनेवो ने कहा।

"मै दूगा।" मि० वासी ने कहा।

"और मै भी।" मि० डुपनील ने कहा।

शीघ्र ही वे तालियाँ बजाने लगे और शीघ्र ही नृत्य आरम्भ हो गया। कभी २ लुइस और फ्लोरा जल्दी से ऊपर दौड़तीं जब उनके ग्राहक अधीर हो रहे होते। दो चार परिवृत्त बनातीं और दुखी हो होटल में वापिस लौट जातीं। अर्द्धरात्रि के समय भी वे नाच रहे थे।

मैडम ने जो कुछ भी हो रहा था उससे आँखे बन्द कर रखी थीं

और वह मि० वासी से कोने मे बडी लम्बी बातचीत करती रही, मानो जो कुछ तय हो चुका था उस पर अन्तिम निश्चय हो रहा था।

अन्त मे एक बजे दो विवाहित पुरुष मि० टूरनेवो और मि० फिनिप्पीज ने कहा कि वे घर जाना चाहते थे और उन्होने रुपये देने की इच्छा व्यक्त की। शैम्पेन की कीमत के अतिरिक्त और कुछ नही लिया गया वह भी दस फ्रान्क की जगह जो नियत मूल्य था, छ' फ्रान्क ही ली, और जब उस विशाल हृदयता पर उन्होंने आश्चर्य प्रगट किया तब मैडम जो प्रसन्न हो रही थी बोली

"हम लोग नित्यप्रति ही छुट्टी नहीं मनाते।"

एक मोरिन का सूअर

"तुमने मेरे मित्र, अभी २ जो पाँच शब्द दुहराये हैं 'एक मोरिन का वह सूअर' यह कारण क्या है कि पृथ्वी पर मैंने मोरिन का नाम बिना सूअर प्रत्यय के सुना ही नही है ?" मैने लबार्बे से कहा ।

लबार्बे, जो कि एक डिप्टी है, मेरी ओर उल्लू के से नेत्रों से देखते हुए बोला "आप ला रोचेले से आ रहे है और तब यह फरमाते है—आपके फरमाने का मतलब यह होता है कि आप मोरिन की कहानी नहीं जानते ?" मुझे स्वीकार करना पडा कि मैं मोरिन की कहानी नहीं जानता था, और तब लबार्बे ने अपने हाथ मले और गाथा प्रारम्भ की

"तुम मोरिन को जानते थे कि नहीं, और तुम्हें डी ला रोचेले पर अवस्थित उसकी कपडे की बडी दूकान के बारे में तो याद ही होगा ?"

"हाँ ! हाँ ! बिल्कुल !"

"तब ठीक है । तुम्हे यह मालूम होना चाहिये कि सन् १८६२ या ६३ में मोरिन अपनी दुकान के लिये माल खरीदने के बहाने आनन्द या अपने आनन्दो का उपभोग करने को एक पक्ष के लिये पेरिस गया था, और तुम इतना तो जानते ही हो कि एक गाँव के दूकानदार का पेरिस में एक पक्ष बिताना क्या अर्थ रखता है, यह उसके रक्त में उत्तेजना फूँक देता है । हर सायकाल थियेटर, स्त्रियों की तुमसे भिडती हुई ड्रैसें, और निरंतर उत्तेजना, कोई भी इस अवस्था में पागल हो सकता है । वहाँ, नृत्यकार चुस्त पोशाकों मे, एकट्रैसें नीची ड्रैसो में, गोल टाँगें, मोटे कन्धे, हर एक वस्तु बिल्कुल समीप ही किन्तु जिन्हें छूनेकी हिम्मत ही न होती हो, इन सब के अतिरिक्त है ही क्या, और घटिया तश्तरी पर तो कोई हाथ मारता ही नहीं । और धडकते हुए हृदय तथा किसी के अधरों के स्पर्श की एक प्रकार की इच्छा से प्रसन्न मन लेकर व्यक्ति वहाँ से लौटता है ।

'मोरिन ने जब ८ ४० की रात्रि की एक्सप्रेस से ला रोचेदे के लिये टिकट लिया तब वह इसी अवस्था मे था। वह स्टेशन पर वेटिंग रूम में इधर से उधर घूम रहा था, कि उसने एक नवयुवती को किसी वृद्धा का आलिंगन करते देखा, वह रुक गया। उस युवती ने अपना घूँघट उठाया, और मोरिन प्रसन्नता मे बडबडाया, "जोव की कसम, कितनी सुन्दर युवती है।"

"वह वृद्धा से गुडईवनिंग कह वेटिंग-रूम मे चली गई, और मोरिन उसके पीछे २ चल दिया। फिर वह प्लेटफार्म पर गई, फिर भी मोरिन उसके पीछे ही पीछे था, तब वह एक खाली डिब्बे मे चढ गई और उसने फिर उसका अनुसरण किया। एक्सप्रेस मे बहुत कम यात्री थे, इन्जिन ने सीटी दी और गाडी चल दी। वे अकेले ही थे। मोरिन उसे अपनी आखो मे समेट लेना चाहता था। उसकी अवस्था उन्नीस या बीस की सी लगती, वह गोरी लम्बी और शान्त दिखलाई देती थी। उसने अपने पैरा पर रेलवे का एक कम्बल ढक लिया और सीट पर सोने के लिये लेट गई।

"मोरिन ने मन ही मन कहा "मुझे आश्चर्य है कि यह कौन है ?" और हजारो ही योजनाये, सहस्रो ही घटनाऐं उसके मस्तिष्क मे घूम गई। वह मन ही मन सोचने लगा, "लोग रेलवे यात्राओं में घटने वाली इतनी घटनाऐं कहते रहते है, और हो सकता है कि यह मेरे ही लिये हो। कौन जाने ? जरा सा सौभाग्य, जो बहुत ही जल्दी आ जाता है, हो और मुझे तनिक सी हानि झेलने के लिये तैयार रहना चाहिये। क्या डेन्टन ने नहीं कहा था, 'बुद्धि अधिक बुद्धि, और सदैव बुद्धि।' यदि डेन्टन ने नही कहा तो सिरेब्यू ने कहा होगा, किन्तु उससे कोई असर नहीं पडता। पर मुझ मे बुद्धि नही है, और यह मेरे साथ परेशानी है। आह ! यदि मै केवल जानता, यदि व्यक्ति केवल दूसरो के मन को पहचान लेना जानता होता। मैं शर्त बदता हूं कि हर एक के जीवन मे नित्यप्रति सुअवसर आते है किन्तु मनुष्य उनको पहचान नहीं पाता, यद्यपि एक ही मुद्रा मुझे यह जानने के लिये पर्याप्त होगी कि वह इससे अधिक अच्छा और कुछ नहीं चाहती।'

"तब वह उन बातो को सोचने लगा जो उसकी विजय करा देती।

उसने किसी बहादुरी की घटना की या उसके लिये की गई किसी छोटी सी सेवा की या एक सुन्दर, रुचिपूर्ण वार्तालाप जो उस घोषणा में समाप्त हो, जिसे तुम सोचते हो—की कल्पना की।

"किन्तु वह यह ही तय न कर पाया कि कैसे आरम्भ करे, उसे कोई बहाना ही नहीं मिल रहा था उसने अपने धड़कते हृदय, तथा असपूर्ण मन से भाग्य से ही उत्पन्न हुई किसी परिस्थिति की प्रतीक्षा की। रात्रि व्यतीत हो गई, और लड़की अभी तक सो रही थी जब कि मोरिन अपने पतन की सोच रहा था। दिन निकला और सूर्य की पहली किरण आकाश में दृष्टिगोचर हुई। उन लम्बी, साफ किरणों ने उस सोती हुई लड़की के मुख को चमका दिया और उसे जगा दिया, अत वह उठकर बैठ गई। उसने गाँव की ओर देखा, फिर मोरिन की ओर देख वह मुस्करा दी। वह एक प्रसन्न स्त्री की भाँति मुस्कराई और मोरिन काँप गया। निश्चय ही वह मुस्कान उसके ही लिये थी, यह उसके लिये वह बुद्धिमत्ता-पूर्ण निमन्त्रण था, सकेत था जिसकी वह प्रतीक्षा कर रहा था मानो उस मुस्कराहट का अर्थ था तुम कितने मूर्ख, बुद्धू, निर्बुद्धि, और गधे हो कि सारी रात अपनी जगह पर एक खम्भे से धरे रहे।

"तनिक मेरी ओर देखो, क्या मैं सुन्दर नहीं हूँ? और तुम इस भाँति रात्रि भर बैठे रहे और तब जबकि तुम एक सुन्दर स्त्री के साथ अकेले थे, बहुत ही बुद्धू हो तुम!"

"वह उसकी ओर देखकर अभी भी मुस्करा रही थी, वह हँसने भी लगी, और यह इस प्रयत्न मे, कि कुछ कहने योग्य शब्द पा जाये-चिन्ता नही कुछ भी हो, अपनी रही सही बुद्धि को भी खो बैठा। वह कुछ भी नहीं सोच पाया और तब गंवारों की भाँति मन ही मन कहने लगा 'यह बहुत बुरा हुआ, मै हर चीज की बाजी लगा दूंगा।' एकाएक बिना किसी चेतावनी दिये, वह अपनी भुजा पसारे और ओठों को आगे बढ़ाते हुए उसके पास गया और अपने बाहुओं मे उसे भर उसका चुम्बन ले लिया।

"वह कूद कर दूर जा उछली और चिल्लाने लगी, "सहायता! सहायता!" भय से चिल्लाते हुए उसने डिब्बे का दरवाजा खोल दिया,

और बाँहे बाहर निकाल कर हिलाई । फिर भय से पागल हो वह कूदने का प्रयत्न करने लगी । मोरिन ने, जो बेहद परेशान हो गया था, सोचा कि वह निश्चय ही कूद पडेगी । वह उसकी स्कर्ट पकडकर हकलाता हुआ बोला " ओह मैडम ! ओह मैडम !"

"गाडी की चाल धीमी हो गई और फिर वह रुक गई । दो गार्ड उस स्त्री के पागलो की भाँति के सकेत की ओर दौडे । और वह उनकी भुजाओ मे हकलाती हुई जा पडी । उसने कहा "यह व्यक्ति मुझ से " मुझ से " " से " और वह अचेतन्य हो गई ।

"वे लोग उस समय मौजे स्टेशन पर थे और पुलिसमैन ने, जिसकी उस समय ड्यूटी थी, मोरिन को बन्दी बना लिया । जब उसकी असभ्यता से पीडित स्त्री की चेतना वापिस लौटी, तब उसने उस पर भीषण दोषारोपण किया, और पुलिस ने उसको नोट किया । बेचारा कपडे वाला, आम जगह पर चरित्र-भ्रष्ट करने के दोष के भार से लदा हुआ, रात्रि तक घर नही लौटा

२

"उन दिनो मै 'फेनेल डेस चारेटेन्स' का सम्पादक था । और मोरिन से केफ डू कोमर्स (होटल) मे नित्यप्रति मिलता रहता था । इस घटना के दूसरे दिन वह मुझसे मिलने आया क्योंकि वह नही जानता था कि उसे क्या करना चाहिये । मैंने उससे अपनी राय नहीं छिपाई, किन्तु कहा 'तुम से तो सूअर अच्छा होता है । कोई भी सभ्य पुरुष इस भाँति व्यवहार नहीं करता है ।'

"वह रो पडा । उसकी स्त्री ने उसे पीटा था । उसे दिखलाई दिया कि उसका व्यौपार चौपट हो जायेगा, उसके नाम पर कीचड उछाली जायगी और तिरस्कार होगा, उसके मित्र उससे क्रोधित हो गये थे और उसकी एक भी बात सुनने को तैयार नहीं थे । अन्त मे उसने मुझे पिघला ही लिया । मैंने, अपने मजाकिया किन्तु बहुत ही बुद्धिमान मित्र, रिवेट को इसमे राय देने के लिये लिखा ।

"उसने मुझे न्यायाधीश से, जो मेरा मित्र था, मिलने की राय दी अत मैने मोरिन को तो उसके घर रवाना किया और मैं मजिस्ट्रैट से मिलने

चल दिया। उसने मुझे बतलाया कि जिस स्त्री का अपमान हुआ था वह नवयुवती थी मैडम हैनरीटे बोलन, जो अभी २ पेरिस की गवर्नेस बनी थी, और उसने अपनी छुट्टियाँ अपने चाचा-चाची के साथ जो मौजे मे बहुत सम्मानीय व्यापारी थे, व्यतीत की थी और उसके चाचा ने भी शिकायत की थी इससे मोरिन का मुकदमा भी गम्भीर बन गया था। किन्तु न्यायाधीश इस बात पर राजी हो गया कि यदि शिकायत वापिस लेली जायगी तो वह मामले को समाप्त कर देगा, अत हम लोगों को चेष्टा करके उससे ऐसा करवाना चाहिये।

"मै मोरिन के पास फिर गया। वह मुझे उत्तेजना और दुख से बिस्तर मे बीमार पड़ा हुआ मिला। उसकी स्त्री ने जो पतली लम्बी थी, उसे लगातार गाली देते हुए कमरे में दिखलाया 'तो तुम एक मोरिन के सूअर को देखने आये हो। लो वह रहा मेरा प्यारा'' और अपने नितम्बो पर हाथ रखकर वह उसके बिस्तर के सामने जा खडी हुई। मैंने उसे सारा मामला समझाया। उसने मुझसे उसके चाचा, चाची के पास जाने को कहा। यह कार्य नाजुक था किन्तु मैंने उसे स्वीकार कर लिया और वह 'बेचारा दुष्ट' दोहराता रहा 'मैं विश्वास दिलाता हूँ कि मैंने उसका चुम्बन तक नहीं लिया और मैं इसकी कसम भी खा सकता हूँ।'

"मैंने उत्तर दिया 'इससे कोई अन्तर नही पडता और तुम तो सूअर से भी गये बीते हो,' और मैं एक हजार फ्रान्कें, जो उसने मुझे जिस भाँति भी मै उचित समझूँ व्यय करने को दी थीं, लेकर चल दिया। किन्तु मै उसके चाचा के घर अकेले जाने की हिम्मत न कर सका। मैने रिवेट से अपने साथ चलने की प्रार्थना की, जिसे उसने इस शर्त पर स्वीकार किया कि हम लोग वहाँ से जल्दी ही लौट आयेंगे क्योंकि उसी दिन दोपहर को उसे ला रोचेले मे एक आवश्यक कार्य था। अत दो घन्टो के बाद हमने गाँव के एक बहुत सुन्दर मकान के द्वार खटखटाये। एक सुन्दर लडकी ने, जोकि शायद वही नवयुवती थी, आकर द्वार खोले। मैने रिवेट से धीरे से कहा 'यही अभियुक्त है। अब मैं मोरिन की बात समझने लगा हूँ।

"चाचा मि० टोनेलेट 'फेनेल' का सदस्य था, और वह हम लोगों का उत्सुक राजनीतिक सहधर्मी था। उसने अपनी भुजा पसार कर हमारा स्वागत किया, हमको धन्यवाद दिया तथा हमारे लिये प्रसन्नता की शुभकामना व्यक्त की। वह दो सम्पादकों को अपने घर आया देखकर बहुत प्रसन्न हुआ, और रिवेट ने मुझसे चुपके से कहा. 'मेरा विचार है कि हम उस मोरिन के सूअर के काम मे सफल हो जायंगे।'

"भतीजी कमरे में से बाहर चली गई और मैंने उस नाज़ुक विषय को छेड़ दिया। मैंने उसके सम्मुख उस दुष्ट द्वारा किये गये कार्य के सम्भावित भय का चित्र उपस्थित किया। मैंने उस आवश्यक ह्रास पर दबाव डाला, जिसे उस महिला को, यदि यह मामला लोगों में फैलने दिया जाता है तो सहन करना पड़ेगा क्योंकि कोई भी व्यक्ति एक साधारण से चुम्बन पर ही विश्वास नहीं करेगा। वह भला आदमी 'अनिश्चित सा तो लगने लगा किन्तु अपनी पत्नी के बिना, जोकि रात से पहले नहीं आने वाली थी, कुछ तय नहीं कर पाया। किन्तु वह एकाएक विजयी की भाँति प्रसन्न हो चिल्लाया 'देखिये, मेरा एक बहुत अच्छा विचार है। मै आप लोगो को यहीं रखूँगा, भोजन कराऊँगा और सुलाऊँगा और मेरी पत्नी के घर आजाने पर मुझे आशा है कि मैं मामले को निपटा लूँगा।'

"रिवेट ने पहले तो जिद की, किन्तु मोरिन के सूअर का बचाने की भावना ने उसे रोक लिया और हम लोगों ने उस निमन्त्रण को स्वीकार कर लिया। चाचा खुश हो गया और उसने अपनी भतीजी को बुलाया और उसने हमको राय दी कि हम लोगों को उसकी जमीन पर टहल आना चाहिये। वह बोला 'हम लोग गम्भीर प्रश्नो को, सुबह तक के लिये छोड़ देंगे।' रिवेट और वह राजनीति पर बाते करने लगे और मै शीघ्र ही कुछ कदम पिछड़कर उस लड़की के साथ, जो वास्तव मे बहुत सुन्दर थी, हो गया और बहुत सावधानी से उसे अपनी सहेली बनाते हुए उसकी दुर्घटना पर बातचीत करने लगा। वह बहुत ही कम भ्रमित सी लगी और मेरी बातो को एक ऐसे व्यक्ति की भाँति सुनने लगी, जोकि सारी बात को बहुत ही रुचि से सुन रहा हो।

"मैने उससे कहा 'जरा सोचिये, मैडम, आपके लिये यह कितना खिन्नताजनक होगा। आपको न्यायाधिकरण में जाना होगा, दुष्टों की दृष्टियो से लड़ना होगा, सब लोगों के सामने बोलना होगा और उस दुर्भाग्यपूर्ण घटना को जो रेल मे घटी थी जनता के बीच दोहराना होगा। हम आपस मे विचार करते हैं, क्या आप यह नहीं सोचतीं कि उस मूर्ख आवारे को उसकी ही जगह पर धक्का देकर, सहायता के लिये न चिल्लाकर, अपना डिब्बा बदल लेना आपके लिये अच्छा होता।' वह हँसने लगी और बोली 'आप जो भी कहते है बिल्कुल सत्य है! किंतु मैं कर क्या सकती थी? मैं डर गई थी, और जब कोई भयभीत हो जाता है तब वह अपने आप से तर्क करना बन्द कर देता है जैसे ही मैंने परिस्थिति समझी मुझे उन लोगो को बुलाने पर खेद हुआ किन्तु तब तक बहुत देर हो गई थी। आपको यह भी याद रखना चाहिये कि वह गधा मुझ से एक शब्द भी कहे बिना पागलों की भाँति देखता हुआ मेरे ऊपर पागलों की ही भाँति लद गया। मुझे यह भी नहीं मालूम पड़ा कि वह मुझसे क्या चाहता है?

"उसने मेरी ओर पूर्ण दृष्टि भर बिना किसी हिचकिचाहट या लजाये देखा और मैने मन ही मन सोचा 'यह भी एक अजीब ही लड़की है और इसी कारण मोरिन गलती कर बैठा' और मै मजाक में कहता रहा 'आइये मैडम, अपनी धारणा बना लीजिये कि वह क्षम्य है, क्योंकि सब बातें होते हुए भी कोई भी पुरुष आपकी जैसी सुन्दर युवती के सम्मुख रहकर उसको आलिङ्गन करने की बलवती स्पृहा के बिना रह ही नहीं सकता।'

"वह पहले से भी अधिक हँसी और दाँत दिखाते हुए बोली 'मिस्टर, इच्छा और कार्य के अन्तर मे आदर का स्थान है।' यह भाव प्रयोग करना मूर्खता थी, यह स्पष्ट भी नही था और मैने पूछा 'कल्पना कीजिये यदि मैं अब आपका चुम्बन लेता हूँ तब आप क्या करोगी?' वह रुकी, मेरी ओर उसने सिर से पाव तक निहारा और तब शान्त स्वर में कहा. 'ओह आ! यह बिलकुल ही भिन्न बात है।'

" मै जीव की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि मै भी यह जानता था कि

यह बात भिन्न थी, क्योंकि मुझे मेरे पड़ौस के हर कोई 'सुन्दर लबार्बे' कह कर सम्बोधित करता था। उन दिनों मेरी अवस्था तीस बर्ष की थी, किन्तु मैंने उससे पूछा ' और कृपाकर यह बतलाइये कि "क्यों ?"

"उसने अपने कन्धे हिलाये और बोली 'क्योंकि आप इतने मूर्ख नहीं है जितना कि वह है। और वह मेरी ओर धूर्तता से देखती हुई बोली 'और न ही आप इतने असुन्दर है।'

"इससे पहिले कि वह हट कर मुझे अलग करे मैंने उसके कपोलों पर एक प्रगाढालिगन अङ्कित कर दिया। वह एक ओर उछल कर जा कूदी, किन्तु अब देर हो चुकी थी। वह बोली 'खैर, आप इतने लजालु भी नही है। लेकिन अब ऐसा काम दोबारा मत करियेगा।'

'मैने भोली सूरत बनाली और धीमे स्वर मे कहा 'आह! मैडम, जहाँ तक मेरा प्रश्न है, यदि मै किसी वस्तु की दूसरी वस्तु से अधिक इच्छा करता हूँ, वह मैजिस्ट्रेट के सामने मोरिन वाले दोष पर ही बुलाई जावेगी।'

"क्यो ?' उसने पूछा।"

"उसकी ओर देखते ही रह कर मैने उत्तर दिया 'क्योकि आप ससार के सर्वाधिक सुन्दर जीवित प्राणियो मे से एक हो, क्योंकि आपके साथ अपराध करना मेरे लिये आदर एवं गौरव की बात होगी, और क्योंकि आपको देखने के बाद लोग भी यही कहेगे।

" खैर लबार्बे को वही मिला जिसके वह योग्य था, किन्तु साथ ही साथ वह भाग्यवान भी बहुत है।"

"वह फिर से दिल खोल कर हँसने लगी और बोली ' आप भी कितने मजाकिया है।' और वह शब्द मजाकिया कह भी नही पाई कि मैंने उसे भुजाओं मे भर जहाँ भी जगह मिलती उसके माथे पर, आँखो पर, सिर पर, जिस भी स्थान को वह दूसरे को बचाने के लिये छोड देती, वही चुम्बन लेना प्रारम्भ कर दिया। अन्त मे लजाती एव क्रोधित होती हुई वह छूट गई। 'मिस्टर आप बिलकुल बेहूदे हैं' वह बोली 'और मुझे दुःख है कि मैंने आप से बातें कीं।'

"मैने भ्रम मे उसका हाथ पकड़कर हकला कर कहा 'मैडम, मै क्षमा माँगता हूँ। मैने आप के साथ अपराध किया है, मैने असभ्यों को भाँति व्यवहार किया है। मुझसे मेरे किये हुए पर क्रुद्ध मत होइये। यदि आप जानती—'

"मै व्यर्थ ही बहाना खोजता रहा। कुछ क्षणों में वह बोली 'मिस्टर, मुझे कुछ नही जानना है।' किन्तु मुझे कहने के लिये बात मिल गई, और मै बोला 'मैडम मै आप से प्रेम करता हूँ।'

"वास्तव मे वह आश्चर्यचकित हो गई। उसने मुझे देखने को नेत्र उठाये, और मैं कहता ही रहा 'मैडम, कृपा कर मेरी बात सुनिये। मै मोरिन को नही जानता और मै उसकी रत्ती भर भी चिन्ता नहीं करता। मेरे लिये उसके ऊपर मुकदमा चलाने तथा उसके जेल में बन्द हो जाने से कोई अन्तर नहीं पड़ता। मैंने विगत वर्ष आपको यहाँ देखा था और मैं आप पर इतना मुग्ध हो गया कि आपका ख्याल मेरे हृदय से कभी दूर नहीं हुआ। आप मेरी बात पर विश्वास करें अथवा नही इससे मुझे कोई मतलब नहीं। मैने आपको पूज्य समझा। आपको स्मृति मेरे हृदय में इतनी बढ़ गई कि मैं आपसे फिर मिलने की इच्छा करने लगा और इसलिये उस मूर्ख मोरिन का अपना बहाना बनाकर मै यहाँ आया। परिस्थितियो ने मुझसे आदर की दीवाल लँघवाकर अतिक्रमण करवा दिया। और मैं तो आपसे क्षमा-याचना कर सकता हूँ।

"उसने मेरी दृष्टियों से सत्यता पढ़ ली। वह मुस्कराने को फिर सन्निद्ध हुई, तब वह बड़बड़ाई 'तुम व्यर्थ!' किन्तु मैंने अपने नेत्र उठाकर गम्भीर स्वर मे कहा और मुझे विश्वास है कि मै सचमुच गम्भीर ही था' 'मैं सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि मैं सच कह रहा हूँ।' उसने बिलकुल ही साधारण ढग से कहा. 'सचमुच ?'

"हम लोग अकेले, बिल्कुल अकेले थे, क्योंकि रिवेट और उसका चाचा घूमते २ अदृश्य हो गये थे, जब मैं उसे पकड़ कर उसके हाथों का चुम्बन ले रहा था, और वह मेरी बातो को प्रिय एवं नवीन जानकर, यह

बिना समझे ही कि उसमे से उसे कितनी बात पर विश्वास करना चाहिये था, अन्त में जब मै यह विश्वास करके कि मैने क्या कहडाला था अपने ऊपर ही क्रुद्ध हो रहा था और जब मैने उसके सम्मुख प्रेम की सच्ची घोषणा की तब मै पीला पड रहा था, उत्सुक हो रहा था तथा काँप रहा था और मैं उसकी कमर में हाथ लपेटकर उसके कानो के पास लटकती हुई घुँघराली अलकों मे धीरे २ कुछ कह रहा था तब वह विचारो मे इतनी तल्लीन थी कि निष्प्राण सी लग रही थी।

"तब उसके हाथ ने मेरे हाथ का स्पर्श किया और उसे दबाया, और मैने काँपते २ उसकी कमर मे धीरे से हाथ डालकर उसे दृढ़ता से पकड़ लिया अब वह अलग नहीं हटी, और मैने उसके कपोलो का अपने अधरों से स्पर्श किया एकाएक बिना उन्हें ढूँढते हुये मेरे होट उसके होटों से मिल गये। यह तो बहुत प्रगाढ़ालिंगन था और यदि मैंने हम! हम! की अपने ठीक पीछे आवाज न सुनी होती तो यह और भी अधिक देर तक चलता। वह झाड़ियों मे जाकर छिप गई, और मैंने मुड़ कर देखा कि रिवेट मेरी ओर रास्ते के बीच से चलता हुआ आरहा था। वह हँसा भी नहीं। वह बोला. 'तो इस प्रकार से तुम उस मोरिन के सूअर का मामला तय करते हो।'

"मैंने धोका देते हुए कहा 'जिससे जो हो सकता है, मेरे मित्र, वही वह करता है। किन्तु चाचा क्या कहते है? तुम्हारी उनसे क्या २ बातें हुई? भतीजी के विषय मे मै बतलाऊँगा।'

"में उसके पास इतना भाग्यशाली नही रहा' उसने उत्तर दिया। और मैने उसकी बाँह पकड़ी और हम लोग अन्दर चले गये।

३

डिनर ने तो मेरी सारी बुद्धि हर ली। मैं उसकी बगल मे बैठा, मेरा हाथ उसके हाथ से और मेरा पैर उसके पैर से लगातार लगते रहे। और हम एक दूसरे को स्थिर दृष्टि से देखते रहे।

"डिनर के पश्चात् चन्द्र की चाँदनी मे हम साथ २ टहलने गये।

और मै उससे जो भी प्रेमपूर्ण बातें सोच सकता था सब कहता रहा। मैंने उसे अपने पास रखा, हर क्षण अपने अधरों को उसके अधरों से गीले करते हुए आलिंगन किया और उसका चाचा और रिवेट हमसे आगे आपस मे तर्क करते चल रहे थे। हम लोग अन्दर गये, शीघ्र ही एक सन्देशवाहक ने आकर उसकी चाची का एक तार यह कहते हुए दिया कि वह अगले दिन की ७ बजे वाली पहली गाडी से आवेगी।

"बहुत अच्छा, हैनरीटे' उसके चाचा ने कहा, 'जाओ और दोनों सज्जनो को इनके कमरे दिखलादो।' उसने रिवेट का कमरा पहले दिखलाया, और वह मुझसे मेरे कान मे बोला 'यदि वह हमको तुम्हारे कमरे में पहले ले चलती तो भी कोई भय नहीं था।' तब वह मुझे मेरे कमरे में ले गई, और जैसे ही हम दोनो अकेले रह गये, मैंने उसे फिर भुजाओ मे भर लिया और उसकी भावनाओ को उत्तेजित कर उसके विरोध पर विजय प्राप्त कर लेनी चाही, किन्तु उसे जब यह अनुभव हुआ कि वह वशीभूत हो जायगी, वह कमरे से भाग निकली और मैं बहुत उत्तेजित हो एवं खिसिया कर चादर में जा लेटा, क्योकि मै जानता था कि मुझे अधिक नहीं सोना था। मुझे आश्चर्य हो रहा था कि मै ऐसी गलती कैसे कर गया। तब हीं मुझे द्वार पर एक हलकी सी थपथपाहट सुनाई दी और मेरे यह पूछने पर कि कौन था एक धीमे से स्वर मे उत्तर आया—"मै"

"मैने जल्दी से कपडे पहने और द्वार खोल दिया और वह अन्दर आ गई 'मै आप से यह पूछना भूलगई थी कि आप सुबह क्या ग्रहण करेंगे?' वह बोली 'चोकलेट, चाय अथवा कहवा' मैने उसकी कमर में मूर्खता से बाहे डालते हुए और उस पर चुम्बनो की बौछार लगाते हुए कहा 'मैं लूँगा—मै लूँगा—' किन्तु वह मेरी बाहो से छूटकर, मेरी बत्ती को बुझाकर और मुझे उस अन्धकार मे उन्मत्त एव दियासलाई ढूँढते हुए और ऐसा कर सकने मे भी असमर्थ अकेला छोडकर अदृश्य हो गई। अन्त में मुझे दियासलाई मिल गई और मैं बत्ती जलाकर हाथ में लिये आधे रास्ते तक पागलो की भाँति चला गया।

" मै क्या करने जारहा था ? मैं यह सोचने को नहीं रुका, मैं उसे केवल खोजना चाहता था और मै खोजता । मैं बिना सोचे समझे कुछ कदम और बढा कि मेरे हृदय मे एकाएक विचार उठा 'मान लो मैं उसके चाचा के कमरे मे पहुँच जाऊँ तब मै क्या कहूँगा ?' और मै परेशान दिमाग और धडकते हुए हृदय को लेकर चुपचाप खडा रह गया ।

"किन्तु कुछ क्षणो मे ही मुझे एक उत्तर सूझा. निश्चय ही मैं यह कहूँगा कि रिवेट से एक बहुत आवश्यक बात पूछने के लिये मैं उसके कमरे मे जा रहा था ।' और मै हर द्वार को देखने लगा जिससे कि मुझे उसका द्वार मिल जाय । अन्त मे मैंने एक साथ ही एक हेन्डल घुमा दिया और अन्दर चला गया । वहाँ हेनरीटे अपने बिस्तर पर बैठी हुई थी और मेरी ओर अश्रुपूर्ण नेत्रो से देख रही थो । अत मैंने द्वार धीरे से बन्द किया और उसके पास चुपचाप गया तथा बोला. 'मैडम, मै आपसे कुछ पढने को कहना भूल गया था । मैं तुमको किताब का नाम नहीं बतलाऊँगा जो मैंने पढी थी, किन्तु वह रोमान्सों मे सबसे अधिक अद्भुत और कविताओ में सबसे अधिक प्रेरक हे । और जब मैने पहिला पृष्ट पलटा तब उसने मुझे, जितने भी मै पलटना चाहता था, पन्ने पलटने दिये और मैंने उसके इतने पाठ पढ़े कि हमारी मोमबत्तियाँ जलते २ समाप्त हो गई ।'

" उसे धन्यवाद देने के पश्चात् जब मैं दबे पाँव चुपचाप लौट रहा था मुझे एक कठोर हाथ ने पकड लिया । और एक स्वर—यह रिवेट का था–मेरे कानो मे फुसफुसाया: 'तो अभी तुमने मोरिन के मामले को तय नही किया ।'

"सुबह सात बजे वह मेरे लिये एक प्याला कहवा खुद ब खुद ही लाई । मैने उसके समान मीठी मादक सुगन्धित एव स्वाददार कभी कोई वस्तु नहीं पी थी । मै अपने होठो को उसके पास से हटा नहीं पाता था । कमरे में से वह निकल कर ही गई थी कि रिवेट आ गया । वह एक ऐसे व्यक्ति की भाँति जो रात्रि भर सो न सका हो नरवस और उत्तेजित सा लग रहा था और उसने मुझसे प्रश्न करते हुए पूछा 'यदि तुम इसी भाँति करते

रहोगे तो उस मोरिन के सूअर का मामला बिगाड़ दोगे।'

"आठ बजे चाची आ गई। हमारी बातचीत बहुत ही कम हुई क्योंकि उन लोगो ने शिकायत वापस लेली और मैंने ५०० फ्रान्क नगर के गरीबों के लिये वहाँ छोड़ दिये। वे लोग हमें एक दिन के लिये और रोकना चाहते थे और उन्होंने कुछ खण्डहरों को देखने के लिये एक यात्रा का आयोजन तैयार कर लिया। हैनरीटे ने अपने चाचा के पीठ पीछे से मुझे रुकने के लिये इङ्गित किया, और मैंने स्वीकार कर लिया किन्तु रिवेट ने जाने का निश्चय कर लिया था और यद्यपि मैने उसे अलग ले जाकर उससे बहुत प्रार्थना की किन्तु वह बहुत क्रोधित सा दिखलाई दिया और मुझसे कहता रहा 'अब इस मोरिन के सूअर का बहुत काम हो गया, सुनते हो ?'

"मुझे भी लाचार वहाँ से आना पडा, और वह मेरे जीवन का सबसे क्रूर क्षण था। मैं उस कार्य को जब तक वहाँ रहता तब तक चलाता रहता। उससे चुपचाप हाथ मिलाने के पश्चात् जब हम लोग रेल में बैठे तब मैंने रिवेट से कहा 'तुम बडे निर्दयी हो !' और उसने उत्तर दिया 'मेरे प्यारे मित्र, तुम दोनो मिलकर मुझे उत्तेजित करने लगे थे।'

'फेनल' कार्यालय जाने पर मैंने देखा कि हम लोगों की एक बहुत बडी भीड प्रतीक्षा कर रही थी, और हम लोगों को देखते ही वे सब चिल्लाये 'क्या आप उस मोरिन के सूअर का मामला तय कर आये ?" सारा लारोचेले इस विषय मे उत्तेजित था और रिवेट, जो रेल यात्रा में अपने क्रोध को निकाल चुका था, बड़ी कठिनाई से हँसी रोक कर बोला 'हाँ हम लोग सफल हो गये, लाबार्बे को धन्यवाद दो।' और हम लोग मोरिन के घर पहुँचे।

" वह अपने दुर्भाग्य से लगभग मृतक के समान अपनी टाँगों पर अलसी का प्लास्टर बाँधे और अपने सिर पर ठण्डी पट्टियाँ रखे हुए आराम कुर्सी पर बैठा हुआ था। वह मृत्यु शय्या पर पडे हुए व्यक्ति की भाँति खाँस रहा था। कोई नहीं जानता था कि उसे ठण्ड कैसे लग गई और उसकी पत्नी शेरनी की भाँति उसे खा जाने को तैयार सी दीख पडती थी। वह हमें देखते

ही बुरी तरह से सिहर उठा। जिससे उसके हाथ और पाँव सब ही काँप गये। यह देखते ही मैं बोला 'वह सब तय हो गया, किन्तु अब आगे ऐसी बात कभी मत कर बैठना।'

"वह आँसू बहाता हुआ उठा, और मेरे हाथों को पकड़ कर उसने उनका चुम्बन लिया, मानो वे हाथ किसी राजकुमार के हों। वह अचेत सा हो चिल्लाया, उसने रिवेट का आलिङ्गन किया, और मैडम मोरिन का भी, जिसने उसे एक ऐसा धक्का दिया कि वह लड़खड़ाता हुआ कुर्सी पर जा पड़ा, चुम्बन लिया किन्तु वह धक्के पर उठ न सका। उसका मस्तिष्क बहुत अधिक असन्तुलित हो गया। सारे गाँव भर मे उसको 'एक मोरिन का वह सूअर' के नाम के अतिरिक्त और किसी नाम से सम्बोधित नहीं किया जाता और जब वह यह सुनता तब उसे ऐसा लगता मानो उसके सीने में तलवार घुसेड़ दी गई हो। जब उसके पीछे से कोई चलता फिरता लड़का पुकारता, 'सूअर!' तब वह स्वत ही अपना सिर उधर ही घुमा देता। उसके मित्र भी उससे बहुत मजाक करते और जब कभी वे सूअर का गोश्त खाते होते तो उससे कहते 'यह तुम्हारा ही अङ्ग है।' दो वर्ष पश्चात वह मर गया।

और रहा मेरा, तो जब मै १८७५ मे चेम्बर आफ डिप्टीज के लिये उम्मीदवार था तब मैं फोनसेरे के नये हाकिम मि० बेलोस्कल से, उसका वोट प्राप्त करने के लिये, मिलने गया और एक लम्बी सुन्दरी और धनी महिला ने मुझे रिसीव किया 'अब आप मुझे नहीं जानते?' उसने कहा:।

" मै हिचकचा कर बोला: ' नही मैडम।'

"हैनरीटे बोनेल"

" 'आह!' और मुझे, जब कि वह बिलकुल मजे मे थी और मेरी ओर मुसकराकर देख रही थी, लगा कि मै पीला पड़ता जा रहा हूँ।

"ज्योंही वह मुझे अपने पति के पास अकेला छोड़ गई, उसने मेरे दोनो हाथ पकड़े, और उन्हें दबाते हुए, मानो पीस डालना चाहता था, बोला: 'श्री मान् जी, मैं आपसे मिलने की बहुत दिनों से सोच रहा था, क्योंकि मेरी पत्नी आपके विषय में बहुत बार बातें करती रहती है। मै जानता हूँ कि

कितनी बुरी परिस्थिति मे आपने उससे जान पहिचान की और मैं जानता हूँ कि आपने कितनी विनम्रता, त्याग एव बुद्धिमानी से उसके साथ व्यवहार किया और उस ·· ' वह हिचकिचाया, और तब धीमे स्वर से, मानो कोई भद्दी और घृणित बात कहने जा रहा हो, बोला' 'उस मोरिन के सूअर के मामले मे।' "

पागल स्त्री

"मै आपको फ्रान्स और प्रशिया के युद्ध की एक दर्दनाक कहानी सुना सकता हूँ।" मिस्टर डी एन्डोलिन ने बैरन डी रेवट के भवन के स्मोकिंग-रूम मे एकत्रित कुछ मित्रो से कहा। 'आप लोग मेरे फोबोर्ज डी कोरमेल मे जो मकान है उसे तो जानते ही है। जब प्रशियन वहाँ आये तब मै वहीं रह रहा था और मेरे पड़ोस मे एक पागल सी ही स्त्री जिसकी लगातार दुर्भाग्यों के आने के कारण चैतन्यता नष्ट हो गई थी, रहती थी। सत्ताइस वर्ष की अवस्था में एक महीने के ही अन्दर उसके पिता, पति, और हाल ही में हुए बच्चे की मृत्यु हो गई थी।

"मृत्यु जब एक बार घर मे प्रवेश कर जाती है। तब यह बडी जल्दी ही लौट आती है, मानो वह रास्ता जान गई हो, और वह नवयुवती दुख से कातर अपने बिस्तर पर पड गई और छ सप्ताह तक बाय में खेलती रही। तब धीरे धीरे वह शान्त होती गई, और स्थिर हो गई, कुछ नहीं खाती पर हाँ खाने का नाम अवश्य करती, और केवल उसके नेत्र ही स्थिर नहीं थे। जब भी लोग उसे उठाने की चेष्टा करते तब ही वह इतनी जोर से चिल्लाती कि मानो लोग उसे मारे डाल रहे हों, अत. उन्होने उसे बिस्तर पर निरन्तर लेटे रहने दिया, हाँ यदि उसे कभी उठाते तो उसको नहलाने के लिये, इसके कपडे अथवा चटाई को बदलने के लिये।

"उसके पास उसे कभी २ कुछ पिलाने को, या थोडा सा ठण्डा गोश्त खिलाने को उसकी एक वृद्धा नौकरानी रहती रही। उसके दुखी मनकी क्या अवस्था थी? कोई कभी नहीं जान सका, क्योंकि वह कभी बोलती ही नहीं थी। क्या वह मृतकों के विषय में सोच रही थी? क्या वह जो कुछ भी हो चुका उससे विस्मृत हो दुखी हो सोच रही थी? या उसकी स्मृति निश्चल

जल की भाँति शान्त थी ? किन्तु यह कैसे भी हुआ हो, वह पन्द्रह वर्षों से गतिहीन एवं एकान्तिक पडी रही थी।

"युद्ध आरम्भ हो गया, और दिसम्बर के प्रारम्भ में जरमन कोरमेल तक आ गये। मुझे यह कल की सी बात याद है। उस दिन की ठण्ड पत्थरों को भी फाड देने वाली थी। जब मैंने फौज के सिपाहियों की भारी पदचापें सुनीं तब मैं स्वंय अपनी आराम कुर्सी पर गठिया के कारण हिलडुल न सकने के कारण लेट रहा था। मैंने उन्हें जाते हुए अपनी खिडकी में से देखा।

"उन्होने डोरो के सहारे चलने वाली कटपुतली की सी अपनी विचित्र गति से, जो उनमे ही पाई जाती है, अतीत को निरन्तर अपवित्र किया। अफरारो ने अपने सैनिको को नगरनिवासियो के यहाँ जाकर ठहरने की आज्ञाएं प्रदान कीं और मेरे यहाँ भी सत्तरह सैनिक ठहरे हुए थे। मेरी पडौसिन, उस निश्चल स्त्री, के यहाँ बारह सैनिक थे जिनमें से एक असभ्य अक्खड तथा निर्दयी कमान्डेन्ट भी था।

"पहिले तो थोडे से दिन सब ठीक ठाक चलता रहा। दूसरे मकान के अफसरो को बतला दिया गया था कि वह स्त्री रुग्ण थी, और उन्होने उसकी तनिक भी चिन्ता नहीं की थी, किन्तु शीघ्र ही उस स्त्री ने, जिसे उन्होंने कभी नहीं देखा, उन्हे उत्तेजित कर दिया। उन्होने पूछा कि वह किस रोग से बीमार थी। उन्हे बतलाया गया कि विगत पन्द्रह वर्षों से निरन्तर उसने भीषण शोक के परिणाम स्वरूप, बिस्तर पकड रखा था। यह निश्चय था कि वे उस बात पर विश्वास नहीं कर सके। उन्होंने सोचा कि वह बेचारी अभागिन पगली अपने गर्व के कारण कि कहीं उसे प्रशियनों के सम्मुख जाना देखना, या सुनना न पडे, बिस्तर से उठना ही नहीं चाहती थी।

"कमान्डेन्ट ने उसे अपना स्वागत करवाने के लिये उस पर दबाव डाला। वह उसके कमरे में पहुँचा दिया गया। वह उससे कठोर स्वर से बोला. 'मैडम, मै आपसे उठने, और उठ कर सीढ़ियों से नीचे उतर कर आने की प्रार्थना करता हूँ ताकि हम सब लोग आपके दर्शन कर सके।' किन्तु वह अपने श्री-हीन नेत्र उसकी ओर घुमाकर ही रह गई, अत. वह

कहता रहा 'मै अपमान सहन करने नही आया हूँ, और यदि आप स्वेच्छा से नही उठेंगी तो मे आपको बिना किसी सहारे के चलाने का भी ढङ्ग निकाल सकता हूँ।'

"किन्तु उसने कोई भी ऐसा चिन्ह नही प्रदर्शित किया जिससे यह सिद्ध होता कि वह उसकी बात सुन रही थी और वैसी ही स्थिर पडी रही। तब वह क्रोधित हो उठा, और उस चुप्पी को अदम्य घृणा का सकेत समझ वह बोला 'यदि आप कल नीचे नही आई तो ··· 'और वह कमरे से निकल कर चला गया।

"दूसरे दिन उस भयभीत वृद्धा सेविका ने उसे कपडे पहिनाने चाहे, किन्तु वह पगली बडी जोर से चिल्लाने लगी, और अपनी पूरी शक्ति लगा कर वैसे ही पडी रही। अफसर शीघ्र ही दौडा २ ऊपर आया। सेविका उसके चरणो पर गिर कहने लगी श्रीमानजी, वह नीचे नहीं जावेंगी। उन्हें क्षमा कर दीजिये, क्योंकि वह बहुत दुखी है।'

"अफसर क्रोध से उन्मत्त हो उठा। क्रोधित होते हुए भी उसका इतना साहस नही हुआ कि वह अपने सैनिको को उसे खींच कर बाहर निकाल देने की आज्ञा दे सके। किन्तु एकाएक, वह हँसने लगा, और जरमन भाषा मे कुछ आज्ञायें देने लगा। शीघ्र ही सैनिको का एक दस्ता एक चटाई को इस भाँति बाहर लाता हुआ दिखलाई दिया जैसे कि वह किसी आहत व्यक्ति को ले जा रहे हो। बिस्तर पर जो अभी भी बेतरतीब था, वह पगली बिल्कुल शान्त एव चुप लेटी हुई थी, क्योंकि उसे तो जब तक लेटे रहने दिया जाता तब तक किसी भी बात से कोई मतलब ही नही था। उसके पीछे पीछे एक सैनिक स्त्रियोचित कपडो की एक पोटली लिये जा रहा था। अफसर ने अपने हाथ मलते हुए कहा · 'हमे भी देखना है कि अब आप अपने आप कपड़े पहिन कर थोडी बहुत दूर चल सकती है अथवा नहीं।'

और तब वह जुलूस इमोविले के जंगल की तरफ चल दिया। दो घन्टे मे सैनिक अकेले लौट आये और उस पगली के बारे में कुछ भी मालूम

नहीं पड़ा। उन्होंने उसका क्या किया ? वह उसे कहाँ ले गये ? कोई नही जान सका।

"बर्फ रात दिन पड़ती रही, और उसने जगलो को जमे हुए झागदार कुहरे की मोटी चादर से ढक लिया। भेड़िये हम लोगो के दरवाजों तक आ जाते थे।

"उस बेचारी अभागिनी स्त्री का विचार मुझे परेशान करता रहा, और मैंने उसके विषय मे जानकारी प्राप्त करने के लिये प्रशियन अधिकारियों को कितने ही पत्र डाले पर उसका कोई परिणाम नही निकला। जब बसंत ऋतु आई, सेना लौट गई किन्तु मेरी पड़ोसिन का मकान बन्द ही रहा, और बगीचो मे घास काफी उग आई। वृद्धा सेविका जाड़ो में मर चुकी थी और किसी अन्य ने उस घटना को कोई महत्व नहीं दिया था। मैं अकेला ही उस पर निरन्तर विचार करता रहा। उन्होंने उस स्त्री का क्या किया ? क्या वह जंगलो मे से भाग गई ? क्या किसी को उसे वहाँ देखकर दया आ गई और उसने उससे कोई समाचार प्राप्त किये बिना ही उसे अस्पताल पहुँचा दिया ? मेरी शङ्काओं का समाधान करने वाली कोई घटना नहीं हुई और मेरा भय बना ही रहा।

"बसन्त में हंस बहुत थे। थोड़े दिनो के लिये जब मेरी गठिया ठीक हो गई मै जंगलो मे घिसटता घिसटता जा पहुँचा। मै चार पाँच लम्बी चोंच वाली चिड़ियाँ मार चुका था कि मेरी गोली से आहत एक चिड़िया डाल पातो से भरे हुए गड्ढे मे जा गिरी। मुझे उसे उठाने के लिये उसमें उतरना पड़ा और मुझे मालूम हुआ कि वह चिड़िया एक मृत मानव देह के समीप जाकर गिरी थी। शीघ्र ही पगली की स्मृति ने मेरे हृदय पर एक आघात किया। शायद उस सत्यानाशी वर्ष मे कितने ही अन्य व्यक्ति जंगलों मे मर गये होंगे मैं नहीं जानता, क्यों ? किन्तु मैं बताये देता हूँ, मेरा पूर्ण निश्चय था, कि मुझे उस बेचारी पगली का सिर अवश्य दिखलाई देगा।

"और एकाएक मैं समझ गया, हर बात पहचान गया। उन्होंने उसको ठण्ड मे उस जङ्गल में उस चटाई पर पड़ा हुआ छोड़ दिया था, और अपने विचारों

के प्रति सच्ची रह कर उसने बर्फ की मोटी और हल्की सतह के अन्दर बिना हाथ पैर हिलाये नष्ट हो जाना स्वीकार कर लिया।

"तब भेडियो ने उसे खा डाला, और चिडियो ने उसके फटे बिस्तरो के ऊन से अपने घोंसले बना लिये तथा मै उसकी हड्डियो को उठा लाया। मै भगवान मे केवल यही प्रार्थना करता हूँ कि हमारे पुत्रो को कभी कोई युद्ध न देखना पडे।"

जूली रोमन

दो वर्ष पहिले शरद ऋतु में मैं भूमध्यसागर के किनारों पर घूम रहा था। किसी निर्जन सडक पर कल्पना-सागर मे गोते लगाने से अधिक सुन्दर और क्या हो सकता है? सागर के किनारे घूमते समय या पहाडी पर चढ़ते समय व्यक्ति धूप और चुम्बन लेते हुए पवन का आनन्द लूटता है। जब वह दो घन्टे तक सडक पर घूमता है तब उस व्यक्ति के मन में उसके दिवा-स्वप्नो मे क्या दृश्य, क्या प्रेम कविताएँ आती हैं! हर सम्भावित, भ्रमपूर्ण तथा आनन्ददायक आशाये गर्म एवं ठण्डी वायु के साथ उसकी हर श्वास मे, जो वह लेता है, अन्दर जाती है, और वह उसके अन्दर एक आनन्द का प्रादुर्भाव करती है, जो घूमते २ भूख की भाँति बढता जाता है। ज्योंही वह प्रकृति के समीप आ जाता है, मृदु एव शीघ्रगामी विचार उसकी आत्मा मे मधुर गान आरम्भ कर देते हैं।

मैं सेन्ट राफेल से इटली जाने वाली सडक पर जा रहा था, या यह कहिये, मैने अपनी राह उस सौन्दर्यमय एवं बदलने वाले दृश्यों की ओर बनाई जिनका शायद पृथ्वी पर प्राप्य सभी प्रेम कविताओ द्वारा यशोगान हुआ है। यह सोचकर मुझे करुणा उत्पन्न हुई कि केन्स से लेकर मोनेको तक किंचित ही भूभाग में कोई व्यक्ति तकलीफ उत्पन्न करने, धन से छल-बल करने, इस सुन्दर आकाश के नीचे और गुलाब एव नारंगियो के इस बाग में नीच मूर्खताओ से मूर्खतापूर्ण आडम्बरो और नीचतापूर्ण स्वार्थपरताओ से तमाशा करने और मानव मन, जो कि नीच, अज्ञानी, पाखडी एव बुद्धि-गम्य है, को दिखलाने आता है।

एकाएक, अचेत खाडियों के घुमावो में समुद्र के सामने पहाडी के तले मे मुझे चार पाच झोपडियाँ दिखलाई दीं। उनके पीछे सनोवर का एक जंगल था जिसने बिना किसी रास्ते या पगडण्डी को छोड़े हुए दो घाटियों को ढक रखा था। वह इतनी सुन्दर झोंपडी थी कि विवश

मै इनमे से एक के सम्मुख जा रुका। वह एक छोटी सफेद झोपड़ी थी, जिस पर भूरे रङ्ग की सजावट हो रही थी और जिसकी छत तक पर गुलाब लग रहे थे। बाग सारे रङ्गों, एक से आकारों के फूलो से लदे पडे थे, और उन पर बेले अपने ही ढङ्ग से सजाई गई थी। खुला हुआ घासदार मैदान फूलों के पत्तों से सजा हुआ था, बरामदे की सीढ़ियों पर एक गमला था, जिसमे अगूर की बेलें लग रही थीं, और खिडकियो के ऊपर पके हुए पीले २ अगूरों के गुच्छे लटक रहे थे, और पत्थर की चहारदीवारी जो उस सुन्दर, मनहर इमारत के चारो ओर थी, लाल २ फूल वाली बेलो से लदी हुई थी, जो रक्त के लाल २ धब्बो सी लगती थी। घर के पीछे फूलों से लदे संतरो के पेडों की एक लम्बी पंक्ति चली गई थी, जो पहाडो की तलहटी पर जाकर समाप्त हुई।

झोपडी के द्वार पर गिलट के छोटे २ अक्षरों मे मैंने यह नाम पढा, "विला डी एन्टन।" मैंने मन ही मन पूछा कि किस कवि या परी ने इस स्थान को बसाया,उसके लिये एकान्त ने क्या प्रेरणा दी कि वह ऐसे स्थान में, जो फूलों से लदा होने के कारण ऐसा लगता था कि मानो बसन्त ऋतु छाई हुई है ,रहने लगा।

थोडी ही दूर सडक पर एक पत्थर-कूटा पत्थर कूट रहा था। मैंने उससे झोंपडी के स्वामी का नाम पूछा। उसने उत्तर दिया कि यह झोपडी मैडम जूली रोमन की थी।

जूली रोमन! मैंने बचपन में उसके बारे मे लोगों को कहते हुए सुना था—महान एक्ट्रेस, रेचेल की प्रतिद्वन्दी और कोई भी स्त्री इतनी प्रशंसा, इतना प्रेम नहीं प्राप्त कर सकी थी, सबसे महान! उसके कारण कितने ही द्वन्द्वयुद्ध हुए, कितनी ही आत्म-हत्यायें की गई, और उसके लिये कितने लोग अपनी जानपर खेल गये। अब उस झाँसादेने वाली की क्या उम्र थी? साठ-नहीं, सत्तार-पचहत्तर वर्ष। जूली रोमन। यहाँ, इस मकान मे। मुझे एक प्रेमी से झगडा हो जाने पर अपने प्रेमी, एक कवि के साथ उसके सिसली भाग जाने पर सारे फ्रांस में उत्पन्न वातावरण का स्मरण हो आया। (मैं उस समय केवल बारह वर्ष का था।)

वह रात के पहिले शो, जिसके अन्दर श्रोताओं एव दर्शकों ने उसकी आधे घन्टे तक प्रशसा की और ग्यारह बार 'वन्स मोर' हुआ,के बाद ही अपने नये प्रेमी के साथ भागी थी। वह डाक की गाडी में कवि के साथ गई थी, उन दिनों रिवाज ही ऐसा था। उन्होंने निराली भूमि, 'यूनान की पुत्री,' मे प्रेम करने लिये समुद्र पार किया। वह भूमि सतरो के वृक्षों की कुञ्जों के नीचे, जो पालेरमो के चारो ओर है, "कोक्वे डीं ओव" के नाम से प्रसिद्ध है।

ऐटेना की उनकी चढ़ाई, और किस भाँति वे बाँह में बाँह डाले, गाल से गाल भिडाये ज्वालामुखी पहाड के मुख पर घूमते रहे, मानो वे उस अग्नि के समुद्र मे कूद पडना चाहते हो।

उन प्रभावोत्पादक कविताओ, जिन्होंने पीढ़ी की पीढी को चकाचौंध कर दिया और जो इतनी गम्भीर एव रहस्यमयी थी कि जिन्होने दूसरे कवियो के लिये एक नये ही संसार की सृष्टि कर दी, का लेखक अब काल के कराल गाल मे समा चुका था।

वह दूसरा परित्यक्त प्रेमी, जिसने उसके लिये सगीत के ऐसे भावो की सृष्टि की जो सबके हृदय मे वर्तमान रहे— भाव-विज्ञान के और दुख के जो कि हृदय मे सीधे ही पार चले जाते हैं।

वही यहाँ, पुष्पो से आवरित मकान मे रहती है।

मैं अब नही हिचकिचाया। मैंने घण्टी बजा दी। एक अठारह वर्षीय नौकर, जो असुन्दर और लजीला लगता था, अपने हाथों को निराले ही ढङ्ग से रखे हुए, किवाड खोलने आया। मैंने अपने कार्ड पर उस वृद्धा ऐक्ट्रेस के लिये एक शानदार धन्यवाद तथा एक उत्सुक प्रार्थना लिखी ताकि वह मेरा स्वागत कर सके। शायद वह मेरा नाम जानती हो और मुझे मिलने की आज्ञा दे दे।

नवयुवक व्यक्तिगत सेवक चला गया, किन्तु शीघ्र ही आकर उसने मुझसे पीछे २ चले आने को कहा। उसने मुझे एक स्वच्छ ड्राइंगरूम में पहुँचा दिया, जो लुइस फिलिप्स के ढङ्ग से हर बात मे मिलता था, जिसके सामानों को ढकने के वस्त्र एक सोलह वर्षीया तरुणी द्वारा जो पतली थी किन्तु अधिक सुन्दर नहीं थी, मेरे सम्मान में हटाए जा रहे थे।

तब नौकर वहाँ मुझे अकेला छोड कर चला गया । मै रुचिपूर्वक कमरे मे चारो ओर देखने लगा । दीवाल पर तीन चित्र टग रहे थे एक तो एक्ट्रेस का सम्मानीय पार्ट मे, दूसरा एक लम्बा फ्राक-कोट जो कमर पर तंग था और कमीज जो उन दिनो में प्रचलित थी,पहने हुए प्रेमी कवि का था, तीसरा था उस गायक प्रेमी का जो एक क्लेवीकोर्ड के सम्मुख बैठा हुआ था । महिला अपने उस चित्र मे सुन्दर एव आकर्षक लग रहीं थी किन्तु उसके चित्र मे कुछ रङ्गो का आडम्बर था, जैसा कि उन दिनो में सामान्यत प्रचलित था। उसके अधरो एव नेत्रो मे मधुर मुस्कान थी, और चित्रकारिता उच्च श्रेणी की थी । वे तीनो स्मरणीय चेहरे आने वाली पीढ़ी की ओर देखते प्रतीत होते थे, और उनकी परिस्थितियाँ विगत दिवसो का और दिवगत व्यक्तियो का स्मरण दिलाती थी ।

एक द्वार खुला और एक ठिगनी स्त्री ने प्रवेश किया । वह बहुत वृद्ध और ठिगनी थी तथा उसके बालो की लडियाँ और भौहें श्वेत हो चुकी थीं । उसे देखकर मुझे एक सफेद, तेज और चुस्त चूहे का स्मरण हो आया । उसने मेरे सामने हाथ बढ़ाते हुए, स्वस्थ, सजग, गम्भीर एवं कांपते हुए स्वर में बडी मृदुलता से कहा "श्रीमान् जी, आपको धन्यवाद है । आज के पुरुषों की बडी दया है कि वह विगत दिनों की स्त्रियो को स्मरण करते हैं। विराजिये !"

मैंने उसको बताया कि उसके मकान ने मुझे आकर्षित कर लिया, कि मैने स्वामी का नाम जानने का यत्न किया और नाम जानने के पश्चात् मैं उसके मकान की घण्टी बजाने की अपनी बलबती इच्छा को दबा नहीं सका ।

"श्रीमान जी, आपकी भेंट से मुझे बहुत आनन्द हो रहा है।" वह बोली "क्योंकि यह पहली ही बार है जब ऐसा हुआ है । जब आपका मधुर धन्यवादों युक्त कार्ड मुझे दिया गया तब मुझे ठीक वैसे ही आश्चर्य हुआ जैसे कि बीस वर्ष पुराने मित्र से कोई मिलने आया हो । मैं विस्मृत की जा चुकी हूँ, वास्तव में विस्मृत, मुझे कोई भी मेरा स्मरण नहीं करता, मेरी मृत्यु पर्यन्त कोई

स्मरण भी नहीं करेगा, तब तीन दिन तक सारे समाचार पत्र जूली रोमन के विषय में विशदता से चिन्ह, निन्दा और शायद प्रशंसाएँ भी वर्णन करते हुए कहानियाँ लिखते रहेंगे। तब मेरे नाम का अन्त हो जायगा।"

वह क्षण भर चुप रही और फिर बोली: "और अब अधिक समय नहीं है। शायद कुछ ही महीनों में या दिनो में यह ठिंगनी स्त्री भी जो इस समय जीवित है एक मृत देह मात्र रह जायगी।"

उसने अपने नेत्र उठाये, जो उसके अपने चित्र से जा मिले, जो अपने मुरझाते हुए ढाँचे की ओर देख कर हँसता हुआ सा प्रतीत हो रहा था। तब उसने उस घृणित कवि और उस प्रेरित गायक, दोनों की ओर देखा, जो यह कहते प्रतीत होते थे 'अब वह खण्डहर हमसे क्या चाहता है ?"

एक अनिर्वचनीय उत्सुक एवं बलवती उदासी, ऐसी उदासी जो उन पर छाती है जिसका जीवन समाप्त हो चुका हो और जो अपनी स्मृतियो से गहन जल मे डूबते हुए व्यक्ति को भाँति सवर्ष करते रहते हैं, मेरे ऊपर छा गई।

मै जिस सीट पर बैठा हुआ था वहाँ से नीस से मोन्टे कारलो जाने वाली सड़क पर खूब गाड़ियाँ आती जाती अच्छी प्रकार से दिखलाई दे रही थी और उन गाड़ियो के अन्दर सुन्दरी नवयुवतियाँ तथा धनी एव प्रसन्न पुरुष मुस्कराते हुए एव सन्तुष्ट बैठे हुए थे। उसने देखा कि मेरी दृष्टि किधर थी, और मेरे विचारो को समझकर व्यथित मुस्कराहट से वह बोली: "वर्तमान एवं भूत दोनो एक साथ सम्भव नहीं होते।"

"आपका जीवन कितना सुन्दर रहा होगा।" मैंने कहा।

उसने एक दीर्घ निश्वास छोड़ते हुए कहा. "हाँ, सुन्दर एव मृदुल ! और इसी कारण मुझे इतना पाश्चाताप होता है।" मैंने देखा कि वह इतनी सजगता एव सावधानी से अपने विषय में बातचीत करना चाहती थी कि जैसे किसी भीषण घाव का स्पर्श किया जारहा हो। मैंने उससे प्रश्न करने

आरम्भ कर दिये। उसने अपनी सफलताओं, मस्ती भरी खुशियों, अपने मित्रो एव अपने समस्त विजयी जीवन के विषय मे बतलाया।

"श्री मती जी, क्या आपका सबसे बड़ा आनन्द और सबसे महान सुख आपके थियेटर मे होने के कारण आपको प्राप्त हुए" मैने पूछा।

"आह ! नही, " उसने शीघ्रता से उत्तर दिया।

मै मुस्कराया और उसने अपनी उदास दृष्टि उन दोनो पुरुषो के चित्रो की ओर उठाते हुए कहा·

"मुझे अपना सबसे महान सुख इनके कारण प्राप्त हुआ।"

मै यह पूछे बिना न रह सका कि उनमे से किस एक के कारण सुख प्राप्त हुआ।

"श्रीमान जी ! दोनो के कारण, कभी २ मै भी स्वय भ्रम मे पड़ जाती हूँ। अतिरिक्त इसके, मुझे इनमे से एक के प्रति आज भी घृणा सी है।"

"तब मैडम, आपकी सफलता उन पर नही वरन् स्वय प्रेम के कार्य र निर्भर हुई। वे तो केवल प्रेम के अस्त्र शस्त्र मात्र रहे।"

" यह सम्भव है। किन्तु ओह ! कितने विचित्र शस्त्रास्त्र थे।"

"क्या आपका निश्चय है कि आपको किसी साधारण से व्यक्ति ने जो महान तो नहीं होता वरन् आपके लिये अपना समस्त जीवन, समस्त हृदय, अपना समस्त ममत्व, हर विचार एव हर क्षण आप पर न्यौछावर कर सकता था, प्रेम नही किया या आपके अन्य प्रेमियो से बहतर आपको प्रेम नही कर सकता था। उन दोनो से आपको भयानक प्रतिवादी-सङ्गीत एव कविता प्राप्त हुए।

वह शक्ति से, उस यौवन पूर्ण स्वर से जो अभी आत्मा को कँपा सकता था, बोली: " नहीं ! श्रीमान जी, नहीं ! एक साधारण व्यक्ति शायद मुझ से और भी अधिक प्रेम कर सकता था किन्तु वह वैसे प्रेम नही कर सकता था जैसे उन दोनो ने मेरे साथ किया। आह ! किन्तु जैसा वे प्रेम-सङ्गीत गाना जानते थे वैसा ससार मे अन्य कोई भी नही गा सकता था।

"उन्होंने मुझे कैसे मस्त किया। क्या यह सम्भव है कि जो उन्होंने

शब्दो एव स्वरो मे खोजा वह किसी अन्य को प्राप्त हो सकता था ? यदि कोई समस्त कविता का और पृथ्वी एव आकाश के सङ्गीत का प्रेम मे समावेश नही कर सकता तो क्या प्रेम करना पर्याप्त है ? वे दोनों अपने गानों, अपने शब्दो एव अपने कार्यों से स्त्री को आनन्द से पूर्ण कर देना जानते थे। हाँ, शायद हमारी इच्छा मे सत्यता कम थी एवं भ्रम अधिक था, किन्तु वे भ्रम आपको बादलो मे उठा देते जब कि केवल सत्यता आपको पृथ्वी पर ही छोड देती। यदि अन्य लोग मुझसे प्रेम करते थे तो यह केवल उन्हीं के जरिये हो सका कि मैंने प्रेम को पहिचाना, अनुभव किया एव प्रेम की पूजा की।"

अकस्मात वह घोर दुख से चुपचाप अश्रु बहाने लगी। मैं खिड़की से सुदूर की ओर निहारता रहा और ऐसा बन गया कि मानो मुझको उसका कोई ज्ञान ही नही हुआ था।

"श्रीमान जी, आप देखते हैं कि बहुत से व्यक्तियो का अवस्था के साथ २ हृदय भी वृद्ध होता जाता है। मेरे साथ ऐसा नहीं हुआ। मेरी देह बेचारी उनहत्तर वर्ष की हो गई है किन्तु हृदय बीस का ही है। और यही कारण है कि मैं अपने स्वप्नों को सजोये इन पुष्पों के मध्य अकेली ही रहती हूँ।"

फिर हम दोनों के मध्य एक लम्बी चुप्पी रही। थोड़ी देर में वह आश्वस्त हो मुझ से मुस्करा कर कहने लगी

"श्रीमान जी यदि आप जानते कि मैं सन्ध्याओं को जब कि मौसम सुहावना होता है किस प्रकार व्यतीत करती हूँ तब आप किस भाँति मेरा परिहास करते। मैं अपनी गलती पर लज्जित होती हूँ और साथ ही मुझे अपने ऊपर करुणा भी उत्पन्न हो जाती है।"

मेरा उससे पूछना भी व्यर्थ था, वह नहीं बतलाती, जब मैं जाने के लिये उठा वह चिल्लाई "क्या इतनी जल्दी ?" मैने उसे बतलाया कि मेरा विचार मोन्टे कारलो जाकर भोजन करने का था और शीघ्र ही वह कुछ संकोच से मुझ से बोली।

"क्या आप मेरे साथ भोजन करना पसन्द नहीं करेंगे? मुझे तो बहुत प्रसन्नता होती।"

मैंने शीघ्र ही उसका निमन्त्रण स्वीकार कर लिया। उसने प्रसन्न हो घण्टी बजाई, जब वह अपनी नौकरानी को कुछ आज्ञायें दे चुकी, उसने कहा कि वह मुझे अपना मकान दिखलाना चाहती थी।

पौधों से भरा हुआ एक शीशे से ढका हुआ एक प्रकार का बरामदा भोजन गृह से बाहर था। वहाँ से संतरे के वृक्षों की लम्बी पंक्तियाँ जो पहाड़ों की तराइयों तक चली गई थी दिखलाई देती थीं। झाड़ियों की एक सघन कुञ्ज मे बनी हुई एक नीची सी सीट इसका सकेत करती थी कि वृद्धा एक्ट्रेस बहुधा वहाँ आकर बैठा करती थी।

तब हम फूलों को देखने के लिये बगीचे मे गये। सन्ध्या, वह शान्त एव ऊष्ण सन्ध्या जो समस्त सुगन्धियों को पृथ्वी पर लेकर आती है धीरे २ आ गई। जब तक कि हम लोग भोजन करने मेज पर बैठे तब तक काफी अंधेरा हो गया था। भोजन बहुत सुन्दर बना था और हम लोग काफी देर तक खाते रहे। हम लोग बिल्कुल मित्र बन गये। मेरे हृदय में उसके लिये एक सघन सहानुभूति जाग्रत हो गई। उसने शराब का एक गिलास पिया और वह और भी अधिक मित्रतापूर्ण एव विश्वासनीय हो गई।

"चलिये चलें, चन्द्र को देखें" उसने अन्त मे कहा "मै चन्द्र, प्रिय चन्द्र को बहुत मानती हूँ क्योंकि यह मेरे महान से महान आनन्द में गवाह रहा है। मुझे ऐसा लगता है मेरी समस्त मृदु स्मृतियाँ वहीं पर कोष की भाँति रखी हुई हैं, और मै उसकी ओर केवल इसलिये देखती हूँ कि वह मेरे पास वापिस आ जावे और कभी २ संन्ध्या को मैं अपने लिये एक सुन्दर दृश्य—इतना सुन्दर दृश्य सजाती हूँ कि यदि उसे आप केवल जानते होते। किंतु नही आप मेरे ऊपर बहुत हँसेंगे—मैं आपको नहीं बतला सकती—मेरी हिम्मत नहीं है—नहीं—नहीं मैं आपको नहीं बतला सकती।"

'आह! मैडम, मैं प्रार्थना करता हूँ आप कहिये!" मैंने उससे

प्रार्थना की। "आपका वह कौन सा रहस्य है? मुझे बतला दीजिये! मै सौगन्ध खाता हूँ कि मै नहीं हँसूँगा।"

वह हिचकिचाई, मैने उसके हाथ, उसके पतले, ठण्डे और दयनीय हाथ, पकडे और उनका एक एक करके न जाने कितनी बार चुम्बन लिया, उसके प्रेमी भी ऐसा पहिले दिनों मे भी नहीं करते। वह यद्यपि झिझक रही थी किन्तु द्रवित हो गई!

"आप मुझसे प्रण करते है कि आप नहीं हँसेंगे?" उसने हँस कर कहा।

"हाँ, मैडम, मै इसकी सौगन्ध खाता हूँ!"

"अच्छा, तब आइये!" उसने मुस्करा कर कहा।

हम लोग उठे, और ज्योंही उस हरी ड्रेस पहिने हुए असुन्दर नवयुवक ने उसके पीछे से कुर्सी खींची, वह उसके कानो मे धीरे २ धीमे स्वर से कुछ फुसफुसाई।

उसने आदर पूर्वक उत्तर दिया, "जी, मैडम, बहुत शीघ्र।"

उसने मेरी बाँह पकडी और मुझे बरामदे में लिवा ले गई। संतरे के वृक्षो में टहलने का दृश्य बहुत ही सुन्दर था। चान्द वृक्षो के मध्य एक पतली रजत ज्योत्सना फेंक रहा था, चांदनी की एक लम्बी पंक्ति घनी और झुकी हुई डालों मे से होकर पीली रेत पर गिर रही थी। वृक्ष फल रहे थे अत एक मीठी तथा मादक सुगन्ध से वायुमण्डल भरा हुआ था, और घने कुहरे से आच्छादित अधकार मे हजारों जुगनू तारो के बीजो की भाँति झिलमिल कर रहे थे।

"ओह, प्रेम के दृश्य के लिये कितना आदर्श वातावरण है।" मैं चिल्ला उठा।

वह मुस्कराई· "क्या यह नही है? क्या यह नहीं है? अभी आप देख लेगे।"

उसने मुझे अपने पास बैठा लिया और बडबडाई

"ऐसे दृश्यों की स्मृति ही मुझे जीवन पर पाश्चाताप करने को बाध्य कर देती है। किन्तु आप, आज कल के आप लोग, ऐसी बातों को स्वप्न में

भी नहीं सोचते । आप लोग तो केवल व्यापारी और धन कमाने वाले हो। आप लोग तो हम लोगों से बाते करना भी नहीं जानते । जब मैं 'हम लोग' कहती हूँ तब मेरा अर्थ नवयुवतियों से होता है । प्रेम सम्बन्ध तो अब केवल स्पर्श मात्र ही रह गये हैं और जो कि बहुधा दरजी के अस्वीकार किये हुए बिलो मे उत्पन्न हो जाते है । यदि आप बिल को स्त्री से अधिक महत्वपूर्ण स्वीकार करते है तो आप अदृश्य हो जाते है, किन्तु यदि आप स्त्री को अधिक महत्व देते है तो आप बिल का रुपया अदा कर देते है ! कितना सुन्दर ढङ्ग एवं आकर्षक प्रेम है ।"

उसने मेरा हाथ पकड कर कहा. "देखो ।"

मै उस प्रगट हुए आकर्षक चित्र को देख आनन्द से पूर्ण एव हतप्रभ हो गया । हमारे सामने वृक्षो की पंक्ति के अन्त से एक युवक और एक युवती, दोनो एक दूसरे की कमरो मे हाथ डाले हुए, उस चाँदनी में हमारी ओर आ रहे थे । बाँहो मे बाँहे डाले हुए वे दोनो चन्द्र किरणो मे, जिनकी मृदुल झलक से वे पूर्णतया स्नान किये हुए थे, धीरे २ आगे बढ़े ।

क्षण भर के लिये वे अन्धकार मे अदृश्य हो गये और फिर उस भवन के पास की ओर दृष्टिगत हुए ।

नवयुवक पिछली शताब्दी की श्वेत मलमल के वस्त्र पहिने हुए था और एक चौड़ा टोप, जिसके ऊपर शुतुरमुर्ग का एक पंख लग रहा था, लगाये हुए था । युवती चौड़े घेरेदार एक स्कर्ट पहिने हुए थी तथा उसके सिर पर रीजेन्सी के काल का ऊँचा टोप लग रहा था ।

अन्त मे वे हम लोगो से लगभग सौ कदम दूर आकर रुक गये, और पगडण्डी के मध्य खड़े होकर उन्होंने एक दूसरे का, स्नेहपूर्ण अभिवादन कर, आलिगन किया ।

अकस्मात मै उन दोनो नौकरो को पहिचान गया । तब मुझे सारे शरीर को हिला देने वाली हँसी हँसने की बलवती इच्छा हुई । खैर, मैं हँसा नही । मैने अपनी प्रवृत्ति को दबा लिया और इस अद्भुत हास्य के दूसरे दृश्य की प्रतीक्षा करने लगा

प्रेमी अब पुन पगडण्डी के अन्त में पहुँच गये, और अन्तर ने उन्हें

फिर आकर्षक बना दिया। वे आगे ही आगे बढते रहे और अन्त मे स्वप्निल चित्रो की भाँति अदृश्य हो गये। उनके बिना वह पगडण्डी अब सूनी लगने लगी।

मैंने भी विदा ली। मैं वहाँ से शीघ्र ही चल दिया जिससे कि कहीं वे मुझे फिर से न दिखलाई दे जांये, क्योकि मैने सोचा शायद यह चश्मा बहुत समय तक के लिये बनाया गया था, जिससे कि समस्त अतीत-वह प्रेम एव नाट्य प्रभाव का अतीत, स्मरण आ सके, वह झूठा, धोकेबाज एव दुखी अतीत जो कि झूठा होते हुए भी वास्तव में आकर्षक था उस वृद्धा एक्ट्रेस के रोमान्स पूर्ण हृदय में पुन कोमल वृत्तियो को जागरित कर सके और मुझे अपना अन्तिम साधन बनाए।

सौन्दर्य प्रतिमा

बहुत वर्ष पहले ब्रेनिजा मे एक विख्यात तालमूडिस्ट* रहा करता था। उसकी प्रसिद्धि का कारण उसकी अपनी बुद्धि, विद्वत्ता एव भगवान की सत्ता को स्वीकार करना ही नही था तो उसकी अपनी सुन्दरी पत्नी भी थी। ब्रेनिजा की वीनस पत्नी वास्तव में उस नाम के योग्य थी। वह अपने निराले सौन्दर्य के ही कारण और इससे भी अधिक तालमूड मे प्रगाढ योग्यता रखने वाले एक व्यक्ति की पत्नी के नाते वास्तव मे इस नाम की अधिकारिणी थी क्योंकि साधारणतया यहूदी दार्शनिकों की पत्नियाँ असुन्दर ही होती है या उनमे कहीं न कहीं शारीरिक दोष होता ही है।

तालमूड इसका वर्णन इस भाँति करता है यह मानी हुई बात है कि विवाह स्वर्ग मे होते हैं। और लडके क जन्म पर एक आकाशवाणी उसकी भावी पत्नी का नाम बतलाती है, और इसी भाँति लडकी के विषय मे भी किन्तु जैसे एक अच्छा पिता अपने अच्छे माल से बाहर पिण्ड छुडाने की कोशिश करता है और अपने घर पर अपने बच्चो के लिये खराब माल को प्रयोग मे लाता है इसी तरह भगवान तालमूडिस्टो को ऐसी ही स्त्रियाँ देता है जिन्हे अन्य लोग लेने की इच्छा नही करते।

खैर, भगवान ने हमारे तालमूडिस्ट के मामले मे एक छूट दी, और शायद इस अपवाद से नियम को प्रचलित रखने और कुछ सरल दिखलाने के लिये उसको सौन्दर्य की एक जीती जागती प्रतिमा प्रदान की थी। इस दार्शनिक की स्त्री किसी भी राजा की गद्दी की या मूर्तिकार की गैलरी के खम्भे की चौकी की शोभा बढा सकती थी। उसका मुखडा आश्चर्यजनक सुन्दरता से दीप्त एवं लम्बा था, उसका सिर घने काले घुँघराले बालो से जो उसके गर्वीले कन्धो पर चुन्नटो मे पडे रहते थे, अपूर्व शोभा को प्राप्त था। दो बडे मद भरे काले नेत्र लम्बे २ डोरो के नीचे से चमकते और उसके सुन्दर हाथ तो ऐसे प्रतीत होते मानो सगमरमर के बने हो।

---

* यहूदियों का धर्म व कानून के ज्ञाता।

यह प्रभामयी नारी, जो प्रकृति ने शायद शासन करने, अपने चरणों पर दास दासियो को पडे रखने, चित्रकारो की तूलिकाओ को व्यस्त रखने, मूर्तिकारो की छेनियो और कवियो की लेखनी को विश्राम न देने के लिये निर्माण की थी, एक बहुत ही सुन्दर एवं दुष्प्राप्य पुष्प, जो एक गर्म कमरे मे बन्द पडा हो की भाँति जीवन व्यतीत कर रही थी। वह सारे दिन अपने मूल्यवान फर को ओढे स्वप्निल संसार में डूबती उतराती सड़क की ओर देखती रहती।

उसके कोई सन्तान नही थे, उसका दार्शनिक पति अध्ययन करता और प्रार्थना करता फिर लगातार सुबह ही तड़के से बडी देर रात तक अध्ययन करता रहता, उसकी स्वामिनी थी "आवरित सौन्दर्य" जैसा कि तालमूडिस्ट कबाला के बारे मे कहते हैं। वह अपने घर की ओर कोई ध्यान नहीं देती क्योकि उसके पास अपार धन था। और सारा कार्य एक ऐसी घडी की भाँति, जिसमें सप्ताह में एक बार चाबी भरी जाती है, अपने आप चलता रहता था। उससे मिलने कोई भी नहीं आता और न वह ही किसी से मिलने के लिये घर से बाहर निकलती, वह बैठी रहती, स्वप्नों में विचरती रहती, विचार-मग्न रहती और अँगडाइयाँ लेती रहती।

❀ ❀ ❀ ❀

एक दिन जब विद्युत एव मेघो के गर्जन की भयङ्कर आँधी नगर पर अपना क्रोध प्रदर्शित कर चुकी और मसीहा को अन्दर प्रवेश करने देने के लिये समस्त खिडकियाँ खोल दी गईं तब वह यहूदिन, सौन्दर्य की प्रतिमा, नित्यप्रति की भाँति अपनी आराम कुर्सी पर बैठी हुई थी, वह फर ओढे रहने पर भी ठिठुर रही थी और विचारों मे निमग्न थी। एकाएक उसने अपने चमकते हुए नेत्र अपने पति की ओर जो तालमूड के सम्मुख बैठा हुआ अपने शरीर को आगे पीछे हिला रहा था स्थिर कर दिये और एकाएक बोली·

"मुझे बतलाइये कि दाऊद-पुत्र महीसा कब आवेंगे ?"

दार्शनिक ने उत्तर दिया, "तालमूड कहता है कि जब सब यहूदी लोग या तो पुण्यात्मा हो जावेंगे या पापात्मा तब वह पधारेंगे।"

"क्या आपका विश्वास है कि सारे के सारे यहूदी कभी महात्मा हो जायेंगे ?"

"यह विश्वास मै कैसे कर सकता हूँ ।"

"तो जब सारे के सारे यहूदी पापात्मा हो जायेंगे तब मसीहा आयेंगे ।"

दार्शनिक ने अपने कन्धे हिलाये और पुन तालमूड के गोरख धन्धे मे तल्लीन हो गया, जिसमे ऐसा कहा गया है कि केवल एक ही व्यक्ति स्थित-प्रज्ञ हुआ था। सुन्दरी नारी पुन खिडकी मे से भारी वर्षा की ओर खोई-खोई सी देख रही थी और उसकी श्वेत उगलियाँ उसकी सुन्दर पोशाक के फर के साथ अनजाने मे खेलती रहीं।

* * * * *

एक दिन यहूदी दार्शनिक पड़ौस के गाँव में, जहाँ एक रीत रिवाज सम्बन्धी प्रश्न तय होना था, गया हुआ था। उसको विद्वत्ता को धन्यवाद कि वह प्रश्न उसकी आशा के विपरीत शीघ्र ही हल हो गया और जैसा उसका विचार था दूसरे दिन सुबह लौटने की जगह वह अपने एक मित्र के साथ, जो कि उससे कम विद्वान नही था, उसी दिन सध्याकाल लौट आया। वह अपने मित्र के घर पर ही गाडी से उतर गया और अपने घर तक पैदल आया अपने घर की खिडकियों को सघन प्रकाश से प्रकाशित और एक अफसर के नौकर को अपने घर के सामने आराम से पडा हुआ सिगरेट पीता हुआ देख कर उसे बडा आश्चर्य हुआ।

"कहिये जनाब क्या हो रहा है ?" उसने कुछ विस्मय से किन्तु मित्रतापूर्ण स्वर से पूछा।

"मैं पहरा दे रहा हूँ कि कहीं सुन्दरी यहूदिन का पति यकायक न लौट आवे।"

"सचमुच ? खैर ध्यान से और पूरी तरह से दृष्टि रखना।"

यह कहकर दार्शनिक ने बहाना तो वहाँ से जाने का किया किन्तु वह बगीचे के पिछले द्वार से घर के अन्दर चला गया। जब वह पहिले कमरे मे घुसा तब उसे दो व्यक्तियों के लिए बिछाई हुई एक मेज दिखलाई दी जिससे यह स्पष्ट हो रहा था कि अभी २ थोडी देर पहिले ही खाली की गई है। उसकी

पत्नी नित्यप्रति की भाँति अपने बेड-रूम की खिडकी पर फर ओढे बैठी हुई थी, किन्तु उसके कपोल शङ्का से लाल थे, और उसके काले नेत्र नित्यप्रति की भाँति मदभरे नहीं दिखलाई देते थे किन्तु अपने पति के ऊपर स्थिर थे और उनमें से सतोष एव हँसी दोनो साफ २ झलकते थे। उसी क्षण उसका पैर फर्श पर पड़ी हुई किसी वस्तु से टकराया जिसकी एक विचित्र सी आवाज हुई। उसने उसे उठाकर प्रकाश में देखा। वह जूते की एडी का काँटा था।

"तुम्हारे पास यहाँ कौन था ? तालमूडिस्ट ने पूछा।

यहूदिन सौन्दर्य प्रतिमा ने घृणा से अपने कन्धे हिलाये किन्तु उत्तर नहीं दिया।

"मै तुम्हें बतलाऊँ ? हुसारो का कैप्टन यहाँ तुम्हारे पास आया था।"

"और उसे मेरे पास यहाँ आना क्यो नहीं चाहिये था ?" उसने अपने श्वेत हाथ से फर को अपनी जाकट पर खिसकाते हुए कहा।

"स्त्री ! तुम होश में तो हो ?

"मै बिल्कुल होश मं हूँ।" वह बोली और उसके बिम्ब से आनन्द-पूर्ण अधरो पर एक मुस्कान नाच उठी। "किन्तु क्या मुझे अपना पार्ट अदा नही करना चाहिये ताकि मसीहा आकर हम गरीब यहूदियों की मुक्ति करें ?"

टोइने

चारो ओर दस मील दूर २ तक हर कोई टोइने, मोटे टोइने, "मेरे-अच्छे-टोइने," टूरनेवान्ट के जमींदार अनटोइने मचेवले, को जानता था।

उसने इस गाँव को, जो कि घाटी की उस तराई में अवस्थित था जो समुद्र की ओर जाती है, प्रसिद्ध बना दिया था। यह गरीब किसानों का एक छोटा सा गाव था और इसमे खाइया एव वृक्षों से घिरे नोरमनों के लगभग एक दर्जन मकान थे। मकान पहाडी के मोड के पीछे इन झाडियों से घिरी उपत्यिका में बने हुए थे और इसी कारण यह गाँव टूरनेवाट कहलाता था। आँधी में छिपने के लिये जिस भाँति चिडियाँ खाइयो मे छिप जाती है उसी भाँति उन लोगो ने समुद्र के नमक के भयानक तूफानो से जो अग्नि की भाँति जलाता और काटता है तथा ठण्ड के झोकों की भाँति मुरझा देता और नष्ट कर देता है, बचने के लिए इस घाटी में अपना आश्रय खोज लिया था।

सारा गाँव अनटोइने मचेबले की सम्पति सा लगता था। अनटोइने मचेबले अपने व्यवहार के कारण, जिसे वह निरन्तर एक सा ही बनाये रखता था, टोइने और 'मेरे अच्छे टोइने' के नाम से सम्बोधित किया जाता था। "मेरी अच्छी फ्रांस भर में सब से अच्छी है," वह कहता। उसकी अच्छी थी उसकी शराब, इसको अप्रत्यक्ष ही रहने दो। गत बीस वर्षों से वह अपने गाँव को अपनी शराब से सींचता रहा था, और अपने ग्राहकों से बात करते हुए वह कहता "यह पेट को गर्म और दिमाग को साफ करती है, मेरे बेटे, तुम्हारे स्वास्थ्य के लिये इससे अधिक सुन्दर और कोई चीज नहीं।" यद्यपि उसके कभी कोई पुत्र नहीं हुआ था, किन्तु वह हर एक से ही कहता "मेरे बेटे"।

आह, हाँ, गाँव भर मे तो क्या इर्द गिर्द चारो ओर सबसे अधिक भारी भरकम शरीर के वृद्ध टोइने को प्रत्येक व्यक्ति जानता था। उसका छोटा मकान उसके लिये आश्चर्यजनक छोटा लगता, और जब वह द्वार पर खडा होता,

जहाँ कि वह दिन भर में सबसे अधिक समय व्यतीत करता, तब प्रत्येक व्यक्ति को आश्चर्य होता कि वह मकान में घुसता कैसे होगा। किन्तु जब भी कोई ग्राहक आता तब वह हर बार अन्दर प्रवेश करता क्योंकि मेरा टोइने अच्छा एक छोटा गिलास देने के लिये आमन्त्रित किया जाता।

उसकी होटल पर साइन बोर्ड था "मित्रो का अड्डा" और टोइने वास्तव मे सब लोगो का मित्र ही था। फेकेम्प से और मौन्टीबिलया से लोग उसके पास उसके साथ बैठ कर मद्यपान करने और उसकी कहानियाँ सुनने आते क्योंकि यह भारी भरकम शरीर का अच्छे स्वभाव वाला व्यक्ति पत्थर तक को हँसा देता था। वह गाली बके बगैर ही मजाक कर सकता था, जो वह कहने का साहस नही करता उसे आँख मारकर ही समझा देता, और प्रसन्न होकर स्वय न हँसकर दूसरे को हँसने के लिये किसी की भी जाघ में चुटकी काट लेता। और फिर उसे शराब पीते देखना तो एक विस्मय ही था। जो भी उसे शराब पेश करता वह अपने शरारती नेत्रों में आनन्द का समावेश कर, आनन्द जो उसे दूनी खुशी से प्राप्त होता, पी लेता पहिला तो निहाल होने का, और दूसरा अपने मित्र के रुपयों से पूँजी एकत्रित करने का। समाज के गुण्डों को आश्चर्य होता कि उसके कोई सतान क्यो नहीं थी और एक दिन तो उन्होने उससे पूछ भी डाला। वह शरारत से भरी हुई आँख मार कर बोला "मेरी स्त्री मेरे जैसे अच्छे व्यक्ति के योग्य आकर्षक नही है।"

टोइने और उसकी पत्नी के झगडो मे मद्यम लोग उसी भाँति आनद लेते जिस भाँति वे अपनी शराब मे लेते थे क्योंकि तीस वर्ष के विवाहित जीवन मे वे हमेशा ही झगडते रहे थे। केवल टोइने ही उसे हँसी मे टाल देता जबकि उसकी स्त्री क्रोधित हो उठती। वह एक लम्बी किसान औरत थी जो नटनियो की भाँति, जो बाँस की खपचियो को पैरो में बाँधकर चलती हैं, लम्बे डगों पर अपने पतले चौडे ढाँचे को जिसका कि सिर घुग्घू की भाँति था लेकर चलती थी। पब्लिक हाउस के पीछे सारा दिन वह छोटे से आगन में मुर्गी पालने मे व्यतीत करती और वह मुर्गों को मोटा करने में सफलता प्राप्त करने के कारण चारों ओर विख्यात थी।

जब कभी फेकेम्प की कोई धनी महिला अपने वर्ग के लोगो को दावत

देती तब दावत की सफलता के लिये माँ टोइने के आँगन के प्रसिद्ध मुर्गों से उस दावत को सजाना अति आवश्यक माना जाता ।

किंतु उसका स्वभाव खोटा था और वह हर बात से सदा ही असतुष्ट रही आती । वह हर एक से, और अपने पति से तो विशेषतया, क्रोधित रहती । वह उसके हँसमुख पने, उसकी प्रसिद्धि और उसके अच्छे स्वभाव और उसके मोटापे का मजाक बनाती । वह उससे बहुत घृणा से व्यवहार करती क्योंकि उसके अनुसार वह बिना परिश्रम किये धन प्राप्त करता और क्योंकि वह दस साधारण व्यक्तियों के बराबर अकेला ही खा पी जाता । वह कहती कि वह अस्तबल में नङ्गे सूअर के साथ जिससे उसकी शकल मिलती थी केवल बाँधे रखने के योग्य था, और वह चर्बी के उस लोथड़े की तरह का था जो उसके पेट में दर्द कर देता था । वह उसके मुँह पर चिल्लाती "थोड़ी देर रुको, थोड़ी देर रुको, हमें अभी मालूम पड़ा जाता है कि क्या होने वाला है । यह हवा का बड़ा थैला अभी अनाज के बोरे की तरह फटा जाता है ।"

टोइने हँसता और तब तक हँसता रहता जब तक कि वह उबाल आने पर बर्तन के ऊपर रखी हुई तश्तरी की तरह हिलने न लगता और अपने बृहद पेट को थपथपाकर कहता. " मेरी बुड्ढी मुर्गी, कोशिश करो कि तुम्हारी मुर्गियों के बच्चे भी इसी तरह मोटे हो जांय ।"

और अपनी बाँहें उठाकर अपनी मासंल भुजाएँ दिखलाता ।

"क्या तुम नहीं देखतीं कि पंख तो उगने लगे है ?" वह चिल्लाता और ग्राहक मेज पर अपनी मुट्ठियाँ मारते, आनन्दित हो हँसते, अपने पैर पीटते और खुशी की अधिकता में फर्श पर थूकते ।

वृद्धा और भी क्रोधित हो उठती और अपनी पूरी शक्ति लगाकर चीखती. "जरा देखना क्या होता है । तुम्हारा 'टोइने-मेरा-अच्छा' अनाज की भाँति फट जायगा ।"

और वह मद्यपों की भीड़ के अट्टहास पर क्रोध से उन्मत्त हो बाहर भाग जाती ।

वास्तव में टोइने इतना मोटा लाल और कम साँस का हो गया था कि उसे देखकर आश्चर्य होता । वह उन विशाल जीवों में लगता था जिनके

साथ मृत्यु चालों, हँसी दिल्लगियो और साघांतिक स्वांगो से विनाश कार्य की धीमी प्रगति को और भी हास्यास्पद बनाते हुए अपने आपको प्रसन्न करती रहती है। श्वेत बालो, काँपते हुए अङ्गों, झुर्रियो और दुर्बलता के रूप मे अपना स्वरूप प्रकट करने के स्थान पर जिससे कि कोई भी काँप कर यह कह उठता है "हे भगवान ! वह अब कितना बदल गया।" वह टोइने को मोटा करने में, उसको गोल गुट्टा राक्षस बनाने में, उसके चेहरे को लाल बनाकर दैवी स्वास्थ्य का स्वरूप देने मे, आनन्दित होती और जो वह दूसरो के लिये कुरूपता देती वह टोइने के सम्बन्ध मे दयनीय होने के स्थान पर हास्यास्पद हो गई थी।

"जरा देखना, देखना तो सही !" मॉ ट इने मुर्गियों के आँगन मे दाने फितराते हुए कहती "हम भी देखेंगे कि क्या होता है ?"

२

एक दिन टोइने को लकवा मार गया। वे लोग उस विशाल दैत्य को होटल के पार्टीसन किये हुए दूसरे कमरे में ले गये ताकि वह दीवाल के दूसरी ओर होने वाली बातचीत को सुन सके और अपने मित्रों से बातचीतें कर सके क्योकि उसका मस्तिष्क अभी भी साफ था जबकि उसका शरीर लुञ्ज एवं असहाय हो गया था। उन लोगों को आशा थी कि उसके सशक्त अङ्ग फिर से कुछ शक्ति प्राप्त कर लेंगे। किन्तु यह आशा शीघ्रही मिट गई और टोइने-मेरा-अच्छा' को रात दिन अपने बिस्तर में ही जो कि सप्ताह मे एक बार चार मित्रों की सहायता से साफ किया जाता, लेटा रहना पडता। जब उसके चार मित्र उसे पकडकर उठाते थे तब उसकी चटाई बदली जाती वह प्रसन्न ही रहा किन्तु अब प्रसन्नता मे पहले से कुछ भिन्नता थी। वह अपनी स्त्री की उपस्थिति मे पहले से अधिक डरपोक, विनम्र एव एक बच्चे की भाँति भयभीत रहता। उसकी पत्नी उससे रात दिन बुरा भला कहती रहती। "वह पड़ा हुआ है पेटू, जाहिल किसी काम का नहीं, बेकार चीज !" वह चिल्लाई। टोइने ने कोई उत्तर नहीं दिया, केवल अपनी स्त्री की पीठ होते ही आँख मारी और अपने बिस्तरे पर करवट बदली। वह इतना ही हिलडुल सकता था। यह कर- वटों को 'दक्षिण की या उत्तर की ओर हिलना' कह कर पुकारता था।

अब उसका दिल बहलाव केवल इतना सा ही रह गया था कि वह दीवाल की दूसरी ओर चलती हुई बातचीतों को सुनता और जब अपने किसी मित्र को आवाज को पहचान लेता तब उच्च स्वर से कहता' "हलो मेरे बेटे! क्या तू है सेलेस्टाइन ?"

और सेलेस्टाइन मालोजल उत्तर देता "हाँ! मै हूँ फादर टोइने। और तुम बड़े खरगोश, अब तुम कैसे चौकड़ी भरते हो ?"

"सेलेस्टाइन! मै अभी चौकडी नही भर सकता हूँ।" टोइने उत्तर देता "किन्तु पतला भी नहीं हो रहा हूँ। काठी भी मजे में है।" शीघ्र ही वह अपने मित्रों को अपने पास कमरे मे निमन्त्रित करता क्योंकि उसे उन लोगो को अपने बिना अकेले शराब पीते देख कर दुख होता था। वह उनसे कहता कि उनके साथ बैठकर शराब पीने मे असमर्थ होने के कारण उसे बहुत क्षोभ होता था। वह कहता "मैं दूसरी बातें तो सहन कर सकता हूँ, मेरे बेटो, किन्तु तुम्हारे साथ शराब न पीने से मै बहुत क्षुब्ध हो उठता हूँ।"

तब माँ टोइने का घुग्घू का सा सिर खिड़की में दिखलाई देता और वह कहती "देखो इसको देखो! महा जाहिल को, जिसे कि सूअर की तरह खिलाया और नहलाया जाय, जिसको सूअर की ही तरह रखवाली की जाय!"

जब वह चली जाती तब कभी २ एक लाल पङ्ख का मुर्गा आकर खिड़की की सिल पर बैठ जाता और अपने गोल एवं विचित्र नेत्रों से सामने देखकर बडे उच्च स्वर से कुकडू कूँ करता और कभी २ दो या तीन मुर्गियाँ पङ्खों को फडफडाती हुई, फादर टोइने की प्लेट से गिरे हुए रोटी के टुकड़ों से आकर्षित हो, आ जाती।

'टोइने-मेरा- अच्छा' के मित्रों ने बहुत ही जल्दी उसकी होटल में से उसके कमरे की ओर रास्ता बना लिया और नित्यप्रति सायंकाल से पूर्व वह उस भारी भरकम आदमी के बिस्तरे के चारों ओर बैठकर गप-शप लड़ाने लगे। इस टोइने की शरारत, बिस्तर पर ही पडे हुए, उन लोगों को हँसाती रहती। वह दैत्य को भी हँसा सकता था। उसके तीन मित्र थे जो नित्यप्रति आते रहते। सेलेस्टाइन मालोजल एक लम्बा, फालतू आदमी जिसकी देह सेब के पेड की डाल की भाँति झुकी हुई थी, प्रोस्पर होर्सलेविले, एक ठिगना,

जर्जरतन वृद्ध, जिसकी नाक चूहो की सी थी और जो लोमड़ी की भाँति चालाक था, और सोजर पोमेले जो कभी एक भी शब्द मुँह से नहीं निकालता किन्तु दिल बहलाव तो कर ही लेता। वे लोग आगन मे से एक तख्ता उठा लाये थे और उसे बिस्तर के ऊपर रख दिया था और फिर उसके ऊपर दो बजे से लगाकर शाम के ६ बजे तक ताश खेलते रहते। किन्तु थाड़े ही दिनो मे माँ टोइने ने बाधा उपस्थित कर दी। वह यह सहन नही कर सकती थी कि उसका पति अपने बिस्तर पर ताश खेलकर अपना दिल बहलाये। जब भी वह उन्हे ताश खेलते देखती तभी क्रोध मे भरकर वहाँ आ धमकती, तख्ते को उलट देती और ताशो को उठाकर होटल में यह कहती हुई ले जाती कि इस चर्बी के लोथडे को मेहनत-कशों की भाँति काम न करने पर भी खाना पिलाना ही क्या कम है। सेलेस्टाइन मालोजल तो इस तूफान के आगे सिर झुका देता किन्तु प्रोसपर होर्सलेविले उस वृद्धा को, जिसका क्रोध उसके लिये आनन्द का विषय बन जाता, और भी अधिक उत्तेजित करने का प्रयत्न करता। एक दिन जब वह नित्य प्रति से भी अधिक क्रोध में थी तब वह उससे बोला "हलो माँ टोइने! तुम जानती हो कि यदि तुम्हारे स्थान पर मैं होता तो क्या करता?"

उसका अर्थ समझने को वह उसकी ओर उल्लुओ के से अपने नेत्र गड़ा कर रुक गई। वह कहता रहा "तुम्हारा पति सदैव बिस्तर पर ही पडा रहता है, भट्टी की तरह गर्म रहता है। मै तो इसको अंडे सेने का काम देता।"

वह, यह सोचती हुई कि वह मजाक नही कर रहा, उस किसान का शैतानी और चालाकी से भरा हुआ चेहरा देखती हुई मूर्खों को भाँति खडी रही। वह कहता रहा

"मैं इसकी दोनों बाँहो के नीचे पाँच २ अंडे उसी दिन रख देता जिस दिन पीली मुर्गी अपने अंडे सेना आरम्भ करती। ये सब एक ही काल मे हो जाता, और जब वे अंडे मे से बाहर निकलते तो फिर मै तुम्हारे पति के बच्चों को पलवाने के लिये मुर्गी के नीचे रख देता। और इस भाँति तुम्हे लाभ हो जायगा, माँ टोइने।"

वृद्धा आश्चर्यचकित हो गई। "क्या ऐसा हो सकता है ?" उसने पूछा।

प्रोस्पर कहने लगा, "क्यो, हो क्यो नहीं सकता ? जब लोग अण्डो को सेने के लिये गर्म बक्सो मे रखते है तब वह गर्म बिस्तर पर क्यों नहीं रखे जा सकते ?"

वह इस तर्क से बहुत प्रभावित हो गई और विचारमग्न एवं प्रसन्न हो चली गई।

आठ दिन पश्चात वह टोइने के कमरे मे अण्डो से भरी हुई अपनी झोली लेकर आई, और बोली "मैने अभी २ पीली मुर्गी के नीचे दस अण्डे सेने के वास्ते रखे है, और यह लो, ये दस तुम्हारे लिये है। होशियारी से रखना, कही हट न जाँये !"

टोइने आश्चर्यचकित हो गया। वह चिल्लाया "तुम्हारा मतलब ?"

"मेरा मतलब है, बेकार आदमी, कि तुम इन्हे सेओगे।"

पहिले तो टोइने हँसा, किन्तु उसके हठ पकडने पर वह क्रोधित हो गया उसने भी हठ पकड़ ली और अपनी विशाल भुजाओ के नीचे की उसकी गर्मी से वह सेऐ जा सकते हैं, अण्डे रखने से दृढतापूर्वक इन्कार कर दिया। किन्तु उस जिद्दी औरत ने लाल पीली होकर कहाः

"तुम्हे, जब तक तुम अस्वीकार करते रहोगे, खाने को गस्सा भी नहीं मिलेगा, देखते हैं फिर क्या होता है।"

टोइने बेचैन हो गया, किन्तु जब तक घड़ी ने बारह नहीं बजाये तब तक तो वह चुप रहा, तब उसने अपनी पत्नी को बुलाया जो रसोईघर से ही चिल्ला पड़ी. "तुम्हारे खाने के लिये आज कुछ भी नहीं है, महान आलसी जीव !"

पहिले तो उसने सोचा कि वह मजाक कर रही थी, किन्तु जब उसने देखा कि वह अपनी बात पर दृढ थी तब उसने उससे प्रार्थना की और कसमें खाईं। वह उत्तर, दक्षिण की ओर करवटे बदलने लगा, और भूख लगने के कारण तथा रसोई घर से भोजन की सुगन्धि आने के कारण दुखी होकर वह अपनी बडी २ मुट्ठियाँ दीवाल पर पटकने लगा और अन्त मे बिल्कुल

थक जाने पर उसने अपनी स्त्री को अपने बिस्तर मे बाहो के नीचे अण्डे रखने की छूट दे दी। उसके बाद कहीं जाकर उसे शांरवा मिला।

जब नित्यप्रति के ही समय पर उसके मित्र उससे मिलने आये तब उन्हे लगा कि उसका स्वास्थ्य बहुत अधिक खराब था, वह बहुत दुखी और दर्द से पीड़ित सा लग रहा था।

वे पहिले की ही भाँति ताश खेलने लगे, किन्तु उन्हे लगा कि टोइने खेल मे कोई रुचि नहीं ले रहा था, और अपने हाथों को इतनी सावधानी से और इतने अधर रखे हुआ था कि उन्हे लगा कि दाल मे अवश्य कुछ काला है।

"क्या तैंने अपनी बाँहे बाँध ली है?" होसंविले ने पूछा।

टोइन ने सहम कर उत्तर दिया। "मुझे अपने कधो में भारीपन सा लग रहा है।"

एकाएक होटल मे किसी ने प्रवेश किया और खिलाडी बाते सुनने को रुक गये। यह मेयर और उसका असिस्टेन्ट था, जिन्होने दो गिलास शराब के मंगवाये, और फिर राज्य की चर्चाओ मे व्यस्त हो गये। वे धीमे स्वर मे बातें कर रहे थे। टोइने ने अपने कान दीवाल से लगाने चाहे, और अण्डों की बात उसे ध्यान नहीं रहीं,एकाएक उसने उत्तर की ओर करवट बदली, जिससे एक अण्डा कुछ पिचक गया। ज्योंही उसने 'हे भगवान' कहा त्योंही माँ टोइने उसकी झटक से विपत्ति का अनुमान लगा कर क्रोध में भरी हुई अन्दर दौडी आई। वह एक क्षण तो उस पोले लस को अपने पति के कंधे पर लगी देख कर क्रोध में भरी हुई और बोल सकने मे असमर्थ चुपचाप खड़ी रही। फिर क्रोध से उन्मत्त हो उस लकवे के रोगी के ऊपर टूट पडी और अपने पति को धमाधम कूटने लगी, मानो वह अपने गन्दे वस्त्रो को किसी नदी के घाट पर पछाड रही हो। वह ढोल बजाने वाले की भाँति उस पर जल्दी २ और पूरी ताकत से अपने घूंसे बरसाती रही।

टोइने के मित्रों का हँसी, खाँसी, छींक और आश्चर्यजनक उच्चारणो के मारे बेहाल था जब कि वह भयभीत टोइने अपनी पत्नी की बौछारों को

इस भाँति झेल रहा था, जिसमे कि वे पाँचो अण्डे जो अभी तक उसकी भुजा के नीचे रखे हुए थे टूट न जाँय।

३

टोइने हार मान गया। उसे अण्डे सेने के लिये मजबूर कर दिया गया। उसे ताशो के आनन्द से और उत्तर या दक्षिण को कोई भी करवट बदलने से वंचित रहना पडा क्योंकि जब भी उससे एक भी अण्डा फूट जाता तभी उसकी पत्नी उसका हर प्रकार का भोजन बन्द कर देती। वह अपने नेत्रों को छत की ओर स्थिर किये, भुजाओं को पंखो की भाँति फैलाए, अपनी विशाल देह को सफेद ढक्कनों मे पड़े हुये मुर्गी के बच्चो को नष्ट होने से सावधान रहते हुए पीठ के बल लेटा रहता। वह बहुत ही धीमे स्वर मे बात करता, मानो वह अपनी आवाज से भी उतना ही भयभीत था जितना कि अपने शरीर की हलचल से, और वह पीली मुर्गी के विषय मे, जो उसकी ही भाँति उसी कार्य मे व्यस्त थी, पूछता। वृद्धा स्त्री अपने पति से मुर्गी के पास जाती और मुर्गी से अपने पति के पास। उसके मस्तिष्क मे उन आने वाले छोटे २ बच्चो का, जो घोसले में और बिस्तरे मे पल रहे थे ध्यान बना ही रहता। गाँव के लोग, जिनको इस किस्से के बारे मे बहुत ही जल्दी ज्ञान हो गया था, विस्मित एव गम्भीर होकर टोइने का समाचार लेने आते। जिस तरह से रोगी के कमरे मे प्रवेश किया जाता है वे लोग चुपचाप उसके कमरे में जाते और बड़ी लगन से पूछते

"टोइने, अब क्या हाल है?"

"यह हाल तो रहता ही है," वह उत्तर देता· "किंतु अब इतना अधिक समय लग रहा है, कि मैं तो प्रतिक्षा करते २ थक गया हूँ। मेरे सारे बदन मे उत्तेजना और ठण्ड की कँपकँपी आती है।"

एक दिन सुबह उसकी स्त्री बहुत प्रसन्न होकर आई और चिल्ला कर बोली "पीली मुर्गी ने सात बच्चे निकाले हैं, तीन अण्डे खराब थे"।

टोइने का कलेजा धकधक करने लगा। वह कितने बच्चे निकालेगा?

"क्या यह जल्दी ही हो जायगा?" उसने एक गर्भवती स्त्री की भाँति उत्सुकता से पूछा।

बृद्धा स्त्री, जो असफल होने के भय से बिकल थी, क्रोधित हो बोली "आशा तो यही की जाती है।"

उन्होंने प्रतीक्षा की।

मित्र वर्ग टोइन के समय को पास आते देख कर स्वयं बेचैन हो उठा। वे घरों में इसकी चर्चा करते और कार्य की प्रगति की सूचना पड़ौसियों को देते रहते। तीन बजे के लगभग टोइन को नींद आने लगी। वह आधी ही देर तक सोया होगा कि अपनी बाँई भुजा के नीचे वह अजीब सी गुदगुदी से एकाएक जाग उठा। उसने अपना हाथ बड़ी सावधानी से रखा और पीले पर्ं से ढके हुये एक छोटे से जीव को उठा लिया, जो उसकी उँगलियों में से निकलने का प्रयास करने लगा। वह इतना अधिक भावुक हो गया कि चीख पड़ा और उस बच्चे को छोड़ दिया जो उसके वक्ष पर दौड़ पड़ा। होटल लोगों से भरी पड़ी थी। ग्राहक अन्दर कमरे में दौड़ आये और उसके बिस्तर के चारो ओर घिर कर खड़े हो गये। माँ टोइन ने, जो कि पहली ही आवाज पर आ गई थी, उस मुर्गी के बच्चे को जो उसके पति की दाढ़ी में घोंसला बना रहा था, सावधानी से पकड़ लिया। कोई एक शब्द भी न बोला। वह अप्रेल मास का एक उष्ण दिन था, पीली मुर्गी को खुली खिड़की में से हर कोई अपने नये बच्चे को आवाज देते देख सकता था। टोइन, जो भावाभिभूत तथा दुखी होने के कारण पसीनों से तर था, बड़बड़ाया. "मुझे लगता है कि मेरी बाँई बाँह के नीचे एक और है।"

उसकी पत्नी ने अपना लम्बा, पतला, दुबला हाथ बिस्तरे के नीचे डाला और एक दाई की सी सारी सावधानियों से दूसरे बच्चे को निकाल लिया।

पड़ौसियों ने उसे देखने की इच्छा व्यक्त की और उसे एक आश्चर्य-जनक वस्तु समझ कर भय से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के हाथ में दिया। बीस मिनट तक कुछ न हुआ, फिर एक ही साथ चार बच्चे अपनी २ खोलों से निकल पड़े। इससे दर्शकों के अन्दर बड़ी उत्तेजना फैल गई।

टोइन अपनी सफलता पर मुस्कराया और अपने विचित्र पितृत्व पर गर्व का अनुभव करने लगा। ऐसा पहले कभी नहीं देखा गया। वह

सचमुच ही तमाशे का आदमी था। "लो अब उसे मिला कर छ हुये" टोइन चिल्लाया "सेक्रे बिल्यू धर्म में दीक्षित करने का उत्सव कैसा शानदार रहेगा।" और सारी उपस्थित जनता बड़ी जोर से हँस पड़ी। अन्य व्यक्ति भी अब होटल में आकर एकत्रित हो गये और द्वार में से अपनी गर्दनें निकाल २ कर अपने विस्मित नेत्रों से देखने लगे।

"कितने हुये ?" उन्होंने पूछा।

"छ."

माँ टोइन उन नये उद्भूत जीवों को लेकर उस मुर्गी के पास दौड़ी, जो अपने परिवार की बढ़ती सख्या को आश्रय देने के लिये अपने पङ्खों को सीधे फैलाये हुये लगातार शोरगुल मचा रही थी।

"लो यह एक और आया।" टोइन चिल्लाया। वह गलती कर गया वे एक नहीं तीन थे। यह विजय थी। अन्तिम अपने खोल को शाम के सात बजे फोड कर निकला। टोइन के सब ही अडे अच्छे थे। वह आनन्द से फूला न समा रहा था। उसने बच्चे पकड़े और एक की पीठ पर चुम्बन करने लगा, उसने उसे उसके चुम्बन लेते लेते ही उसे मार डाला होता। उसकी इस बच्चे को दूसरे दिन सुबह तक रखने की इच्छा थी। वह माँ की कोमल वृत्तियों से भर गया था। किन्तु वह वृद्धा स्त्री अपने पति की प्रार्थनाओं पर कोई भी ध्यान न देती हुई उस बच्चे को भी अन्यों की भाँति ले गई।

टोइन के मित्र आनन्दित हो उस दिन की घटना की बातें मार्ग में करते हुए अपने २ घर लौटे।

होर्सविले दूसरों के चले जाने के बाद तक रुका और टोइन के पास पहुँच कर उसके कानों में फुसफुसाया "तुम मुझे पहली ही दावत में निमन्त्रण दोगे कि नहीं ?"

दावत के विचार से टोइन का चेहरा चमक उठा और उसने उत्तर दिया.

"अवश्य, मेरे बेटे, मैं तुम्हें अवश्य निमन्त्रित करूँगा।"

चाँदनी

मैडम जूली रोबरे अपनी बड़ी बहिन, मैडम हैनरीटे लेटोर की प्रतीक्षा कर रही थी, जो अभी २ स्विटजरलैंण्ड की यात्रा से लौट कर आई थी। लेटोर परिवार लगभग पाँच सप्ताह पहले नगर छोड़ चुका था। मैडम हैनरीटे ने अपने पति को अपनी स्टेट काल्वाडोस में जहाँ कि कुछ कामों में उसकी उपस्थिति आवश्यक थी, जाने की आज्ञा दे दी और अपनी बहिन के साथ कुछ दिन व्यतीत करने के लिये पेरिस आई। रात होगई। मैडम रोबरे अपनी नीरव बैठक में बेसुध सी बैठी हुई पढ़ रही थी, जब भी कोई आवाज होती वह अपने नेत्र उठा देती।

अन्त में उसे द्वार पर बजती हुई घन्टी की आवाज सुनाई दी और ट्रेवलिंग गाउन पहिने हुये उसकी बहिन आई। और बिना किसी शिष्टाचार के उन्होंने एक दूसरे को उत्सुकता से गले लगा लिया और एक दूसरे का चुम्बन लेने लगीं। तब वे एक दूसरे के स्वास्थ्य, पारिवारिक जीवन और हजारों ही विषयों में जल्दी २ टूटे फूटे वाक्यों में बातें करने लगीं और मैडम हैनरीटे ने अपना पर्दा और टोप उतारा।

अब काफी अँधेरा हो चुका था। मैडम रोबरे ने नौकरानी से एक लेम्प मँगवाया और जैसे ही वह लेम्प आया उसने अपनी बहिन की ओर कनखियों से देखा वह उसका एक बार फिर से चुम्बन लेने वाली थी। किन्तु अपनी बहिन के चेहरे को देखकर आश्चर्यचकित हो एवं चौंककर रुक गई। मैडम लोटरे के मस्तक पर बालों के दो गुच्छे थे। बाकी उसके सारे बाल घुँघराले काले और घने थे। किन्तु उसके सिर के केवल दोनों ही ओर बालों की दो कतारें थीं, जो सिर पर जाकर काले बालों में अदृश्य हो गई थीं। उसकी अवस्था केवल चौबीस वर्ष की ही थी। और एकाएक यह परिवर्तन उसमें स्विटजरलैंण्ड जाने के समय से ही हुआ था।

बिना हिले डुले मैडम रोबरे उसकी ओर आँसू भरे हुये नेत्रों से आश्चर्य मे देखती रही क्योंकि उसे लगा कि उसकी बहिन किसी रहस्यमय एव भयानक विपत्ति से ग्रस्त है। उसने उससे पूछा.

"हैनरीटे, तुम्हे क्या हो गया है ?"

एक व्यथित मुस्कान से, मुस्कान जो भग्न हृदय के मुख पर होती है, उसने उत्तर दिया.

"क्यों, मै विश्वास दिलाती हूँ कि कोई बात नही है। क्या तुम मेरे सफेद बालों को देख रही थी ?"

किन्तु मैडम रोबरे ने तेजी से उसके कन्धे पकड लिये और उसकी ओर खोज भरी दृष्टि से देखते हुए दोहराया

"तुम्हे क्या हो गया है ? मुझे बतलाओ ना, तुम्हे क्या हो गया है ? और यदि तुम मुझसे झूठ बोलोगी तो मुझे शीघ्र पता भी लग जायगा।"

वे दोनों एक दूसरे के आमने सामने खड़ी रहीं और मैडम हैनरीटे की जो इतनी पीली पड गई कि मानो अचेत हो जायगी अर्द्ध खुली आंखों के दोनो कोनों मे दो बूंद अश्रु लुढक आये।

उसकी बहिन पूछती रही:

"तुमको क्या हो गया है ? क्या बात है मुझे बतलाओ।"

तब, उदास स्वर में, दूसरी ने धीमे स्वर मे बतलाया

"मेरा · मेरा एक प्रेमी है।"

और, अपनी छोटी बहिन के कन्धे पर अपना मुँह छिपाकर वह रोने लगी।

जब वह कुछ शान्त हो गई और जब उसकी सिसकियाँ बन्द हो गईं तब वह अपना रहस्य अनावरित करने लगी मानो वह अपने इस दुख को एक सहानुभूति पूर्ण हृदय मे भरना चाहती थी।

फिर एक दूसरे के हाथों को कस कर पकड़े दोनो स्त्रियां कमरे के अँधेरे भाग में रखे हुए सोफा पर जाकर बैठ गईं। और छोटी बहिन अपनी बांह को बडी बहिन की गर्दन पर रखकर उसे अपने वक्ष से चिपटा उसकी बातें सुनने लगी।

"ओह ! मैं समझती हूँ कि किसी को क्षमा नहीं किया जा सकता है, मै स्वयं ही अपने आपको नहीं पहिचानती, और उस दिन से मुझे ऐसा लगने लगा है कि मानो मैं पागल हूँ। सावधान रहना मेरी बच्ची,अपने प्रति साव-धान रहना। यदि तुम केवल इतना जानतीं कि हम कितनी दुर्बल होती हैं, कितनी शीघ्र करुणा के एक क्षण के आधीन हो जाती हैं, क्षण भी कैसा जो तुम्हारी आत्मा मे दुख दर्द की अनुभूति एकाएक उत्पन्न कर देता है और तुम्हारे अन्दर बाँहें पसार देने, प्रेम करने, आलिङ्गन करने की भावना जो हम सब लोगों में किसी-किसी क्षण स्वाभाविक रूप से उत्पन्न हो ही जाती है,उत्पन्न कर देता है।

"तुम मेरे पति को जानती हो, और तुम यह जानती ही हो कि मैं उन्हें कितना प्रेम करती हूँ, किन्तु वह पूर्ण एवं बुद्धिमान हैं, और किसी स्त्री के हृदय की कोमल वृत्तियोको वह समझ भी नहीं सकते। वह हमेशा एक से ही रहते हैं, हमेशा सहृदय, सदा प्रसन्न, सदा दयालु,एवं सदैव पूर्ण।ओह ! मैंने कितनी ही बार इच्छा की कि वह मुझे अपनी भुजाओं से जोर से आबद्ध करें, कि वह उन धीमे एव मधुर चुम्बनों से, मेरा आलिङ्गन करें, जो दो देहो को एकरस कर देता है। मैने उनके विषय में सोचा कि वह स्वार्थी थे और दुर्बल भी,उन्हे अब मेरी, मेरे चुम्बनों की,मेरे अश्रुओं की कोई आवश्यकता नही रहनी चाहिये।

"यह सब बिल्कुल मूर्खता की सी बात है, किन्तु हम स्त्रियां बनाई ही ऐसी गई हैं। इसमे हम कर भी क्या सकती है ?"

"और फिर भी उन्हें धोका देने का विचार मेरे पास तक नहीं फटका, आज यह बिना प्रेम, बिना कारण, बिना किसी बात के ही केवल इसलिये हुआ कि एक रात्रि लूसेर्न की झील पर चन्द्र के दर्शन हुए थे।

"जिस महीने में हम दोनो साथ यात्रा कर रहे थे, मेरे पति ने अपने शान्त विरोध से मेरे उत्साह को शिथिल तथा मेरी कवित्वमयी उत्सुकता को नष्ट कर दिया। सूर्योदय के समय जब हम दोनों पहाड़ी रास्ते से उतर रहे थे,जब कि चार घोड़े बड़ी शान से दौड़ रहे थे, जब हमें पहाड़ी पारदर्शक कुहरे

मे से घाटियाँ, जङ्गल, झरने और गाँव दिखलाई दिये तब मैंने प्रमुदित होकर ताली बजा कर उनसे कहा 'कितना सुन्दर दृश्य है प्यारे! अब मेरा चुम्बन ले लो!' उन्होंने मुस्कराकर केवल इतना ही कहा 'तुम्हे दृश्य पसन्द है तो यह तो कोई बात नही हुई जिसके लिये हम दोनो एक दूसरे का आलिङ्गन करे।'

"और उनके शब्दों ने मेरे हृदय को कुण्ठित कर दिया। मुझे तो ऐसा लगता है कि जब व्यक्ति आपस मे प्रेम करते है तब उन्हे सुन्दर दृश्यों की उपस्थित मे अधिक प्रेम से भावुक हो जाना चाहिये।

"सचमुच, उन्होने मेरे हृदय मे उठने वाली कविता को, जो निकलने के लिये उबाल ले रही थी, रोक दिया। मै उसे कैसे वर्णन कर सकती हूँ? मैं उस बर्तन के, जिसमे उफान आ रहे हों, भाप भरी हुई हो और जो दृढ़ता से सील बन्द हो, बहुत कुछ समान थी।

"एक दिन सायकाल (हम लोग चार दिनो से होटल डी फ्लूलेन में ठहरे हुए थे,) रोबर्ट के सिर में दर्द हुआ और वह भोजन करने के शीघ्र ही पश्चात् सोने चले गये, और मुझे झील के किनारे बिल्कुल अकेले घूमना पड़ा।

"यह रात्रि परियों की कहानियों मे पढ़ी हुई रातो से मिलती थी। पूर्ण चन्द्र आकाश के मध्य मे विराज रहा था, लम्बे २ पर्वत अपनी हिमाच्छादित श्रृङ्गो से रजत मुकुट धारण किये से शोभित हो रहे थे, झील का जल छोटी २ हलचलो मे चमक रहा था। पवन ठन्डा था, उसमें वह आनन्ददायक ताजगी थी कि जो हमको इतना कोमल कर देता है कि हम अकारण ही मूर्छित होजायँ किन्तु ऐसे समय मे हृदय कितना ग्राह्य एवं भावुक हो जाता है, कितने शीघ्र यह उछाल भरता है और कितनी गहरी इसकी अनुभूतियाँ हो जाती हैं।

"मै घास पर बैठ गई और उस विशाल झील की ओर कितनी मुग्ध एवं दुखी होकर देखने लगी कि मैने प्रेम किये जाने की कभी सन्तुष्ट न होने वाली आवश्यकता का अनुभव और अपने जीवन की इस वर्तमान गम्भीर उदासी के विरुद्ध सघर्ष करने का निश्चय किया। क्या? मै कभी भी

किसी पुरुष के, जिसे मै प्रेम करती हूँ, इस चाँदनी में ऐसी झील के किनारे, आलिङ्गन पाश मे आबद्ध होने का सौभाग्य प्राप्त नहीं कर सकती। क्या मै अपने अधरों पर उन प्रगाढ़, मृदुल एव आनन्द-दायक चुम्बनो की अनुभूति नही कर सकूँगी जो कि प्रेमी लोग भगवान के द्वारा प्रगाढ आलिङ्गनो के ही लिये निर्मित की गई प्रतीत होने वाली रातो में किया करते हैं। क्या मुझे इतने उत्सुक एव उच्च श्रेणी के प्रेम का ग्रीष्म ऋतु की उजियाली रात्रियों में कोई ज्ञान नहीं हो सकेगा ?

"और मैं रोने लगी, अपने पीछे किसी व्यक्ति के बैठे होने का मुझे आभास हुआ। एक व्यक्ति मेरी ओर घूर २ कर देख रहा था। जब मैने सिर घुमाया, उसने मुझे पहिचान लिया और वह आगे बढ़कर बोला

" 'मैडम आप रो रही हैं ?'

" वह एक नवयुवक बैरिस्टर था जो अपनी माँ के साथ भ्रमण कर रहा था और वह हमे बहुधा मिल भी चुका था। उसके नेत्रो ने कितनी ही बार मेरा पीछा भी किया था।

" मैं बहुत अधिक भ्रम में पड़ चुकी थी। और मुझे इतना भी ज्ञान नहीं था कि क्या तो मेरी परिस्थिति है और क्या मैं उसे उत्तर दूँ ? मैने उससे कहा कि मैं अस्वस्थ सी हो रही थी

"वह मेरे साथ २ स्वाभाविक एव आदरपूर्ण ढङ्ग से चला और मुझ से इस यात्रा के किये हुए हमारे अनुभवों पर बातें करने लगा। वह सब बातें जो मैने अनुभव की थीं उसने शब्दो मे अनूदित कर दीं, उन सब वस्तुओं को जिन्होंने मेरे हृदय मे कोमल वृत्तियों का सचारण कर दिया था। वह भली भाँति जानता था यहाँ तक कि मुझसे भी सुन्दर। और एक एक उसने अलफ्रेड डी मुसेट की कुछ कवितायें दोहराईं। मैं अनिवर्णनीय भावनाओ से विभोर हो उठी। और मुझे लगा कि मेरे आँसू निकलने ही वाले हैं। मुझे लगा कि झील, चादनी, पर्वत सब मेरे लिये अति मधुर वस्तुओं का गान सुना रहे है।

"और यह सब मेरे जाने ही बगैर हो गया। यह सब एक माया की भाति हो गया।

"रही उसकी बात, तो मैने तो उसे उसके जाने वाले दिन के प्रभात काल से पहले फिर दोबारा नही देखा।

"उसने मुझे अपना परिचय पत्र दिया।

× × × × ×

और अपनी बहिन की भुजाओं मे सिमटते हुए, मैडम लेटोर रोने लगी— लगभग चिल्लाती सी।

तब मैडम रोबरें ने बहुत गम्भीर एव आत्म नियन्त्रित स्वर मे बहुत धीरे से कहा

"बहिन बहुत बार ऐसा होता है कि हम लोग पुरुष से प्रेम नहीं करती वरन् स्वय प्रेम से प्रेम करती है। और उस रात्रि तुम्हारी वास्तविक प्रेमी चादनी थी।"

श्री हेमेन्द्र कुमार द्वारा साधन प्रेस, इम्पियर नगर मथुरा मे मुद्रित।